MSS No. 359 Subject

Name of MSS बृहत्कवि वल्लभ ग्रन्थ

Author हरिचरणदास

Period Folios 45

Script संस्कृत Source Prithipal Singh.

Missing Folios

359

बृहतकवि वल्लभ ग्रन्थ
४५ पत्रक ॥ ल० १० १६ पं० प्र० पृ०

पु० ला०

गात्रत्रयाणे स्मातनी मयोटेनलेत्स्रेन:

कार्त्तिक कृ गता आहा गता प्रतिपदि दिनः
सप्तविंसति तीन, दिन ताहि ...

वर्तितमर्हे
कार्त्तिक कृ ... सा ... तापि प्रतिपत्ति सेद्गता:
सप्तविंसति ... दिन ताता फलं लभेत
२१

एक देव प्रथम सर्ग मा चेंको
लगेछो

[illegible]

राम नाम सत्य है

नत्थन वानी पोथी य
लषि सं १७ ३६ फा २७

भाषा

साखी ॥ नेक सारथी १ सरीर कवलम २ 2
नाम माला २ माया ब्रह्म २
कवलम २ रूपा सकार २
माला ४ रूप कवित दोहरा
बाचे ॥ नेक सरथी क ना सवयो थीथा
नाम माल "स. क. मा. ना. ने. 2
कवलम सूची बनी वानी
रूप चन
चन्द्रिक ॥=
रूप दीपक

359

(5)

।अथसंलंकार

1

ॐश्रीराधाकृष्णोविजयेते अथदूषणानिलिख्यते दो० मोहनचरनपयोजमैंतुलसीकौ
वास ताहिहमरिहरिभक्तसेवकरतविघ्नकोनास १ कवित्त आनंदकोकंदवृषभानजाकोमुख
चंदलीलाहीतेंमोहनकेमानसकोचोरहै दूजोतेमोरचिवकोचाहतविरंचिनितसतिकोंव
नावैअजोमनकौंनमोरेहैफेरतहैंसोनआसमानेयेंचटायफेरयानपचटायवेकोंवारि[illegible]
रैहै राधिकाकेआननकोजोटेनविलोकेविधिहूकदूकतोरैपुनहूकदूजोरैहै २ अथदोष
लछन रसआनंदसरूपकोंदूषैतेहैदोष आत्माकोंज्योंअंधतात्र्योरवधिरतारोष २ अथपंचप्रका
रदोष पदमैंपदकेअंसमैंवाक्यार्थमैमानरसमैंपंचप्रकारएकेविदूषनपहिचान ४ अथपद
वाक्यदोषनामककवित्त दोषकर्नकटु १ गतसंस्कृति २ अप्रयुक्त ३ फेरअसमर्थ ४ निहतार्थहू
न ५ भाखिए अनुचितार्थ ६ त्यागौऔनिरर्थक ७ सोंदूरभागौंकवदूनत्रिविधिअश्लील ८
अभिलाखिए ग्राम्यत्यागियेअवाचक ९ संदिग्ध १० अप्रतीत ११ दूकौंग्राम्य १२ नेयार्थ १३ पददोष
हैनराखिए विरुद्धमतिकारी १ अविमृष्टविधेयांस २ ओक्लिष्टतीनदोषपदसंगहीमैसाखि
ए ५ विरुद्धमतिकृतआदितीनदोषपदकेसमूहमैंहीहोतिहैं दोहा गतसंस्कृति १ असमर्थपु
निओरनिरर्थक ३ त्यागि वाक्यहूमेंसवहोतहैंदोषलखोअनुरागि ६ गतसंस्कृतिआदितीन
दोषछोडिकैंकर्नकटुआदिवाक्यमेंभीहोतहैंपदकोसमूहसोवाक्यकर्नकटु १ अप्रयुक्त २ निहतार्थ
[illegible] मोतीनतरहकेअश्लील ८ [illegible] अप्रतीत [illegible] ग्राम्य ११

पदमेअैसो परहे होरपदरहो दोहा

नेयार्थ ९ एतेनेदशदोषवाक्यमेंभीहोतहैं अथयाहीविधिपददोषलछनदेइ सहपर्यायजहांजहांहू
यनमिटजाय जोपदोषेअन्वयविनापदिलैसमझ्योजाय १ पददोषकेदोषलछनजोसहपर्या
हतिकेनहीसहै सोएकपीयपीयअमैंसदाविसुनेटविचसेन इहांदोषमिटेअत्रबहुमतेजहांपद
पकोअन्वयनहीहोनेपावपदिलैदोषकोज्ञानदेय सोभीसहदोषजानिएनयार्थइत्यादि अथ
वाक्यदोषलछन जोपदऔरेपदनिलैजहांजहांदूषितहोत वाक्यदोषसोजानिएकोनेकविलउहो
न ८ जपमारनचटनावजपकोमारनकेसंजोगतेहोयभयोमीनमारनजपहजनइहांदोषनहीं
अथअर्थदोषलछन होतजुअर्थप्रतीतजबनउनाकोहूवोध सदेंजुपदपरिहतिकोअर्थदोष
सोसोध ९ लीवकेसइत्यादिदोहामेंजवअर्थकीप्रतीतहोयगीतवजानपरेगोलावकेसइत्यादि
अभिसारकाकोनहींपुरुषकैवेडोवालकहूदोषनहींमिटेअैसेजानिए अथकतेकदु होतरसम
निघ्रतिनकोजाकोउक्कटभानवदेकनेकटदोषकाम्लरहेपहिचान १ निद्राटिकानीथ्यार
त्यादिदोहाजवतेकेनविदेसकोगयोसपोहनेवेनपीयपीयदवीकेसदावरइटैविचसेमे वा
इउक्कट विहसी इसैननिहारवधरोदियेपगावीजुचालविसरीलागतहैं पुनिहूसोपिसीकीला
ल १२ निहारवधरोउक्कट अथगजमहोति सहुसहुनहिहोतहैं नहिहै अर्थप्रतीतगतमेस्कुति
नाकोकहैदोषवीजयहरीत १३ किनथालनिमेंलालमलरोमोनिसोफरवालरचैवनमाल
सवगएनेच कीहर १४ गईचाहिएनिसदोषहैगुननहीहोतहैतिनादोषकविकोवाकितअर्थ
नहींसमझावहेनिसदोषकेअागेलछनकहेहेगएसहपुनपर्यायकहैअैकोवोधकनहीहि

निरर्थकतावाक्य चीनता

वर्जीय

हा मी हि कियो सयानो सषिन सों नहिं सयोन यह मल लई रैं डगाये फूल लें कौं पिय आगम फूल ५
सुघा अर्थ मे करी सयानी चाहि एह मारी के गौव हारी को टीका है मैं प्रकासना मैं हम अर्थ मैं षे चकेल
गायो है सयानी सषिन तैं तू सयाने किये चतुर आगें चतुराई कीनी तहां दोषनहीं औ केते कहत हैं जा
के देस को जो भाषा ता मैं जो लिंग कहें तहां दोषनहीं फूल्यो है नेह वाराके सषिवसंतनि नमों हिल
पै चैनकी बांटनी तो तुम्हें लागी नांहि १५ इहां फूले वा दिए वचन सों रसिक प्रिया लाजनेगा
ने मार कों छांड दई सब त्रास देख्यो दोषनमान ई पूर्ण सुके सवरास १७ छांडि दियौ सर दोष मैं अ
सो चाहिए प्रमान वाज के त्रासमनौ चकवाजलजात के पान मैं गान छिपाए त्रास पुछि गादै अप
प्रयुक्त मु ट सह के विनो धरै ता को हे न विचार करन वट मन हो तन तहां अप्रयुक्त निरधार १८ वि
हारी सैंपी विकु रीज नमे हि आन हे हां विहारी थपे सो आ छोजा म अंके हृदगा अवदन वरसन रहत १९
सो सहित के अर्थ में वहुत कविन नहीं थपे रसिक प्रिया में हरि नहरि नहार स्यादिक विन मैं चोथी
नक अपवन न वन स्याम वन हो में न इहां अपवन अंग को नाम है ता को प्रयोग कविन हू नैं न हीं कि
यो अप्रयुक्त औ सें लो रत्याहि औ से निघरयट सहे हैं कवि विनि नैं न हीं धरे कवि प्रिया मैं ता अर्थ मैं कयो
है वो न रसे चल चारु विलोचन को पर चेह हि चिराचु न को है वान कों चचल ता अवनाई कविन नै
न हीं कही यह अर्थ दोष मैं है सहकी पहिचानि को सदेह है भाषा मैं अप्रसिद्ध सहु सो न के लियै कविचा
हि करत्यावैहे औ हू सभी वहुत लिखे है एक अर्थ के सह मैं यह दोष होत हैं इहां यह दोष यो तो अ
घ असमर्थ होय अर्थ को सह न हो हो ऊ अर्थ विख्यात वैगिन ह जो अर्थ नहीं ॥ अर्थ समर्थ

निर्लेज्ज

लषा...न २० हेतामोपरदेसकोंतेरोसजनीकेतकैसेकेदिनबीतिहैंपुष्पसमयगुजरेन २१ हे
नाकेहोयग्रंथमारनवालाग्रोज्ञानवालामारनवालाविषैंप्रसिद्धहैबोलवे पद्मनिस्यादिले
षैंप्रसिद्धहेकविताभैंजानवालाविषैंप्रसिद्धनहीं हमारीक्रियासभाप्रकासकोदेखावेमनयोजो
वननयेनईलुनाईगातसेपरेंदेखिग्रगुणगनग्रगनिउज्वलसोहात २२ सेपरेसहद्रकेठाविषै
प्रसिद्धहैंग्रार्यादेसमैंन्हायवेमैंलोकमप्रसिद्धहैकविताभैंप्रसिद्धनहींउज्वलमहनतादेकग्रर्थ
मैंप्रसिद्धहैहीनकमभेलायुनललितग्रमग्रनियानितेवसफलनफोनेपरपहूजेलमेंफूलस्तुके
म २३ कवितामैंनहायवेविषैंफूलवोप्रसिद्धनहीं बोलवेमैंसपनिवोफूलवोप्रसिद्धहैसेवाही
नेहोनवस [ornament] कहानेरेसमहैसहरखेहैसवितानितेपावैकहाकोलस २४ कोलमद्र...निषैं
प्रसिद्धहैकनामजलनाकोलेसकनिकाकहापावैयाग्रर्थकोप्रमीतनहुसमनहीहोततहेग्रेएक
पदमैंनहीकह्योयहमाबीनउदाहरनग्रोक्षोनहीग्रेषमैंदोषनहीग्रेसेपदवृंदमैंदूषनोंह्वा
रमैंकहेहैं ग्रथनिहतार्थदोषग्रर्थकेसहकोग्रप्रसिद्धलेग्रर्थमैलतनलपैलवसोनह्वा
दूषनेनिहतार्थ २५ मोनलजेसबकोमिलीजावातजेसबसेनमहावीरयातेलियेग्रायोमगन्
सेन २६ महावीरमहासतबेमैंप्रसिद्धहैदेहसमैंकोकिलकोगतहइकोवक्र कोभीकहेहेकोउ
भविश्रमैंहितिमैदिया जानतनाविषुग्रीउषदाईहोयगोमानदिकोग्रभिषेताकदोग्रभिषेता
कैंनोदिदिसहैंमोनतजोनहिकोदेलीह्वेहेरीकाहरीनाहिभलीमातिठाईग्रेवनिकेनिकुंर
व नेपदरेसेनरीकामकलवोदेषाई २७ प्रतिभूषनविग्रभमकोउकलहहैप्रेमेंर

कोश
३

वथ २ विसाम थ इत्यादिक छ ये कोएंद विषयी सुविषय औ सक्तनर १ कामर ष्मयः २ इंद्रि
य ४ सकलअभिषेगा सपत्थ ओप रान्त्यद्द्मपैं का दलीजवतीको नाम कर्नाभरनेवान १ वि
सिष २ रूपप्रथक रपे विश्रो सूगा ध रूअजिद्गा ५ षा कलेवपुइत्यादिग्रप्रयुक्त भीकहैं गेक
लेवग्र मयुक्तहैं जोपकअर्थको दोषमात दोअप्रयुक्त विषयी विषयमें जो ओसक्तनामें प्रसिद्धका
मविषे प्रसिद्ध विश्व भरइदोवाक्य मे श्रुतिकट जानिए ओ वाक्यमे अप्रयुक्त भी कहे हैं केहे गेओ
वायोतिलक मैं भ ओपक्रम भी महानिके ज्ञानके लिये ओ मेस हलिषे दे दोहाकियें तिलक पं हिवे
तिलक सो हतानि लकक पोलजो ततिगनिक रिधेनु का करतयनिक मनलोल २८ मुक्तिमे
षननितलक तिलका रत्न २ ओ गातिल ३ मादियनिकथनाद्यु १ पवर २ घेनुका ३ भो १ ओयिव
२ तिलक तिलक मेंप्रसिद्ध औ मैं वाक्यदोष जानिए जहां कुतमें उमिकोस जितवाललिये जा
निदेकनिकाचले सगनिकावाल २९ पुनि उर्मिका सुरषउकेवा १ अरूमें गनादर अंगुठी
२ बीचो ध लपकनिकासुकाननिके मषनेउ चारे हैं करबीच औगुली २ ओ बीजको सर ३ कहूनो ४
दैहाथी हूके सुंड अग्रभाग ५ को विचारे हैं तानिको मुरभी २ वेमार जेदीको ३ पिक्तानेद सान
कुंभ के उभ से जाके कुचको सामद्र वरनी ज्ञवपालि सुगावित्तनकुंज सेला भ१ कर्नाभरन
स्वने १ स्ववर्न २ कनक ३ हेमथ हाटक ५ हूकैं रथपुनि हिरन्य ८ अहसात कुंभ ८ इत्यादिहून
वरनी हरदीको रंगत्रपानामलज को आकुलहा के सातकुंभ नामदे प्रजापतिको आहदकेड मा
कुसुम सो गानसोय उमा वरनसी नारी बिरचन सुगनिको उमादे १ उमाको वारि २ १ उमाकान्तसो उ

उर्मिका
पार्वती

३

पर्वत तरु सर्प स्त्री

माहरसौउमाकानिउमापावैनौकीनिकोभीनामउमाहै नदोअद्रिपंअद्रिहैहदैवंअद्रिकोनामपद्मी
रासैहीरोपदहरिरमेदंतिगिरियाप ३२ अद्रिपहारअद्रिद्रुमअहिसुयेहौनानामस्त्रीकोआपिपि
लिकाकोगिगिकेउकनापैथापदेनिहैवनवनमेकामीसवदानिक्कसमीरप्रकासमेमसामगु
पिरमनहैचोरअंगपियपास ३३ वनगहनअजलकामीपारावतअचकचानिक्सरभिसा
मअप्रमतचोरनामस्तेयकोस्वापहैअगनाकोरसिकप्रियाभालगुहोगुनलाललरैलट
केलवसोतिनिकोसुपैटनोनाहिविलोकतअरससोकरअरसीलेरकसासनेनोकेसवस्याम
उरेहरसैपरसीउपमामनिकोअतिपैनोसूरजमेंडलमेंससिमंडलमध्यसोजन्नुनाहिविवैनी
३४ सारंकोसमेंकमलकोनामहैअरुपक्षीकोभीनामहैजाकोपूरवमेंसदरसकहनहै बोलवे
मेंसारसकमलकोनामप्रसिद्धनहीअसमर्थवोलिवेमैप्रसिद्धहोयकविनामेंनहीप्रसिद्धहोयति
हनार्थमैनोवोलवेमैप्रसिद्धजाअर्थमैरहेकविनाहिअर्थमैनहीराखैअप्रसिद्धअर्थमैंगुणपनती
सूक्ष्मभेदहैआवनपवनअसाढकोअयोमासअसाढतोहिविधानामारिहैदइसैलीसुखवार ३५
गोपअतमैजानहीमभिन्नसारेवनऔरअवनचिनलामेंक्षीनसजनीकरतैजोर ३६ जोरसहवल
विषैप्रसिद्धहैसरवमेरज्ञविशेषकोकोहनेदेरहीप्रसिद्धमैनहीराख्योजेसैसवरसहहैदेसमेंप्रसिद्ध
हेजलविषैनायहौदोषअवरनैपरेदेषोसवरकीयारैहैवनमैरमैसिकारन्तुपमारेकेतेहूकसाय
वकोसेसरनिहनेकरेतेकहै हूक ३७ भाषामैसायकवानकोनामप्रसिद्धहैसरवारकोनामप्रसि

का.प्र.
५

हन ही को समै मैं हमारो कियो सु नि भूषन अनेकार्थ नाम लिषो है विवेक॰ ए कांत । औ विचार २
पुनि॰ साधक है म २। समसे २२॥ ह्यूं कों क विन विचारे है एक नाम पारसी में सअर को कवितनि में न।
हीं थ संख्यानें अप्रयुक्त । अथ अनुचितार्थ उचित कहै जहां अनुचित भासे अनुचितार्थ नाम सकाव
प्रकासे ३८ चितचंचल नलनो कहैं यह लूर नहि तो दिक है परनारि दिग सों विट लखै है जो हि ३९ प
रत्नी पद अनूप एक कहत सर्व कम सेवा यह पद सों विद लखे पद सों निंदा व्यक्त भई जाकी स्तुति कीयो तौ।
की निंदा व्यक्त दोष ऐसो अनुचितार्थ ३ हो जो निए यह काव्यप्रकास की टीका सारदीपिका नाम में
लिषो है जो गान कों जोगी लखै है कवि न समाधि लषा गुभो पसून पवन जन्त को सा गाति लहो म
हाय ४॰ २ हो पसु पद का य र पना कों व्यक्त करे है एक बार में पवन है दोष दोयति निग्रानि
मानव औ रज औ रिसे दानव हूं नें पिछान ४१ दान नाम दाना को नाको भी वेद दान व कहा वे
२ हो निहतार्थ भी भेया ऐ थोत स्तवनिके दल कों दल कोतक करे अन्त पवन में निश्चल यों २ है हो
एकार्थ को रूप ४० २ हो का दर सों जड ता जादि २ हा तिहें प्राचीन मति सो तल उपचारिक हि है दद
सा कों जो यथा की विरह दसा मिटै जो पियगद हो हाय ४२ नायक को वैद्य वह रावत निंदा व्यक्त
भई यह दोष है दूसरा पद के से जो बिना अनुचित भासै है विरुद्धमतिकृत तो पदा न के से जो
गा सो होत है एतनो बीच अथ निरर्थक पूरे चरन न अर्थ जहां कवि अक्षम षेल षायन हि नी को औ
न हिल में सु निरर्थक यह भाय ४३ विहारी फलो फालो फूल सो फिरत नित्य विमल विकास भोर

वि

नैरयाहौंदिनेचलननोहिपियपास ४४ फालीनिर्थकफालीकीवोरकांमिनीकिवासुंदरि
कहैनेसैवयारसुवोलनिचालैनोनदसौनहनापनकेगुनजोनलएसुच्यानकमे उनला
गनिदेषिदुरैवपरैसवगातनएतिनहूउवजेवौवडीनिपेजायसयोनपनौसिषवेकोंभएक
दिकंजाकीपेलनिजेपभटूच्यवपेलनिकेदिनेषलगाए ४४ सुच्यानकरहांसुंहचान
सरनाथंकनिरथंकग्रपत्रिविधिग्रश्रीलेलाजनगुपायग्रसुभकोव्यंनकनेटूपरहेयर
सविगरैग्रौनाविसुषनयग्रसलीलहिजोय ४८ ग्रथलज्जाव्यंजककरसग्रीचिउकादमन
सानोसवसिंगारविरहदसाकाटूविकरिकीजेजेमकीरि ४९ इहांकारपरलज्जाकोंव्यंजककै
हैंविहारीलगनसुभ गसीनवकिरननिसदिनसुषग्रवगाहि सादसकोभ्रमसरलोरहै
चकोरीचाहि ५० सभगपदलज्जाकेव्यंजककरनहैंयाहानवहविदुसोलागनहैंसुरीजानिपग्र
षस्नानव्यंजकउजेनसोजीनेसमरपावनहैसवकामएकवारजोलूनहैंसुदहैगरूदकोनामसंध
गरूकोतिकेपकोनामनासोस्नानिव्यंजकहानहैंविहारीरहोगुहोवेनीलषोगुहिवकोलोनार
लोगनीरसुवोवजेनीहिसकामरवार ५० गुहीपचीनवचीचाहिपदरूपवारव्यंजनवनरसुठिहूगसे
सकोसुधिमन्नकरनिग्रतिग्रलनहूसुमनवावकीगंधि ५१ वावकीगंधिग्रपग्रमेगलतुक
केतेरवेनकोधरतहैनवनेनेनूपरके वेसोरमननसवसोहातसग्रेन ५२ सवपदग्रमेगलव्यंज
कविहारीमरोडगीकिटरीयथाकहाधरीचलचाहिरहीकराहिकराहिग्रतिग्रवसुषनाहिनग्रा
है ५३ सवोग्रमेगलव्यंजकनापनवहुग्रवहोरहीग्रालवालकिवालप्रीनमकूलहोपकुरजा

5

कवव
त्रम.
५
९८

बिरहमिलननननकाल ५४ इहोपीनमकुलदीपककेग्रागैंजुज्यैंपदथहोस्थानमैंथितपदन
हौकुलदीपककैंमिलतहोबुज्यैंबिरहग्रैसोहोनोनवदोषनहीग्रवरवाकोकोपदग्रवरवाको
मैंयातैंदोषयहरसरहस्यहै ग्रथग्रवाचकजानिहिग्रर्थमेंजोपदग्रानेंकहैननहिसग्रवाचकना
वैं ५५ बिहारीवहकिनइहिंवहिनोपुलीजवनववीरबिनोसवचैनेवडीसवीलहवीलहोस
वांमास ५६ सवीलसहयारसीसेंराहवावकहै उपायकोनहीकहतहैंयानैंग्रवाचकजानो
ग्रोबिनासमहग्रमेंगलव्यंजकहैंबिरहसकाईदेहकियोग्रनिउहइटोजेसेवरसैमैंहवैजवा
साजेजमैं ५७ जोपदजारिकोवाचकनहीयाकोग्रर्थपरहरिप्रकासटीकामेंजोरतनरहकियोहैग्रैसो
ग्रर्थकरैतोदोषजोनिपग्रोचीनजादिनतैंदेषीहगानैंग्रलीग्रप्रवजोनदेषै दिनविनल
षैंनिमिनवनैमेकोहोत ५८ जोनिविनांदेषैंनिसाहोनहैंग्रथकारहोतहैयहग्रर्थदिनसहको
ग्रर्थप्रकासनहीग्रापुकोकाटैहैंयहदिनकोग्रर्थमुकतमातमुषमैंदियैंरहरहकंदनिमपाल
वहीग्रदादेषनिवेदावीजकुटासीवाल ५९ मगलसहग्रानवाचकनहीहैसवाहिएग्रवाचकमैंह
घनावीनलकुनमैंमपएहोहैविवछिनग्रर्थकोग्रवाचक ग्रथसंदिग्धनिश्चेदोषनग्रर्थको
जहांसेंदेहलषायनहोकहैसंदिग्धसवयहजोनोकविराय ६० सपसोंसोंपसकोननिमिनहि
दिनमैंग्राराममेंनोसामेलेवकोनग्रलिग्रायसकोवसकाम ६१ हरकेकाजेकेवसकिवाविरह
नीकोउकिकामदेवकेवसकैचाहनहैंइह पदकेमपनिकोथानविषयकाहिनपमैंहैसदो
पयपोन ६२ पयहपकिवाजलनपस्यामैंदोऊग्रउकुलहैंयोरोसंदेहमैंहोनहैं ग्रथग्रमनी

बिहारी सोरठा

मेद

कोरे

नकेवलसास्त्रहिमेंविख्यातअप्रतीतयहजोनसवानवडनविचारैंअर्थसपावेंयहदूषनकेहेतुक
होवें ९३ भक्तिकाव्यकेमिलनकेउपजतहैंनिर्वाननिहिकहिकेंयाउपजायहैंकहेतनतेसकज्ञान ९४
ज्ञानसहनतेसकव्याकरनप्रसिद्धहेविद्यारीजोगअगतनिषिद्धभलेमनोमहामुनिमैनचाहतपि
यअहैनताकाननसेवतनैन ९५ अहैवेदांतसास्त्रमेंप्रसिद्धहैं चाहतपियसोंएकताअसोचा
हिएनामलेइसवजामजोसेवअर्थअनूप मिलेविश्वकलरामसोंहे आगमकोरूप ९६ आ
गमटिककिलव्याकरणप्रसिद्धविश्वहूतहैंदोनेसेलकआसमअतिआदवेमोकरतनिपटजना
वनहैंनपंचमसगनेलीहमेंपियअवकेटकेहेत ९७ अवकेटकविसेषनन्यायप्रसिद्धहैं श्री
निभूषनपंचमहचिरसटकनररावाभेदमोनननसार ५ कोईएकदेसमेंकेमनेलोगहिसो
केतिककोईनामवांधिराखाहै सोसवूजहीककविताभेंआवेताकोभीभाषामेंअप्रतीतकहतहैं
सनोविभीषननइषहरनदसरथसुतमहाराजवालिविदारनमोवरेमेकरेदोहैआज ९८ म
करेदासूरवमेकेतनेलोगउपवासकोकहतहैं अथोनरसोईधीरजकहतहैं सोईहरनकाँमदहैं सा
नजाकेहियेताना आयेधाम ९९ मथुरामेकेतनेलोगज्ञानादरिद्रकोकहतहैंमकरेदाजानानाहहो
अवाचकदोषहूजानिए अथग्राम्यराषेवचनगवारकोरसकोहे अपकषअप्रवीनकछिकोक
हैग्राम्यदोषहैएपे १०० ताहीसोंपियवंधिरह्योमतिमानैकछुआरमेहडाकोफैरेकहतचितेकोक
तौर १०१ मेहकोमुहडाव्रजमेंगवारकहतहैं अनगुताद आयालसनकुलवाईमेंवालसवौकहीम
विहातवेयहनमिलनकोकाल १०२ भीरहाहूरवमेंग्रामीनकोउक्तिवरनहीटनहिपवनकेनहोरी

6

क॰ श्रे॰ ६

घेरी अकुलाय हरषी जु चमकुचपजवनैं नगई बिलाय ७३ अैसैं दोद जानि ए प्राचीन कहत सपी सो

बाल मिसि वन विहार कौ तातैं तन मन लोचन लाल के अति पुलकत जात ७४ बाल यह ग्या

म्य अर्थ नेयार्थ रूढ प्रयोजन नाहें दैविनसक्ति दिं परकासक है जहां लसार्थ कौन दोनेयारथ वास

७५ रूढ न हीं प्रयोजन न हीं यातैं अस कहत जो है पद ता सो लसार्थ करैं लछना सो जो अर्थ निकरैं ता

को प्रकास करै नेयक हिये पहूं चाय बेलाय कहुं ऐसो अर्थ न होय षे चिकै कोई न रहत अर्थ करनो कवि

को अनुमत न जानो जानि है सो वे रसक सवृति है यह कारन दूषन देने मैं मुषछकौ विसासि ये पगयवै

कें जविछो नाकी नहीं गनि दास कतिया पकी मृगलोचन पैं दोन ७९ पावथरे सौ मुषछौ विछेद मा

सौं जो नोई होय पददोष है हैं गत आदि एक वाक दोष है आलोचन मृगनैत्र नि सो जो ते यह अर्थ बुझा

यवे मैं नेयार्थ रूढा रूढ भी नहीं आ प्रयोजन भी नहीं अैसें सुंदर सिंगार चिलको अवचाद नैहैं ले

न सुंदर जोवन जोति न की चिनगी चिनगी कहैं ले सएक पद मैं दोष सो षे चिकै निकरै है ईदोष एक प

द मैं सवैया कहि ए किहि भौति दसा सजनी अनि ना ती कथा रसना हि दहै अरु ज्यौं दिय हीं मदिं हूं टि

रहै हो तोइ सौ जियकौं ककरि ला हि सहै वन आनंद जानन कान करै चित के हित की कित कोऊ कहै अ

न ऊन्तर पाय लगी महै हेसी सकदा कोरिथी रज हाथ रहै ७७ उत्तर के पाव मैं महदी लगी है उत्तर

को मूलिवृदरावनी ताकौ पाव बहरावनौं मूति विनां पावन हीं होत है जो कोई पाव मैं महदी लगावै है

सो महदी छुटिवे के लिए वा हिर न हीं निकरै है या नायिका कक्कू जवाव न हीं देति या अर्थ षे चिकर नि

करै है ता सो नेयार्थ रूढा रूढ हि भी नहीं प्रयोजन भी नहीं अैसौं दोर ल छना करनी कविनि तहीं विर

हरीमानइ विधिनन अक्छ विसक्छ राधिवेकाज ह्व गये गयो छुनकों करेम् धन यापदाज १९
ननकी सखनि राधवेकी उत्प्रेक्षा करिके दृग कों वाही नग ह्व गहराय भ्रम घन सो सोभा नहीं निहनी
थी अरु चिना थी नेयाथी ए पदकी परिहति कौ सह्त है विरुद्धमति कृत अविमृष्ट विधेयांस क्लि
ष्टतो न दोष पदके सम्हहीमें होत है अथ विरुद्ध मति कृत अरु चिनाथी है सो भेद है लो
क सक विमकासजहो विरुद्ध मतिभासई है विरुद्ध मतिभास २९ रुद्रानी वल्लभ नृपति को सदा
कल्यान सदा नमें अवा रम नेदउ च च लपन हान ८० रुद्र की स्त्रि सो रुद्रानी ता को वल्लभ प्रिय यह
कहे अरु पति आन्यो जात है यह विरुद्ध मति उपजावे है अर्थ औ रनव ह हो यता में विरुद्ध औरनवह
भासे अरु वा भवानी को नाम औ माता को भी नाम रुद्रा भी विरुमति होति है कवित्त में भवानी भवरुद्रा
नी रुद्र सर्वानी सर्वमृडानी मृड हे द्वानी रुद्र वरुना नी व नए दीनाम सो जो गादो य एसव पुरुष के नाम
सो नाम है ली नें संगस्त्रानि को कोने विधि वनावे वरि सलिये करसे ललनक ष मारन चाहि नाव
८१ क षमारन है कुक मे कर ने है यह विरुद्ध मति उपजावति है यह दोष सह को परिहरि कों नहीं सह है गो
औ अन्न विने होय जान्यो जात है याते सह दोष है विरुद्ध मति रफुरसी रूप रगरी कजल जल लि विका
पृथि या नी विन ही लिषी वांची विरह वलाय ८२ जोनी चैं वरी अरु सेंक है विरुद्ध मति कृत न ही मानी
विविरी गाफूल कर तन यसाकि थौं काम केतु कासे लगिउ वेदे उ वो नो के जो वनन रसके चो सान कुनि
सान कि धौं श्री फल ने सरसषि ले ना फूल दो नो को आल मस्तु कविक थौ न के कल मकि थौं आनंद
के कंद के मनो नरम हो नो के हो पने दने दयारी सन कंचुकी में फ टिक के संपुट में है सरोज सोनो कें

मविस्त्राकुनके अर्थसे

७१२

७ से

८२ इहांमयेस्कोउ लीविधवापहिरतहैं यह दुतरतमप्रतीत होतहै विद्यारीकेदोहामैंदोषनहीं२ध्वनित
कुचवविचकेचुकीचुपरीसाहोसेत ग्रुपरीकहै सोरसिकप्रियायपरैमनुहारकियेपल्लैका परपाव
दिएमएमौनैसोयगईकहिकैसबकैसैंहकोमिदिकोविकसोदलिकीनैंसाहसकैमुषसोमुषकैकिन
मैंपियमानिसबैंसुषलीनैएकउसासादिकेउससैसिगारई सुगंधविदाकविदोते ८४ इहांचोथीनक
मैंविविरुद्धमतिकृतकविकहतहैं श्रृंगारप्रधानतामैंवीभत्सआवहैयातेंअमतपरार्थभीआमे
हैसुंदरसिंगारदेषतिनैनतकेकोनहिलोग्रंथ गनहिमैंमुसक्यातकोष्यानोबालनिबालसुकेव
हिलोचलतैंपगपैनकहूंग्रहहतानो सुंदरकोधनहीमपनैग्रहजोभयोतोमनहीमैंविलानोमैंव
सुथावसथारैसबैवलियाकीसुथाईसुथाईहैजानो ८५ कोपनहीइहांदोसनहोपदैदोषनहीअतु
चितार्थमैंनाकीस्तुतिकीप्रियपनाकीनिंदानिकैरइहांसुंदरकविकीनिंदानिकरैहैस्तुतिनायका
कीहै सुंदरीग्रेमसोपाठपैरैयहदूदोषदैयातेंस्तुतायअरथहोइहांविरुद्धमतिकृतग्रासमासमैंग्र
नुचितार्थभीदोषजानिपरसोपचजनपीयनोत्तुजहहोलीनारिग्रासचनकनिंदाविवक्षविधि
समानिवेबगवाति ८९ पेचजनकहैपांचपुरुषकीप्रतीतयहविरुद्धमति अपग्रविमृष्टविधेया
संश्लैग्रविमृष्टविधेयसोजहांनसमासविधेयकहूंसमाससउदेश्यकहूंपीछेतदांलषिलेय ८७ विधे
यकहिएनिर्देश्यसोजहांप्रधाननहींकहिएसमाससैंअप्रधानरहैकहूंविधेयपहिलैंकहैस
मासमैंदैतूपदजोकामसेसाहू जोवनितिसीनारिकेवाचोनसैमैतकेतियकेनननिचारि ८८ इहां
दूजोपदकोकामसोंसमासकेयोकामकोविधेयोसोनहींचाहिएदूजोनिर्देश्यहैनपड़ैदेश्यहैदूं

जोकामप्रसिद्धनहीकामदृजोहैसोनेयार्थसीउव्यंग्यकाचाहिएऐसेग्रोरअर्थमेंलानिएजोऐसोलछन
करियेजोपदपहिलेंकहनेकोहोयसोपीछेकहिएनोऽक्रममेंजायपरै अथवाकोमेंकाव्यप्र
कासमेंनियमकियोहैक्लिष्टआदितीनदोषसमासहीमेंहोयनहोसमाससोंवाकुभीलीजिएरा
वनकेवचनकीभाषान्यकारजुहैसोहियहसुनियतसुत्रुजुकानइत्यादिहोवाक्यमेंसएनेवा।
क्यार्थवाचकजोयहपदसोउदेस्यसोपीछेहैविधेयन्यकारयहिलेहैग्रेसेवाक्यहिमेंहोयनहोस
मासभीलीजिएएकपदमेंनहीहोययद्यपिपदइत्यादिमेंपतन्यकषिआदिमेंसमासहीहै रसरहसोहै
अयानयहसमुक्तसबिकैंविवेंहैरलविजोहैचदउदाभयेविनदेषैंवहकृवि १९ इहांयहउदेस्यसोपी
छेंकहयोऔक्रियाभीपहिलेंकहिचाहिऐहैश्रुतिमेंनकोरहैनिरंतररीमकानकहैसोनिएसुजस
हृताकहहेदेषेधाम २० इहैपदकोयहअर्थकानकहैइत्यादिवाक्यकोअर्थसोउहेस्यहैऔचाहिवि
धेयहैचाहजोविधेयसोपहिलेकह्योऔउदेस्यजोहैइहैपदसोपीछेकह्योसोहैवैनालपनेपवानि
करहैसहायमनेंचंदरउरसोलियेकविपीवआहिलगाय २१ पहिलेउदेस्यकहिपीछेविधेयक
हिएऐसेसारदीपिकामेंवचनहैसोहैक्रियाहैसोवैनाकेआगेचाहिएक्रियाभीपहिलेनहीकहि
एसमुझिपहिलेविन्तरसलहैनोविजहोदोषग्रसेदोषनिसानहोरसकोहानग्रथोष २२ ऐसोदो
षकोहिवेकोहैइहैवानिकग्रेसोचाहिएविहारी ग्रायेआपभलीकरीमेटनमानमरोरहरकरोय
हदेषिहैकलोक्लिगनियोकोर २३ आपक्रियाहैसहकेपहिलेकहैदोषपीछेकहैसोछूटैहै।

त
दोहा
कृतका
भावेन

यातें सहृदोष अविमृष्टविधेयमैं कवि वेक्षिनजोविधेयताको आकीनरद्दज्ञाननहीं यद्दूषक
तावीजत्र अर्थक्लिष्टनहिवेता अर्थप्रतीतिनहोक्लिष्टहैयहरीति ९४ जहांअवथानसोअर्थप्रतीत
होयभुवनज्ञानसोजानिजोतासरस्वतीअभिरामताकोपतिरच्छाकरोभूपति आगेंजाम ९५ भुवनज्ञान
आदिपदकोप्रतीतनभएतेक्लिष्टगनेसकोप्रतीतनहोतिहै इहांसरस्वतीपतिकोपर्यायगनेसकहैकाविनता
नहीहैकष्टार्थअरथषेचनेपरहैतीसचरनमहिचलननदिआननेनंनक्कतीसचारभुजानपमानकों
नोत्रुषदेतन्असीस ९६ इहांसूर्यकीप्रतीतिक्लिष्ट विहारीपावसकविनजुपीरअवलाक्योंकोरिसंदिस
केनेऊथरननधीररकतवीजसम आनेंरे ९७ इहांरकतवीजसमपदसोंनपुंसककीप्रतीतिवेगि
नहीहोनहैक्लिष्टमैंप्रतीतिकोमार्थपवेगप्रतीतिअर्थकीनहींहोयप्रदूषकतावीजविरुद्धमतिकृ
तअविमृष्टविधेयांसक्लिष्टलीनदोषवाक्यमैंकहेजहांसारदूदोषकहे अर्थपदसमदमैंअनिक
हाटद्दाहृनेकोजहांवर्णिनेकोनिकाटउहांअकेककेसलभोंकनेनिदहुनींद ९८ विहारी
नागविविविविविलासननिजवसीगंवेलिनिमाहिंमस्योमेंगनवीकिनहेउगादेखविलोहि
९९ श्रुतिकटुआदिसेदोषजहांवाक्यमांहिजोहोयचाहतपदसेनोगनहिएतावीचसजोय
१०० अथवाक्यमैंअप्रयुक्तकेलिकुसमसेहृथथरकविनअन्हेअंगलोमोत्तहीजगतमेंलोच
नकामनिषेत ९१ केलकुसमकोकवीरतापयोधरकोनामहृथथरअप्रयुक्तसालनहैनटसा
लसीक्योंहृनिकरतिनाहिमनमथनेजानेतकसीछभीछभीजियमांहि ९२ मनमथकोपत्रुष

है नैन जो ओनत्ता की नोक अप्रयुक्त दूसरो अर्थ देखि प्रकासदीका में कियो है ओ नेजा एकत्ता ईलेइ नौ पद दो
षओ पै है निकुरंब कलेवक है है अथ वाक्य में निहतार्थ गौरि वें विहू गवान पियलषि मकरध्वजने
हें मैं बन्तु मुषजो ति सोहि सो हे विकहा लेहु १२ गोरी पार्वती में प्रसिद्ध भाषा में आवत रसकी स्त्री में
प्रसिद्ध नहीं बावनतो रप्रसिद्ध जिहाज विषै कविता में प्रसिद्ध नहीं मकरध्वज कामसमुद्र नहीं अजं वक
मल प्रसिद्ध वेदू नहीं प्रसत्त किरनमें प्रसिद्ध नहीं लोहू में आसमें प्रसिद्ध है सुधा वौ चि सर्षी चितवबा
न वर्षे उ आपी धन्न दरनौ षरासत्य न विधि कौ वाचैजोय १४ अैसें दरनौ एग वान अथ अ उचिता
र्थ वाक्य में अतिकराल है कालतैं जमवाहन दवजात ज्यों गजपै नरू चहे सो गोलिस नौ गगन १५ अैसें ओ
रिभी जानि एक पद में दोष है किंवा बहुत पद में पद देषि लेनौ अथ पदांस में दोषत्तैसें ओ विकों देषिकें
गेरन सकें वह रायें मिलन कामवसका मिनौ जवेन वै आय १६ उदाहरन छुतिकटु है सो पदकें अंस में है
विदभीरत सन सेवें के रतारहै नागरनाको नाम गये भागर वेंकुन को सेवें वसें गवारें गोव १७ नागरको नाम
ए तनौ चाहिए नागरता में नाअधिक है किंवा ताकौ नाहि पुरुष को नागरनाम सुनिकें हसें अैसो अर्थ कि
ये दोष नहीं कवित्त कूबी बेठें प्यारेन में कूठे जलगावत है तमसम बसायन में सरस विसेष एनाति कें जे आ
वत है होत है वे चोरन मआवत है भोरया तें साहन में लेषिए नैन हैं नलाल ओ महावरने भाल ओ षवी
नकारे का जरकी रेष हूनें देषिए आरसीलो ३ निरमल रावरे को सुषलाम में ही चाह चूनरी को प्रानि वि
वेदेषिए १८ रावरे को इहां कोस हूपदांस में अनर्थ करावे याही में कोस हू को अर्थ है रावरो मुष वि
हारी एवावरी कुचाल रावरी या रस समार परी है अथ पदांस में अवाचक पद है रसाल रवाल ओ षाल फगा

श्रो. ९

है सिद्धे हो रीर वी निज पद्मा सिन सों लिखनी ताबिर हो रे समाचिर ह्यो अनि ही जउ वारिन मारिन सों कुन लैके
अवीरवलाचन नाहि लगे पामन हो धेर वारिन सों उन डारन रूथ की धार वर्षे सत गहै कुच की पिचका
रिन सों ९९ इ हो गहै कुच की पिचकारिन को वा हि प सों जो है सो को अर्थ को अवाचक है जो सुभ ले
कुच की पिचकारिन सों पदे तो दोष न हीं ३ माहि दे सव दूषन पद्यनि में संस्कृत ही में अश्लील दव नेहू के
तने दोष पद्य ही के कहे के तने पदवाक्य के कहे अवकांचकरवे के लिये संक्षेप कीलक्षन उदाहरन
कहत है छ ष्व श्रुति कटु केसन कहिगयो संस्कार भलो निय अप्रयुक्त नाहि कह्यो कविन सो वीन
मे हलि यह अप्रसिद्ध में धरे हैं थे असमर्थ फूलैं जल पीव संवर निहताथें बोल वे मेन विदित भलेप
दिना रिपास के चु कि जु नल पदय अजो ग अनुचित सकट गुनि हेतु निरर्थ क असलील वे लाज जगसा
अस्त्रभव है १० श्रुति कटु केसह है सो श्रुतिकटु षट् है ता सों सष्टी को उक्ति ककेस वचन नायक सों
माति कहै गयो है संस्कार लिंग वचन सों गत संस्कृति च्युत संस्कृति भी नाम भलो नियकी लोक भलो
निय चाहिए लोगनि नैक ह्यो इहो वचन फूलै जल नहाय वे को फूलि वी यादे समें प्रसिद्ध है कवि
ता मैं न हीं श्रुति निरर्थ कहौ सप्तपद निरर्थक है क्षुब्ध लगनि सुभग वयारे नो ममु है सो गुह लीजे ई मेरी
कि मरि है विरह नी सेव कम जुस्तो जई कहे अर्थ व है नाहि अवाचक प्रातन पाति रोवि सुसंदेह है सं
दिग्ध करत पय पान सदा कवि सो अप्रतीत जो सास्त्र महि षान न बाल अर्हे तपि पदेह गेरी अगस्य कहै श्र
मीन नर षुंडा सों ज्ञ कहै नीति य ११ लगानि इति भग पद लज्जा व्यंजक है गुह नाम कार्तिकेय को है
कनीभरन हमारो कियो कोस मैं है कार्त्तिकेय १ षट्वदन २ अग्निभू ३ गुह ४ सेनानिय ५ महासेन

६ ससंदेह ७ पार्वतीनंदन ८ जानिपक हिमरजन्मा ९ सिषिवाहन १० रूनायकजित ११ अहमतिथर १२
पुनिवाहुलेय १३ हविसाष १४ गनिष मातर १५ रूकुमार १६ नवप्रातनतपतर विइतिप्रातसहेउ
हयवाचीनहीं ओनपवो सभवेंनहीं पयसहूहूथको ओजलको वाचक है हेवालनतेरोप्रियअहेतहें ओ
सोहूसरोनहीं अहेतेवदोतसा सुप्रसिद्ध हैयाके भेदबहुतकहिआयेहैं छेप्पेरूढप्रयोजननो हैके
रैलछनेनयारथके जविक्कोनोकरैनेनछूदनसरपार थहद्वानीवल्लभविरुद्ध मतिकृतनवुद्धिसत॥
क्लिष्टविलेवप्रनीतिसंभुसिरुभूषनसुषमतं अविमष्टविधेयवषांनिकविजहांविधेयनहिंसाफस
निहेभूपहूसरोमदनसोतियहितीरतिसीजगुंनि॥१२ हडिइतिजहांरहिभीनहीं ओरप्रयोजनभीनहीं
तहांघेंचिकरीलछनाकरैतहांनेयारथदोषहोय नेनपारथकेसरकोछूटतहैनेनकोपावतहुगाव।
तीनामोछूदतहैनेचअर्थकेहे पतनतो अर्थकेलियेसंभुसिरुभूषनचंद्रमाभूपहैचाहिएहैविधेयहै उहां
वाक्यमेंहूसरोमदनप्रसिद्ध नहीं इति श्रीहरिचरणदासकृतेकविवल्लभेपदपदांसदोषनिर्णयः १
अथकेवलवाक्यदूषनविरुद्धमतिकृतअविमष्टविधेयांसक्लिष्टएतीनेदोषवाक्यकेकहे अबवाक्यदो
षओरिकहतहैं ॥ कवित्त प्रतिकूलवने १ हतहतर न्यूना ३ धिकपद ४ कथितपद ५ पतितप्रकर्ष हू
वषांनेहैसप्तपुनराप्त २ अरहीतरैकवाचक ८ हैअभवन्मतजोग ९ नोरसतेंजानेहैअनभिहितवा
च्य १० अपदस्थपद ११ समाप्त १२ संकीरन १३ गर्भित १४ प्रसिद्धहत १५ ठानेहैंभग्नप्रक्रम १६ ओअ
क्रम १७ ओअमतपरार्थ १८ एतेवाक्यदोषतेनथरैजेतहांनेहैं १ अथप्रतिकूलवर्नतेंजिहिंरसकोला
यकवरनेसोनथरैताहिंठोवहैप्रतिकूलवर्ननहींदोषकहैकविमोदरकोमलवर्न सिंगारसकेहूमभा

कत्ल १

धूरी

षाभूषनमैंकहेहैं ३ द्धतवर्नवीररसमैंवीद्दरसवीभत्सरसमैंसानरसमैंचाहिएनाकोजहांवाह्मयकरेस्रु
तिकडुतास्रृंगारकोदोषहैं निरवि सुघटकैरंगमोंप्रगटनपुरटनज्ञातिकोटनटपटविचोकिकनीचट
कीलीधुनिहोति ३ विहारीसकुचसुरतन्आरंभहीविछरीलाजलजायदरकिदारढिदिगभईहीवदि
वोईआय ४ टवर्गवर्नवीररस आदिकेअनुकूलस्रृंगारकेप्रतिकूलरचैनरंगसुअंगमैंसपदकैनरंना
दमेदेकुंभीकुंभकोचढिनरंगरनमाह ५ इहांसानुसासस्रृंगारकेअनुकूलवनेवीरकेप्रतिकूलऔमैं
ज्ञानिएउपद्हतविसर्गलुप्तविसर्गदोषहैंसोभाषामैंविसर्गनहींदोषकहांतेहोयजहांवडूनेओकार
औवैनहोअरुकोनहीलगैकहांसहोरहोलहोअसैंजानिएओविसंधिदोषहैंभाषामैंसुथिनहींजहां
कारआगैवकारयकारआवैनहांओकारएकारपढायनहीतोछंदकोवंधअरुकोनहींलागैजेमैंमैवी
भोवाधाहरैभववाधाअरुकोनहीलागैजेजेमीनवरादइत्यादि अथहतहतजहांजतिकेदाभंगतैंहहतहत
प्रसंगा ६ कविप्रियाहरिहरिकैसवमदनमोहनवनस्यामसुजानज्योब्रजवासीहामिकानाणर टनरि
नमान ७ इहांजतिभंगाकैदोभंगदोऊहैं अथन्यूनपदजहांविनपदरांअर्थनभासैसोपदनहितदोन्यूनप्र
कासै ८ केहूकेसेगहलीनचलीअजहूकछुचेनदईकेसवारेजादसकेथकेवदइतोअवसोरूपेरसन
माहिइद्यारेलंककविरानभईकविगगदसोदिसिवविगएरषवारेरावनकेउषनावनकोस्तनीभरको
विननीकारिहारे ९ वेदइतोललीकैभूमिअमेसोचाहिपेरतीभवसोंजोकह्योचाहिएयातेन्यूनपदवि
हारीलसैंमुरासातियश्रवननयोमुकतनिद्रतिपायमानोपरसकपोलकेरहैस्वेदकनकाय १० मुरासाजडा
वकोनामहैजडावकोकर्नफूलकिवानरकोचाहिए अथअधिकपदजाहिकहैविनविगरेनाहीदेस

सवैया

अधिकपदकवितामाही ॥ ११ बिहारीबादननोउरउरजभरूभवनरूनहे विकासवेफिलमोतिनकेदियेंआव
नरूकोउसास १२ इहांउरपदअधिकहैगाकोतिनयअवस्याविरोधकेप्रसंगमेंकरेंगेलपरीपङ्कपपरा
गपदसनीसदमकरंदआवतिनारिनवोटलोसष दवायुगतिमंद १३ पङ्कपकोरजसोपरागकहावति
हैयहप्रसिद्धहैपरागकहैपङ्कपआवतोपङ्कप पदअधिकहैकिंवापङ्कपओपरागजोहैपटमासोल
पटीजोत्रसोअर्थकरिपतोमंदपवनसोफलनहीउड़ेहै कविन्नइंद्रजिमिजंभपरवाडवत्रेंपोंअंभपररावन
नसदंभपररघुकुलराजहैपौनवारिवाहपरसंभुरतिनाहपरज्योंसहस्रबाहूपरराममद्विजराजहैदावाद्रु
मदंडपरचीतामृगझुंडपरभूषनवितंडपरजैसेमृगराजहै तेजतमअंसपरकान्हजिमिकंसपरत्योंम
लेच्छवंसपरसेरशिवराजहै १४ इहांदंडपदअधिकहैद्रुमकहै ॥ उरपोतसवआवनतेजतमअंस
पररहोअंसमवदमभूरकोआवाचकहैभागकोवाचकहैयातेंअवाचकदोषभीजानिएपल्लवअरुलाल
लालनवअधरनवेलीवालवनसरूपसेस्यामतवकेसदेसकीचाल १५ इहांआकृतिसरूपपददो
यवारआयोहैयातेंअधिकपददोषवाक्यमेंभयो अथकथितपदएकसहद्देद्वैवारपुनरुक्तिसोउदा
१ १६ नेरेमुषसोंचंदसविलागतनमंदमरीचगुपतेरोसोभसषीद्वेघटपटकेवीच १७ मुषसःषिपुनरु
क्तिएकवारकहिकेफेरकह्यो अथमेजाहीकोउरहाविकवितहोदोनोंमागिनेहूकियोगनिकाहुअ
वचल्योनेहूतजिभागि १८ मानतिनाह्योलागिहेसोकह्योचाहिएमनेवपाजीतिदिसानवजायकेंल्या
येकिनेगाहिभूपतिभारीभूलिफरमायसवालकोआयसभंगभयोभयभारीलोयनलालकेलाल
कीओरलषीजवहीमनमेंरिसधारीभूपतिदेरवदेअवनीतनऊचीकेनारिननारिनिहारी १९

ध्वनभारी सौ कहो बाही ये न्रपभा... [illegible] ...समर्थ पुनरुक्त दोष है

कल्प

११

इहां भूपति भूपति इनरु मिल्यो एकिते गहि कैं न्रपभारी औसो चाहिए अथ पतत्प्रकर्ष जो रचना आरंभ ई सोन हि सकै निबाहि पतत्प्रकर्ष सदोष तहिं कवि सब कहत सराहि २० श्री भागवत प्रकास हमारो कियो न हो कौ कछ पैज हम सुबपदल दैत सकु न हि बुद्धि विचारिये ऊंह इहुं करि प्रबल प्रहार निरुद्ध बकारिय कोटि कटक को गाढ बुद्धा समर में सज लीन डरे प्रचंड सुविद्व दिभुद नादि द उद्धत दीन उंगुने निष्प केतु रूषा सहित रोष मो षहि तन प्रग्र किय तब भेजि भुजा दंड रिच के सो बाना है रजिय कोरि दिय २१ इहां जो अच्छर की रचना ले चले सो न हो निबहो बिहारी मीतन नीति गली न है लै धर्म पै धन जो रि षायै परचैं जो बचै तो जोरिए करो रि २२ मीत न नीति गली न तीति ग्र अनुप्रास की रचनो आगे न हो निबाही बाये षरचैं षम सो जुरै तो जोर करोरि औसो चाहिए अथ समाप्त पुनरात्त वाक्य हि जहां पूरन करै फेरि चाहिए न रहाय जहां समाप्त पुनरात्त है फेरि विसेषन लाय २३ तिय पिय के मन में बसी तो सौ आरि न बाल मान न जो बिहरो हिमि लिग जग ति ने न बिसाल २४ वाक्य पूरन कियो आ कों तान रहो फेर विसेषन दियो पहिले विसेषन दे कें वाक्य पूरन कर नो यो समाप्त पुनरात्त कौ अर्थ पहिले समाप्त कियो केरि आन को अर्थ प्रदन कियो पिय की बांबा मति केरि साषित अ भवो भेरमान न जो हंसि कै मिलो अ पद रंग आग २५ इहां भी औसे जानिए अथ अहीतरेकवाचक जो पद जहां सचाहिए सो पद न हो न .... होय आनि वि अई में देषिए अहीतरेकवाचक जो यर द कोई छंद में अवि आ याको पद और आ या में अनन्वित सो होय हलो इ को पद उत्तरार्द्ध में किंवा उत्तरार्द्ध को पद पूर्वार्द्ध में जै है मोद न मधु पुरी यहते सुनो किनो हि वान मांहि नीनेह संग सो मोको न सहो हि २७ यह बात न ते मू

दोहा

सहीन री जाय है

दुषी

नीकि नं दिॆ औसो चाहिए हर्वोहै को पद उजता है मैं हैं मनि कि ल्हू वाके नूस षीछनन हि छनन हिं

ग्राहि विरहा मैं सतपत्र मृषियद्द उ षका द्दूए का हि २८ विरहा सो या पद को अन्वय कि ल्हू वा सो

किं वा छन सो अथ अभव न्मत जोग या को अर्थ ꣸ अभवन वाह्दिए नहीं होत है मत का द्दिए हुता

को जोग संवंध को विवोछि ना निकरै नहीं औ सो पद को जोग अभवनमत तहां कहत है वडे वडे क

विलोग २९ जहां न कत्र मालाल से अंवरभलोल षायनासों पिय को मन वंध्यो क नहां तीयसुहा

य ३० इहां चाहिए जहां मैं तहां को संवंध द्दे लाज भूरी जो लषै नो ꣸ पिय हायनि हाल वंधि

दै नो नुवरूप सैं नवतन दै वरवाल ३१ इहां जो की वोस्योनन लषै आगे नो पद है सो पद सों नो

पद को संवंध है जोंद सो सो पद को संवंध दे इहां क दि को चाहो अर्थ न हो निकरत है हे वाल जो

नैरूप सों वंधै गो सो वरनजे गो तव पद औ सैं नहीं चाहिए जवन वसंवंध है और गानिदु तिन पनीयसी

जो तन मदे षीना विरहन मकों अति चाह सो मादन रहो निहारि ३२ सो पद मो दाह दगा वन्यो चाहिये वि

हारी मो हूस्सों वान निलगैल सी जो भजि हिं जाय सोई लेउ रलाइ ये लाल लागियन पाय ३३ हिंदि

के नामसों जो भकरलगे निहि काम निउरला ३ एऔ सो चाहिए ग्रंथोतर जहां पूर्व पर सो मेल न हो

हो यन होय हो दोष आगे जामैं ते पिय सो राष ति मानेनो सीओ रहित न मषि सुनि दे चिन दै कान ३४

औसी कहै नवमेल हो य मान रषै इजग तमें होनि वडाई जोनि अथ अनभिहित वाच्य अनभिहित

को अर्थ नहीं कहो है वाच्य को अर्थ अवस्यक हिवे को द्योतक पद जहां कहिवे जोग प जहां न हि क

कमल

तहां

कैतुम

निकाम

सेंद्धि

आराम

मानति

कल्प. ५ १२

चिन्ता धन

हैंनहोग्रनमिहिंचावाच्यकोंलहैं ३५ घोरोगुनजामेंरहैंनहिंमानतसबकोयसिंजिनिबिनइघास
कोसोकामसरैनहिकोय ३८ घोरोगुनजामेंरहैनाकोंनोलोगमानततहै ओ बहुतगुनजामें
रहैंनाकोंलोगनहींमाननहैयहग्रर्थनिकरतहैं योरोभीगुनग्रैसोचाहिएदोषलेसपि
यकोनहींनमाहकाकैयमानयोरोनाहिमानतग्रलीग्रसीहैग्रज्ञान ३७ पियकैदोषकोलेस
तोनहींहैपैं बहुतदोषहैयहभासतहैयानेदोषलेसभीग्रसोचाहिएथोरोभीनहिंमानत
हैंग्रैसोचाहिएनयुनपदमेंवाचकपदकोंकमतीइहांद्योतकपदकोंकमतीत्वमकदेतुम
हकहेहद्योतकपदग्रोरनेभीकह्यापतनोग्रर्थहूपदसोंजान्योजायेंइहांवाचककहिएद्यो
तकनासोंजोभिन्नसहतानाकोकमतीनहींहैपतनोभेद भाषाभूषनसूवैहूंपियकेकहेनकु
नमानतिवामग्रैसोकह्योचाहिएयहमानोकैयोमोहनलोलाकोकवित्त श्रीजमुनाजीकोस्तुति
जोकेतीरवासीमनग्रानंदकासीचितव्हावतइहांसीविधिहूकोराजथानीमेंरविकोकुमा
रीग्रैसीमोहनकोप्यारीसबमसविताभारीजससज्जाकोंसुनिवानीमें जाकोधामहोतिनरवादिकमें
वंधनकोंलागतनवारभवपारजातजानीमेंक्रैवनेकुनीरपावैपुत्रकोसरीरपापरहैएकोमा
सोनवनासाज्ञेसेपानीमें ३८ इहांजोएकोमासाकहैयानेदोषनहीभयाग्रथग्रस्थानस्थपद
जहांपदचाहिएनहोयग्रस्थानतनावैलायं३९ ग्रहीतरेकेवाचकमेंग्रोरग्राधाकोपहग्रोरग्रा
धामेंरहैग्रस्थानस्थतोएकहोग्राधामेंकिंवासरपनमेंविकानैंकोडिकोडिपदरहैंपीतहैह

नहीं

छंद

नहो

दोहा १२

स्याव

मैं पटल सैम रङ्ग षवैसीनाद सनैं लषें सषि होनहै काम हूकों उन्मादु ५० देहमें पीनपटल सैसु
षमहू रवें सी नादहै ऐसो चाहिए विहारी सहृनकें जकी या सुषदसीतल मंद समीर मन ह्वै जात अजौं
वहै वा जमुनाको तीर ५१ मुनोंके वानीर ऐसें कहने तो पद स्थान पद राषिवें कोविका नींतहां
स्थ को अरथ स्थित होनो सो नहीं है हमहारि मकासदी कामें औ रिम्र र्थ कियो है तहां दोषन हीं
अर्थ अस्थान स्थ समास जहं समास चाहिए न हिं करें अस्थान स्थ सदोष उच्चरें ५२ उगतिमो
रिअंजनहूर मनिमोनकरें गिसधारि कुमुदको सअलि आवली असिलई निकारि ५३ इंदोकुह
को चंद्रमाकी उकितमें समास करनेलो औजगुन पुष्ट होनो कविकी उक्तिमें समास कियोछवि
यकुलगुरु ऐसो कवनमें सोल रैंज पै रियहूक हिका वेन कुठार वर धारयाम हां हें ५४ इहांय
हू कहिकें परसरामजी की उक्तिमें समास चाहिए अरथ संकीर्न और वाक्यको पद जहां और वाक्य
मैं जाय सकीर्ननहां दोषु कीको कविजन देत बताय ५५ नजोनेह गोवनजु शुषि सोनगहां हिंग
कैन किननीनो सोक रानिदें औयोसमय वसंत ५६ नजो... दोष कियाहै याने दोय वाक्यहें
एकक्रिया सोकेतनातू सहू लागे सोवाकमा नवेतन जोनेह कौ गहा ऐसो चाहिए अरु था भिन अ
स्य वाक्यमें वाक्य आदो वेरा भिनतदोष कहत मैं आवे ५७ उजेन उमत हह भावकी संगति उथको
वास्य हिन करि तो सो कहह निहो कतो नयरी विसवास ५८ हिन करि नो सो कहहु (?) इह वाक्य
केअंतमें चाहिए सो और वाक्यनिके वीचमें राष्यो कवित मोडवउ जेन मनै भूषन मयलर्सेनिम

13

हरसरोमलौ पक्षुवनो परत हैं को इयानें तिल गानें कारनादी फिरगोनें दें वसानें हिमतकी है
हृहरनहैं सांहिकेसमुनमाहसोक वीरसिवराजको ईगदपनोधरापीरनपरतहैं वीजा अ
गोलक्कुंडा आगरे दिलीके कोरवाजेवाजे दिनदरवाजे उघरतहैं ४९ इहांमूढवसोलेपरावनो
परत हैं एकवाकरहैं तामैं भनें भूषन ओ विवाकय कस्यो रसिकप्रिया हू विचेदन पेकजवेदनकें
चनेरोचन हूकीवचौं कहिये किहिंकारनि कोइन लायककापरभामिनिभो हैं नचीं अनुमान
नहीं अपियांलषिलालपनोहिननानि केरोसरचीं तननेरे वियागनण्यो नसचौं तिहिंमानहू मो
हियमांहिंनची ५० पहिलीनक आषिको विलेषनहैं ताके वीचमें हू सरीनुकपरी असी लालजो हैं
आषिनाको देषिकें अनुमानकरतहा औ से जानिए अपप्रसिद्धहैं नजो प्रसिद्ध है राषे जहां नहीं अप्र
सिद्धनहां यंतहां प्रसिद्धहैं ता हो षकोभाषनहैं मवको य ५१ भैरीको फेकार सुनि दुंदुभिको टंकार ॥
मेंडला घमोचेषि न्प पपनेकियाभयकारपरभेरीको भंकारप्रसिद्धहैं फेकारअप्रसिद्धको दुंदभि
कोभंकार पन्नु पकोटंकार प्रसिद्धहैं यो साधुं कारउकारन मानोप्रमानवे थिवो सहूनीस्वर
।कौविषैकिंवाइदोकियावितह फेसकिफवानानिसोफवेसवुकवेजेवेदहासकरमेलियो सत्रिसि
निसोतेज ५२ कमकिवोमह स्त्रीकोवाल विषैहूटहै विहारीमानंक मकफ मकटहूले करोतिल
गोमहवेटेवाल अथ मग्रोपक्रमपहिलेजोआरंभ इलानहिंमकें निवाहि भग्रोपक्रमकहतहैं असो
कमकोवाहि ५४ विहारीकेतनलयटयतमोगारैसो नजु हीनिसिमें नजिहिचंपकवरनोकिपणु

दोस

लअनारंगनैंन ५५ मोगरामैंसोनन्हीमैंहसवोअर्थनिकसैयोदोयअर्थकेक्रमकोआरंभकि
योसोनहींनिवह्योचंपकगुलअनारकोह्रसवोअर्थनहीनिकस्योलग्योसुमनह्वैहैसफल
आतपरोसनिवारिवारीवारीआवनीसींचिसुहृदनावारि ५६ आतपकह्योफेरवोसकुह्यो
नोआगेंवारिसहृदनावाहिएघनतमकर्षमअक्रमकोवचनानहींनिवादेअर्थअक्रमअक्र
मसुदोषजहोक्रमनहोयपदअर्थचितदेसुकविजाय ५७ विहारीवेंदीभालतवोलमुषमी
समिलिमिलवारदृगआंजेंराजेंषरोपहीसहजसिंगार ५८ मुषतेवोलदृगआंजेवेंदीभाल
सोसमिलिमिलेवारयोंचाहियेंकिवासीसवारवेंदीभालदृगआंजेंमुषतेवोलअमायाहिएद
वताकोवतनपावकोआरसोमनुष्यकोवनेनमाथोकोआरसोभआपक्रममैंजोक्रमलेचलेसोन
निवादेअक्रममैंजहोक्रमनहोंरहेपतनोभेदकोउभआपक्रममैंअक्रमअनरभ्मनकरेंदेअसैसो
समुकरकोटिकाळनोकरमुरलीउरमालउहिवानिकसोमनमदावसोविहारीलाल ५९ यहभी
अक्रमजोनिएअर्थअमतपरार्थप्रस्तुतरसकोदोनजहोरससुविरोधीआरअमतपरार्थसुदो
षनहोभावनकोविसिरमोर ६० जोरसकोप्रसंगकरेंताकोविरोधीनहोइहसुरोरसरदेअमत
कहिएअनिष्टहैपरअरअर्थजहोरामकोमसरसोहनोरेनचरोहियगमेलोहूचेदननवा
ईजोविनेसकेथोम ६१ इहांताउकावीभत्सरवकोप्रथानआलेवनहैइहांश्रृंगारव्यंजकपद
दियेवीभत्सश्रृंगारकोविरोधपानपीकसोनितपरयावटकोचूडोहाडनाहकेदृगीविरहगज
मारिकियोतववलाइ ६२ इहांश्रृंगारविरोधीवीभत्सवाक्यमैंहैयातेंप्रकासितविरुद्धनहींआ।

दोहा

श्रृंगाररसमैंकरुणामईदोसहै॥

का.स्त्र. व. ख 14

वीनसेवमैंकरकीज्ञरीदूरिकरिहेगश्रेजनथोयउारियावौदैपियकामिनीसवैसिंगारउतारि ३६ह्वां
आगतनपतिदेषिसषीकोउक्तिमैंस्रृंगारकोविरोधीकरुनरसदेषानैप्रकासितविरुद्दोषनहींभया
यहअठारैदोषवाक्यकेकहेअथरसविरोधकहनवीभत्सरुरौद्रभयवीरपांचनिरधारसुनकेमि
लनसुनमनदैसकविकहैस्रृंगार ८४ पपांचस्रृंगारकेविरोधीहैभयकरुनासोंनमनदेहा
स्यकरुनपुनिज्ञानहास्यओरस्रृंगारसोंविगरैनिश्रेमान ८५ भयानकरससोंकरुनरससोंहा
स्यरसविगरतहैफेरहास्यरससोंस्रृंगाररससोंकरुनरसविगरतहैरौद्रहास्यस्रृंगारभयरुनहिव
हरायुसोंतभयानककेमिलतवीररसउहिजाय ८६ हास्यरससोंस्रृंगाररससोंभयानकसोंरौद्ररस
विगरतहैसांतरसकेमिलैभयानकरसकेमिलैवीररसविगरतहैहास्यसोंनसुविवीरकुंपयाते
भयकोंतासवीरहास्यसुविरोद्रभयरुनसोंसांनविनास ८७ हास्यआदिपांचसोंभयानकरसवि
गरतहैओवीरआदिपांचसोंसांनरसविगरैदोसस्रृंगाररहिकेमिलैवीरविभत्सरसुजायलहिदोस
भावकाममैंउदाहरनचितलाय ८८ जाहीसोंस्रृंगाररताहीसोंवीररतहादोषओनायिकाकेदेषत
औरसोंलरैतहांदोषनहीओसैंजानिएअद्भुतरससोंरौद्ररससोंवीररसकोंविरोधनहीओस्रृंगारकों
अद्भुतसोंविरोधनहीओभयानककोंवीभत्ससोंविरोधनहीयहचंडीदासआदिकामतहैगोंडेसव
रनिकोरीतिसोंदसरसभापकासमैंकह्योदैतहांवात्सल्यरसहैसषरसओदास्यरसओवात्सल्यरस
रतिनेंसहित अथसंछेपतेंरसप्रतिकूलवर्न । निकटपटलपदैजओवर्नसुनपदरसु
पदकोमोजराउकरनिसुहावतनाहिंविगरैचितकहैअधिकपदसुक्रमपरगहिफेरकहैपुन

दोहा

दोहा

दोहा

दोहा

ह्रति ४ मिलोपियप्रियमतत्यागद्दूर्वचनाननिवाहतवनेकीदोषसुपततनपकर्षपुगनिवेजो उदंड अ
तिमुद्रभाषिफिवेसुत्तसंगगुत्रुवति ६९० रसउतिमिलोपियनहिंमतित्यागोग्रैसोचाहिएजेसीग्रक्षरकीरचना
लैचलैतैसोनहींनिवाहैसोपततप्रकर्षकप्पैहैसमासपुनरुक्त ६ भुवनकारिदेतविसेष नवनविहारक
रिपियापीयरहिसोयललिततननकविवोलिततनहिकहैंअभवनमतजोग २ सवाहतिलषीलालेजोवा
लईहैतमकोंप्रतिचाहतिअहींनरेकवाचक ८ सनोओर अईपदओरमहिजेहैसुपीयपरदेसमुनिआ
जवाननियललितनहि ८ हैसमासइति १० अभवन्मतजोगकेउदाहरनमैंदेतसु कोंप्रतिचाहत
यावेरसोइतमकोंप्रतिचाहतिअैसोचाहिएअहीनरेकवाचकजहांओगिआथाकोपदओगिआथामैंद
यइहांजहैसुपीयपरदेसआजेवानतनिअैसोचाहिएएकप्पैकोहिवजोगपनकहेंअर्थअनभिहितवाच्य
९ रमिथोरीभोरहनसोपिनाहतोउरतिसषीतिमिग्रस्थानस्थसपद १० समास ११ सोलसैग्रनन्वततूप
रगालमैहारषायवेदोललालाहपिनगमिन १२ सुवाक्यगतवाक्यजहांपलतिग्रहनसुहेउपदजोहैन
सिंग्रसिद्धहत ५ हूदितनहेयगामदेषवरहूजोवाक्यकछ्योग्ररु ११ कहिवेउनिग्रनभिहितमेंथोरीभी
भोहमतिमोरेअैसोचाहियेग्रहृतभितमैष लउपदाईहैयाते
हातेयनहांहूमतिरहैयहहूजोवाक्यकछ्योग्ररुहहितसहहायोकेगजिनमैंप्रसिद्धओहेपाअसकेवो
लिवेमैप्रसिद्धकोसमैहैयातेरहेप्रसिद्धहतओग्रधिकपदभीहैकनीभरनहमारोकियांसचूलिकासु।
कहिकनेमलदाहिय। कुंभधरअवहित। हेराजनाद संधआसन। विचारितसयंकिसोर। वाल
वामी। वड्डरिवजवारयअसार योडिमयहहेया। सुओरिद्धैयारसवदकासा। सुवाचकजानिलयहप्पैक

केल.
१५

रै प्रथम आरंभन निर्वहन भग्न उपक्रम ॥ १४ ॥ मोहदयन्तु षहगवांनल सैं नामासु अनूपमैं अक्रम ॥ १५ ॥ जा
हां कम हीं नल षोस्र कृ दी कुचचकचलसैं है सो अमतपरार्थ ॥ १६ ॥ जहां इहां रसको रसंति याँ निरयगे ह
नमजानन नामान मांनि वनमैं विट्हमैं यह वाक्य दोष लघु करिक हैं केवकरनि दित सकविदह
२२ करै इति वर्णकी रचना विनोएन नाया मैं पनत्यक षसों वीच मोहदय नुषहगवांन इहां रूपक
कियो औ गौन हीनि वस्था याते भग्न उपक्रम गोहृति रयै इहां नायिका श्रृंगार को आलंबन तहां नि
हनै कवि वल्लभ वाक्य दोष द्वि ताय: अथ अर्थ दोष ॥ अर्थ है अपुष्ट ॥ १ ॥ कष्ट ॥ २ ॥ व्याहत ॥ ३ ॥ औ पुनरुक्त ॥ ४ ॥
दुःक्रम ॥ ५ ॥ भी ग्राम्य ॥ ६ ॥ औ संदिग्ध ॥ ७ ॥ हूनधारि एकै मैं निर्हेत ॥ ८ ॥ प्रसिद्ध विरुद्ध ॥ ९ ॥ विद्या विरुद्ध ॥ १० ॥ अन
वीकृत ॥ ११ ॥ नियम ॥ १२ ॥ अनियम ॥ १३ ॥ विसेसमें ॥ १४ ॥ अविशेष में ॥ १५ ॥ विशेष है साकांक्ष ॥ १६ ॥ अपद
१७ सो क्रम नहीं ॥ १८ ॥ सहचर भिन्न औ प्रकासित विरुद्ध तजो विध्यनुवाद जुक्त सर
थ अपुष्टार्थ लित अर्थ दि जहां नहि पोषै तं अपुष्टारथ नंद दोष रै लाल के संमिसी दसन क्यों
नकरे अभिसारनी मगजो हूते कुजमैं कवकोनदकुमार ॥ १ ॥ इहां लाल के संमिदसन पद पद अभि
सारि कविवेके उपयोगी नहीं कृ आकें पाकर किनिकपोल मसविहरनसै भाग यह विहारी के दो
हा मैं जेपद है ते अभिसार के अर्थ कौ पोषत है ॥ गोरवरन अजान मृग लोचन चाह विसाल क्यों न हो
य कविता निपुन नगर मैं मृगकामाल ॥ ३ ॥ गोरवरन औरहि पद कविता निपुनके अर्थ को पुष्ट नहीं करे

इनकी भार्या हरनी पार्वती कहि सोप्रतीत भई ८

पत्रनाम वाहन को [illegible] कहि सोप्रतीत [illegible]

जोगिनी

नहै औरहूं सो समान भूपन राजन भी है ॥ अथ कहा ये अर्थ कहि कै तिनको जो जाय सो कहा रघ दोष कहाय ॥५

जोगिनि सौं सेवित सदा हहै तिनि को वास राजन्त है लिखि पच्चीसौ केवल के कैलास ६ जोगिनी जहां

रहति हैं पत्र पोषण पत्र वाहन हरिनी सुंदर तीन को भी [illegible] नाम है पार्वती की प्रतीति कहि सो है ॥

रहै जन ये अर्थ की प्रतीति होति नित रहि पत्र भासै है जे सोहि सम हरोय अर्थ को कहत है तन सोई कोई दूस

रो सहहै रे तो भी हूषन नहीं [illegible] नेन नमो निज विभूतन नृत नामैं [illegible] जो हृषाकु पिनि बभवर के

मला सो है ति [illegible] गुवान के भी तीन नेत्र है चरन मैं श्री गंगाजी है कमला सुंदरी स्त्री को नाम है पा

र्वती की प्रतीति कहि सौं सरस्वती अमित पथ सो चलै [illegible] भ्रम मान सो है ति है [illegible] भाव

नि सकल जन होत ८ श्री गंगाजी तीन पथ सौं चलै है सरस्वती अमित पथ सौं चलै है यह अपि को

ई सरस्वती नदी मात्र को नाम है श्री गंगाजी की प्रतीति कहि सौं [illegible] ॥

विहरत [illegible] ९ कल काम को नाम नहीं है [illegible] काम की प्रतीत

कहि सौं [illegible] माता [illegible] पिता [illegible] प्रतिपालन करै [illegible]

है [illegible] सहायक [illegible]

[illegible]

के किन [illegible] १० जो दोय [illegible] ॥

जीवमात्र [illegible] माता पिता आदि जे सेपोषन पालन आदि करत है [illegible]

नी जीवमात्र को पोषन पालन इत्यादि करति है यह अर्थ कहि सौं [illegible] चरन है पग

तिपुर के तीन नेत्र हैं एक पग [illegible]

दोहा

[illegible]

गंगा तीन पथ्य सो चलै [illegible]

दोहा

फ़बि
९८

16

लछनभायँरामचंदछोरादियोसीतारामसहाय ॥ वनमैंजायथेजहांरामजीपायधरतेंतहां १
श्रीसीताजीपावधरतीमैंधरतीथ्यासोग्रंथलियाछोराकेआगिलेपावपावसोंलगेहैं अरुछोरादोय
पावकरिकैंश्रीलछनजीकेसमानहैलछनजीउनकापावमैंपावनहींधरतेपावपैलायकैं
धरतेयातेंछोराकेपीछलेपावफाटिकैंपरेहैं अैसेछोराकोरामचंदहैतातेंदियोयहग्रंथक
ह्योसोनिकरैहैं छोरानिकम्मादैं ग्रंथव्याहतनैंलातिनिंदापहिलेकौरैकहैं अन्यथाफेरिव्याहत
हैं इनमहांकविवरनीकैंहैं ॥ १२ पहिलेकोईपदथकीउत्कर्षनाकहैंकिवाम्बनताकहैंताही
कोंफेरिअैरतरहकहैं विहारीपियनियसौंहँसिकैंकह्यौलैथैहैं दोनानदौनवैंसुषीसुषचंदतैं
भलोचंदसमकौन ॥ १३ इहांनायककौउक्तिनायिकासौंहै चंदसुषीचंद्रमासोंनेरोअरचंदता
यकसुषहैं इहांपहिलेंचंद्रमाकोउत्कर्षकह्योभलाकोअर्थविपरीतलछनाकरिबुरोके
कियोचंद्रमाकेसमानकियो इहांचंद्रमाकोअपकर्षकह्योजातिकोकिवानिंदाकोनिवाहनहीं
कियोहैसिषकामामैं अैसेअर्थकियोहै इहांनीवानीकहांकहांमेनकीनारिअहोमनकामिनिज
ह्वैहैतिकौअनुहारि ॥ १४ इहांइहानीआदिकीनिंदाकरीनायिकाकीजातिकैफेरितिकीउत्क
र्षनाकहीहै इहांअनुहारिकहैव्याहतजेउस्मरनहतेंअथिकलोकरकेलपडुमसोभजाहिलषैनहिं
रहतनदैयनलैनेकोंमै ॥ १५ सुवरनरूकीनिंदाकरिफेरिउत्कर्षकह्यो इहांव्याहतव्याहतकोअर्थप्रति
हतदूषनकोनामव्याहतहैं रसरहसमैंअव्याहतलिष्योहै एताभीजाननाहीं दोहाजाहिहैनिरादर
कौजिएतातेंजसकीचाहतैंताकौसोमनवकहतनहैं अव्याहतकविनाह ॥ १६ ग्रथअर्थपुनरुक्तिवेन

दोहा

दोहा

दोहा

चेतमधुकोएकअर्थ मधुकरैतोहोअभयो · सेनांपति · चेतयेंरमैसोनायक जोमानकरे · तसवीर २ · प्रोमोकोनहीदिषद

चम्पकवनिकामकोनांगमैंफैस्यौआयमधुमैंरमसौमानजोकरैंनसोहिलगाय १ चेतकोमधुकोएकअ
र्थनामैंरमसोअैसोचाहिए विहारीलिषनवैठिजाकोसिवीगाहिगाहेंगरवगहेंभएनकेतेजगत
केचवनरचिरतेरेहूर १८ गरवगहिरकोएकअर्थहमआरैभीअर्थकियोहैअैंसक्रमेंउहांआखा
कमभासेनोहीसेउःकमकविकोलषिजोहो १९ दोजैमोकोलाषयतेकैथनदेऊकरौरअसदे
अगजनदेहूकैनोसोकरतनिहोर २० पहिलैंकरौरमागैपीकेलाषमागैपाहिलेराजमागैगजबहुत
मोलकोहैयहअर्थपीकेअसमोगीअसेपसादहूनहीतोहपीयादेहूनहीतोमोदरदेहूइत्यादिका
निवविहारीमोहूहोनेषोषजोअनेकअर्थमनिदेयोसोबांधेहैतोघनोबांधोअपनेगुननि २१
अपनेगुननिसोंबांधोतेहुमारोगुनाहुवादकरतरहेंयहूनवैसबनिकेमतमैंमुक्तिसोंभक्तिहुले
भरहैमुक्तिकेवलज्ञानसोंभोहोतहै औरमोवप्रकौनिकेज्ञानसोंभीहोतिहैयातैंपाहिलेभक्तिमांगीवा
हिएअपनअग्रमैंलीगुनावारअर्थजोभावैंआपनहोवाहिअर्थहिवोष २२ विहारीविषमहूयोदिन
कोकोनकातेएमैतोटविकोयिअपारअगाधमेलमासोमहूरवयोपिरि २३ मोसोमहूपकोपिआ
मौनकोउक्तिहोसमहूआमौननहीहैं अयहमदियसदियेनेहमेरेहरपदअथहूषनदोहा विहा
रीकहतोनहकाममहियनेकुलषाननदाकौविरहतचेरह्यसमुअवसैहूडकोसोऔक २४ इहा
विरहीकोउक्तिहैकिवाविरहिनीकोउक्तिहैयहसंदेहभोयदअसोइममाजहांसुषदउषदेनेच
नचांदकोचांदिनै जोतिकिये अचेत २५ इहांभीवसैमोनिरोहेदोअयिकपदभोहैइहांविभा
वकोयुक्तिकमोंकोहएनदोमामैपीकेसोहियकहाहैसोसमहूकोपरिहानिकौनहीसहैंसो

कल्प्ल
२
17

प्रसंग सों जान्यो जायतो दोषन हीं ॥ अथ निरहेतुक विरुद्ध लक्षन ॥ कवि कहत न दोनु हि हेतु तहां दोष है निरहेतु ॥ १८
सोभा हे दावि पनकी नेम नीलज अमित मे सोच्चन तजि कै सघीवालिये और ग्राम ॥ १९ ॥ उदा कुल
वधू को धर्म नहीं निवहै किंवा ग्रहर को कारज वहे ग्री कुल मे मन आसक्त रहत है किंवा वनमे अ
सुर को उपद्रव बढ़त होत है इत्यादि हेतु नहीं कह्यो तातै अनुचित लेनि द्रा भजी मृग भजी तजि देहु धा
म होत है यातै नीरस होत अर्थ कहा ॥ २० ॥ और कुल मथुरा गये तवते घर देहु नहीं कह्यो अथ
प्रसिद्ध विरुद्ध और विद्या विरुद्ध जहां प्रसिद्ध विरुद्ध है ॥ लोक मे विरुद्ध और तिन हो विरुद्ध ज अ
र्थ है ॥ अथ प्रसिद्ध विरुद्ध को उदाहरन सो गति कविपियप्रानन्द को पल लै आवति है नियगद नमो
कनक मे वरको फल ॥ २१ ॥ लोक मे जाने मो अर्थ को सो प्रसिद्ध कहावे नामाला विरुद्ध सो लोकवि
रुद्ध वरको फूल लोक नहीं जानै तहै और कवि लोगनि नैन नहीं के हू वरन्यो और केतनो वात लोक
प्रसिद्ध सो विरुद्ध है और कवि वरनै है तहां दोष नहीं सो आगे कहै गो के तुकि और सतवा मोतिनी मदि
धा वढ़त रस तेजा मोहरत नैरे हूनर पमरप अतिविरुद्ध ॥ २२ ॥ सोप को अतिविद्दता ॥ लोक मे
प्रसिद्ध नहीं और कवि निभो नहीं वरनो सो लनि है नरलाल सी के हू निकरत नोहि मन तन पुनेना
लोक सो के पुभो पुभो जिय मोहि ॥ २३ ॥ मनमथ को पंचबाण फल के बान फूल के मन चा भोरनि की क
विवरनत है ने जा आदि अस्त्र कवि निन हीं वरनै है याको अर्थ विद्या के को हेकाह मे मकामतना मे
और गति कियो है रासि कप्रियो मेहल नी के उदाहरन सबदेहु भई रगोयमई इत्यादि कविन के नो मरा
वरनै अलि न्यो मलिनो न लिना न निके कारिनो के कपोलनि मेडि नतते मै कदि नो हय घ नो के कपो

दोहा
६ हैसो विरुद्ध
२

त

लनिपैमोरानहीवैठ लोकविरुद्ध कीरीकेकपोल निनीके अरु कीभोतियोंमो ग्रथ्थकलैदोषनही ॥

ग्रथविद्यविरुद्ध सधी अभावसलैनमें प्रियसंगकि यो विहारलसैनपक्कनत्र्यथमैद्दापवने

क्रिविहार ३४ अभावसमैरतिपमैसातृविरुद्ध अपरमैनपक्कनकामसातृविरुद्ध ग्रथ ओ

गविरुद्ध फलेमहोकहेंवैदै कलेमहोगुलाबचपकमेगुजनतमेवरनदेसंपिचलोतिनाव ३७

कदेंवगुलावएकसमैमैनहो फलैंड हो कालविरोधहै ओ चंपापैभौरनहीवैवैयदकविसप्रतौ

यविरुद्ध महलसरसें भीडाकरैं कलभमतामदेकाच्यमाकोमारतवानसौगुनिमनमोदयडा

य ३८ मारवाडमेंमरोवरवरनैइहांहै सविरुद्ध कलभहाथीकेबच्चानामैमदकहैइहाअव ।

स्थाविरोध मुनिमृगकोमारैंद्दै ३ हो क्रियाविरुद्धकविततिकसतिमानतैमग्धपूलेभानुको

सोफाटेनमतोमैमागयूदैलिकैमानकोलाज्ञानिलपैकिवैठवैदिलिकेनगिविसीहद्दाहेंविका

वैदेद्दमरतिकोमालकौलालयनेपालकूवैसालरनवेगयीकहालोवणतेकोनेकरवा

लकोप्रतिमटकटककेदीलैकैलेकारिकादिकालिकासीकिलेकिवलेवादेसिकालको ३९

किलिकैवोकिलकारीरानीहा यंक हलाकरनेघनादजानि प्रमान ग्रसी इडो ग्रविपराग्रव

रमरहीप्रसैकिलकतैमानतकपोलीइहाकालोदेनेवमजेइतामेकिलकारीकियानहीसंभ

वैतानेक्रियाविरोध ओलपाकेलागवीपहभोकियासचेतनहीमेंसभवैहैलाफेलागवीलच

किलामीवासंभवैहै विहारिहाहावदनउघारैटतसफलकैलवकोयैगजसोजनिकपै

इसीसमैकोहार ३९ जादिकालमेकमलफूलैहैंतातिकालमें चंदमाकीसोभानहीओजा

नहराको

किलकनारनी
उनतजरवारमैं
तपकनोनहीतैं
सचेतनमैहोतैं

कमलकोतेवदमाओ
एकसमेमेसोमानहीं

कं.ल.
१८

हिकालमैंचंद्रमाकीसोभानहोंकमलकीसोभानहीईहांकालविशेषदरिषकासमैंश्रौदिग्रथि
क्वियोदोषकोउजयोहैकवित्तकोनविलोलाचेगुमकोनपेमपायोलानेलाजभरेविलसंतलो
यनग्रनेगनेंभारघूरभुजकौफूलावनिचलतिमरग्रौरंग्रोपउ[illegible]जतिउरजउतंगतेमति
समजोवनपवनकोफकोरआयैबादलसरसंतरलनरंगनैनोतिपग्रमलकौफलककल
कनिल्लागीकाईसीगाईहैलरकाईकदिग्रेगोते १९ जोवनकोकलकोसिउतिफलकोके
कंलाग्रनेगमीतमनमनमोहतिवधूगजतउरजउनेगा ४ः मुग्धाकेउरजउतंगग्रवस्थाविरोध॥
कविततुरेजलननैकमलकलीकुरदहरंग्रेसेउरजनिउरहोमीदोदंदषाईसीनाकदैसानसी
सवहाईवैसननकहाइनैसोलंसकाईसोकमलनलषिपाईसीस्यामाकेसलोनेतनतामेदिनदै
कमोकफिरोईविदनिमनमघकोउहाईसीसोमसलिललतैसेह्मनपा[illegible]गतसौसिमुला
मैजोवनकिलिसिलानेकोईसी ५। सोरदकमलकीसोसोभाप्यामौसिनवतीहैतामैवयसंधिक
हैंग्रवस्थाविरोधदोषजातिपश्रोदुरजनिउरहीनीदंदषाईसीईहांउसपदग्रधिकहैताकेकहेवि
नाविरोधनहींसोग्रधिककपदहैकुचनिउरहोविषेहोतहैनोग्रोसिखोरहोतसोयतोउरविसेषनदो.
जिपसंभवदूनरदहतहैरहैतकोव्याभिचारनहोविशेषनसार्थहैकविनिकियोनिरधार ५२ वि
सेषनकहिएभेदकनासोभेदजातिपरैजैसैकमलबहुतरंगकेहैकमलविषैनीलरंगकोसंभव
हैनीलरंगकोकमलहोतहैग्रोनहीभीहोतहैनीलरंगसौकमलव्यभिचारहैग्रोसेसनतालयो जा नीरे
नीलकमलल्यावौसितकमलल्यावौग्रेसोविशेषनभेदकरिवेकेलिएदीजिएहैग्रोसफेदहूय

स्यावौ सपेद संष स्यावौ अ सौ विसेषनन हीं दोनिपटु पसेषकौं सेननतासौं विभिचारनहीं हु पसेषसे
नदोहोतनहैं सुमनपराग तें सै हे अ विकांपदनहीं फलकोरजकौ सांपु परागपैजसे फूलमेंवट्ठ
नेनाहरनहीं होपु आदोनामैंकरोगमेरहैंतोनाहरहोपुनहींकछुकामनसौं होयतनहोविरुद्धदोषन
हौन सदेननअअरिवुहौनिकौं अ सबदनअर्थाग ठौरवोसेहे विरामनहु पेंमाहिनें डोरा ५२
अैसे ओरवोरभीजानिए अर्थ अनवौहतएकअर्थसों वरनिएरचैनअरथनवौनअनवौहतनहैं
दोषहै भाषतहैं परवीन ५४ सदानफलतेनाउ सदानकालेकेस सदानमंगसदेंलिअौसदान
वालेवस ५५ उदा सदानसदानएकहीएकहीनरहेकेसहुसौवाकाफूरनकियोनवीनरचनेनहीं
करौं अनवौहतनकोअर्थजहांनयोनकियोजोअसेंकहे यहलविधनोनेसदोसदानपदपदकौं
ठोरकें औरअर्थ कियोनहांदोषनहींनेसोकोमरदकौनेसफलेफलनेसोमाकृतनरदे
तेसौजसुनोकैन ५८ सिलाफ़यसोमनिमलेअैसोकहेदोषनहींहोतन रचनाकरौंकविनेघ
नतोनेवहतेंहिमानननेनोनिंदिदेहपरीसबवनेपनहैं पनहैं दुगवेनन है रसपरसेंकरवेनम
होपनहैं पनहैकविताकुरपांमबहेनिंदिजोलैललीसुगलैपूनिहैं पनहै पनितकेवनेतीदो
नजिनहिंकोपनैसानुपनौपनहैं ५७ उदाधन्यपदसोअरनकियोनोअैसोकहैतोदोषनहीं पनन
हैअलीनविलोपियसौनोहूबाचलिहपओनेचनहैं उदाहरनो अर्थकस्यौ अ षमसोहतिहैज
हे अर्थिकासोहैंतिलकअ थाधसोहतिहैजनहकनककहविसेहैनितियओवाग ५९ उमिकाअर
ठौअ मंगनाहतिलकरान अअगमैनिलहोनहैं औहछौवसपमोंकनकसोनाअचेपाअोपन

काव्य
१८

19

हैं सो अनेकार्थ में है सो इन नाम सौं पुनि क्रिया सौं होइ निमन्त्रित वाम असो पर दोष न होइ है मानो कि
यो मोहन लीला ग्रंथ को कवित तत पर केनो कवि पदनी मैं फिर सोच न कीन पद जो नृप को दिजै यौं ॥
सब देवति को हरि सेवन के मन मानन नो गोवर्धन सो गिरि लियो गुरु ज्ञान न रहै यारे ध्यान रहै सु का
हो भयो सो राग अनेक कि आउ इल सै सुनि सौं न नहि का कवि पानु तो ताकौ पद न समान रहियो
४९ कहा भयो या सौं अनवय सब कौ है असो भी उदाहरन जानिये पंडुल सु इत्यादि औरौ अर्थ
ग्यो ता सौं दोष न होइ अ व नियम स्थल में अनियम अनियम को बाद करे न नियम तिवा
है ५० चिंतामनि आभासक विपन्यर को मनि कौन नदा कि ये रहि नाय गोपन्य रवनो प्रवी
न ५१ रहो आभा महो करिमनि कियो असो नियम चाहिये न होतो चिंतामनि के औरौ भी गु
न पन्य रमै ना रहै गौ अमेत राजा के आदर सो गनो है पड नक विकदावन है आदर हो सो असो
जो निपको ततव गुन रान राविमके एहो नन विसाल तिम हूमरो प्रियम दोअ एवं इनउ रमाल परे
रहो नु महो मेरो प्रिय असो नियम कियो चाहिये न हो अनियम कियो अनिष्ट नियम सो अनिय
मे विलमैन मभो नायकै वेठो सनि धाम वर सति रूपत्र कामिनो ज महाह नो काम ५३ नमहो
नायके मु सो चाहिये एव हद मति क्रन हो न हो विह दमति क्रन न रह ज्ञानी वल्लभ इत्यादि मैं अथ अ
नियम को बार मै नियम जेहि है वार अनियम को नियम करे न हो दोष जहो विशेष अविशेष जो
करैं न हुं रस पोष ५४ आवर्तैं तवना मिहि नील सरोरुह है नैन मैं बल तिर के सहै न त सरसी हैं ये न
५५ आवृत्ति रहो जो रीका रहै सो नियम करावे है एव शाह के अर्थ में है अधिक पद है नो अर्थ

दोहा

नमहो ऐसो चाहिए ... दोष भयो

सोरठा

इहघनमैंकेरालिष्यौंअधिकपदमैंवक्ताकौंऔरिग्रंथकीविवक्षानहोइहैइहदोषहहतहैजोनाभीक
पहैहूश्रौबातासरसोवननेकौकहाबायभयोसरसोमैंकूपभोहोतहैसोसिहोहैतेगोवहैतकमले
हैनुगापालिनानैतेराहपहैपियमनवध्यालश्रानि ५८ सोसिहोहैइत्यादिनियमनहोचाहियेग्रंथ
विशेषस्थलमैश्रविशेषदेपहिरैनीलनिवोलितियरविनोलमकोहमभातिरातिमैमैनवसकौर
पियपैश्रनिसारे ५२ रातितेनाचोरनीभीकहावैश्रौग्रंथरीभीकहावैइहांश्रधेरीरातिविशेषकह्यो
चाहिएइहांविशेषकौवोरश्रविशेषकह्योसबसंपतितेसोमिलोरहैवाहूनांहैश्रौनेदोनोकोक
रविधिरच्यौकलसहकोपाने ५२ तेरोकरयहविशेषकह्योचाहिएताकीनाचजेसयुह[illegible]तैवं
श्यासीपरकापूरकोरहैमसुनिहतेरपसोवचनहर ५९ तोसौकछनदश्रैसाविशेषकह्यो
चाहिएश्रयोविशेषस्थलमैविशेषश्रविशेषस्थलमैकहेकोइसकेतिविशेषचाहरहैनहेग्रंथको
सोकोकछहितहलेष ८०कलोपिपियचयहोनसषिरहतननेकुसभारकोहकोनयरतिहैसबननम
घनमार ८१ श्रगनिशेषिकिवानहिलषिश्रसामामान्यकह्योचाहिएकरयहविशेषश्रगनहोक
ह्योचाहिएकरतेरागसुदरहश्रौरिश्रगासुदरतनहोश्रसोग्रंथभासेयानेविहारीवेकहावेमेश्रायुको
गरुवेनीपीनाथतेवदिहैजोपविहांहाथनितेपिमनहाथ ८२ वाहिनिवषिश्रसेचाहिएइहान
चभिषवननविनाकह्योपानेदोषगावेकहाएताकरेदमकेपश्रयानरामकटकमेमाविहैएकतो
दिहनुमान ८३ इहांहनुमानयहविशेषकह्योनहीचाहिएएकसुभटतहिजानश्रैसेचाहिएश्र
घमाकोछविहारीलोभलगोहरिरूपकेकरीमारजुरिजायेहोइनेवचीवीचहीलोयनवगेवलाय ॥

कवि०
२०

९४ होविकोइनवीचहोवेंचीहमेंसुखमिनहीएतनोनकहेंतोहोयहूपरनहींलगेंमोकोंवेचीमोइनवेची
ऐसोचाहिएहांकहनोहै अमानहेहोनकहोंपियजाइतवेपावससमेंपरदेसहेंहोरीझीलखिरी।
जिहांअथातरच्युनचातकबरहोपहुतेकोकिलकीनेमोनसोवनमेंसमरथसमेरअवतनिके
मेंभोन ९४ कोजेहेंहोतजिभोनकेसेकीठोरहंदकेलियेंकोहैजेहोएतनापदकीआकाछ्या
रहतिहेंग्नपदसोमिलतोयहउदाहरनहें आविरदएतनापदकीचाहरहतिहैजहांग्रंथकोचा
हरहेसोसाकोछपदकीचाहरहेसोनूनपदएननोभेदआयोकहकवलोपकेहूटोकसक्यनतिहेंको
यहआसागरेसवोसकोवहेडरपिअमिजोय ९९ इनसोकेसनोवचवचएतनाअर्थकोआकांकारह
तिहैविहेलसेहेतनहीरहेअयअपदसुकनहेंहोठिकानोतजननकोतुहातजन्याकोयवाक्यारथेर
कौहोतनहेंअपदस्कपहजोय ९० जहांस्वनकरनोनहोंसुवनकरेंओरिठोरकरेंतहांपहदोष
पदकहिएस्थानअपदकोहिएनहोस्थाननहांमुककहिएकोआंसुलोमरदकोचादनोराजन
विविधितमोद्युलोसगपियकेविरहहेनमेंचिनदेवोर ९८ विरहदहाईवाक्याथपूरोकियोचाहिए॥
हिनमेंचिनदेवोरयहअर्थयाहिलेकहीचाहिएदिनमेंचिनदेवोरअलोसगपियकेविरहअसो
वांपसमानपुनरोतेमवाक्यपूरोकरीफोरवचनलोयकोविसेषनदे नोअजोगपईहोहूसरोअर्थ
रायवेपहभेदविहांरोकेहनुवचननेयामिनीविरहविकलअजलायकिपनकोअसआसहिन
सुआनिवोलतनाय ९४ सुआनिवोलसनायाकिपनकोअसआसहिनअसोचाहिएतिवोल
कोअर्थतेवोलजेविराहनीनेकहेंसोहतनगोपिललारिकोगलमानवकसहोयमलोममेअभिमा

कौनेहैं कोमीनरहते पदकी आकांक्षा रहतहै ३ से

इनतेकैसे नीववचे यस्या कांक्षा रहती है

-२

टिका नो प्रोफ केस कोकी पे विरह हिसकी कार्य दरोकी यो केयहिते मैं बीते हैं वीरस वो धन कहेबो दोष ०

हो

तिनको तनको सरजे

किसको ... तक रतीनकी ... जगार्य ... केरह ... य पद ...

हान

मस्तक वेना
गीमतहोमर

रकौ सषि चलदीलनलाय २० दीलन लाय सषि चल ऐसो चाहिए वो मनली कौ हार सो मान वग्र थल जा
बंजन कग्रथ ग्रीलग्र करुभ स्यो किद्रदि चहन मारन कौन संकाय ग्रैसे उद्धत परानदैतुरतन हौइ
हिजाय २१ रहाग्र सौलु ग्रर्थ भासै है ग्रयसहचर पिनै भेल बुरकौ संगसहचर भिन्न ग्रभेद २२ क
विनपान विन ग्रानन क मान विनदान निभौ रागविन तान निदिवस विन धूप है जैवविनारर
नैसें करविताधरजैसे परविनापछी जैसे नारी विन हूप है फासी विन वरागोसो विनवटपारजै
सें राजो विन रीतिग्रहका जो मुषचूपदै विनाधन दानी विन सूरता कू पाजै सें पानी विन कूपसाव
धानी विन भपदै २३ सावधानी विनाराजा को हीनता कहत के गेसो फासी विन इसादि निंद
लोग कहने न चाहिए सहचर कहिए संगी सो भिन्न ग्रवरित रहै के हेतान भेसो हन दैव दसौ विद्या सो
हीन राजगनि को सोह तिलाजविन कुल तिय लसै सलाज २४ गनिका सहचर ग्र को न है कौ वि
ग्रियां चरन धरनविता कर नैनौ दसहान न सो रसुवरन कौ हुदनापि रै कविविभचारी चोर २५ इहां चो
र विभिचारी ग्रको न है ग्रय ग्रकासिन विरुद्ध सुप्रकासिन जु विरुद्ध है भासे ग्रर्थ विरुद्ध भासत क म
सौं न हि ग्ररथा विदि ग्रजु कन हिसुप २६ नेगजु हितौ सोरूपानि भाजे भूपसमाज के कहत बाजनो
गवो चलागालि को राज २७ चलारा जिके राज को भोगया सरी रहौ न ही संभवे यह विरुद्ध ग्रर्थ कविनै
प्रकासिनकियाग्र सतप्रगर्थ शह दोष हैसह सो निकरै हे यहग्र र्थलो निकरे है एन नावी चते रो वक
सीदा सुन्दर वसी रहिग्रा ग्रायुतो सतराजा भूपरा ग्र बके रकोह कोपाय २८ ग्रया दाहा मैं न मसोलु दसी
जानत दो यह विरुद्ध ग्रर्थ भासै है राजा जो तन तपुर्ब कै न हो चलै पर इग्रौ ली बौ दे हेत विरुद्ध ग्रर्थ लो निक

श्लोककर्ता

सौगंध्यौ नरदसन द्युति पीक की लीक यो लख्यौ लौं लसै सो धरकानि दियौ लल चौ हैं से नैन । लजौ हैं
सैनैन उ गौनि रकौन वरूप कि पार न लागी हे गानन नावत कै हो न परसि आनादि रूप दियौ नरेष
लालन नाहीं कौ भाग जदाहा व सौरमिकै बरंग पियौ ७९ इहां ग्रंथकरन नैनायमे नायिका कौ
रूप भासत है अ सौ बेरहो बन द्यौ भा वाम्म वशा जाह्नदई मुदि जनम देचले देसत मजादि ग्रंथविचि
श्रुतिकसो टनि चाहु ललौनिकाम पूकोस कविषानि लोचननसौ चिग्लावसौ सोहनिघम्षदानि ८०
सोघउठौ गुलाव सौ लोचन नसौ चश्रसौ विधि वादि लजा होरा कौ हार नाभी ताहैं होय सो ललनि का
मोतीकौ जाल लति कानाकौ नाम मूकिका हार कै ठकै वी सनैनासू चकैठ दूरा वालेचे दनलाय नि
हापचलितहि वो लन नंद लाल ८१ नहाय के चंदन लावैहै चहू दिसदम कै दामिनी वालन सोइअ
केहै तिय वेवी अमुलातिपियं करत विसास सनेह ८२ सनेह कै कै विसासनते है असो चाहियते हा
उलटो कह्यो विसासकै सनेह करत है भाजनकामदातिनि किया षायकै देव पूजनसो नाकि यो ऐ
सैजानिपंथ्रप अवाद अजनक नहीं विसेषन है ना है अलिन ग्रंथ विरहत दे असुवाद अजुक को भाव
नकविकुलसहू ८३ विषमो दर चषरूद्रके ससिवाड वैसगवास मीन मारै अवलानि को जाकै पियत
हिपाम ८४ इहां प्रस्तन ग्रंथ विरहिनी जो अवलानि कौ मीत मारै न दाच द्रमा को विसेषन कह्यो विष
सोदर आदि अनुप्रास कै हिय कहनो सो अजन कहै औ पृथीन को सी चैद इत्यादि कहनो जो गयो ॥
जो निरूपजनगैरसंदानिरग निविषयविहीन अतनु तापवनिनानिकोदहरोकरो सुषलीन ८५
जो निरूपानिरग निविषयविहीन कहि कैं अतनुता पहरो पहकह्यो सो अजुक मोहनमूरतिकहनो

॥छंद॥

जोगपयो ॥ अथ लसंपुनस्त्री हा तनवरनिनजैवरवै पुनिजहाँ मकपुनवीहातहैं तहाँ ॥ ९६ ॥ पुरपतिदेव
नजगतमेलदै कलक सुनारी हय सावोहा साकहे सहानादिहनिवारे ॥ ९ ॥ पुरपतिकोदेषत
कलंक लागतहै यह वानिके छोड़ि दियो फेरि वाहीको ग्रहन कियो सदा नाहिं हुनिवारिकोन
कामकोरूपहै जो सिरभाग नहोय वहै भये पुन सोल सोरेक नदेमवको ॥ ९९ ॥ जो सिर भागन
होयतो रूप नकमाहै यह वरनि केको ग्राफ फेरि ग्रहन कियो वह भये ॥ अथ समानिषेध ॥ अथ सकेपले
अथ दोषक पेषोष अथ नजहा अ पुष्ठार यें दह षनवितन व्यासमे दोषईङ ॥ मतिमानकरेछन
कोएक हु सोलये सगक मलाह हया कपिनिदा स्तुतिक मकहै अनयाय्य दत रहे अपिस डे
रेननपतिक कालपन रूजितोदेत कल पनकपुनहक ॥ थ ॥ तिपकन च्युतसमसतिके ज्ञादे रुपमा
नकरू ॥ ९९ ॥ यावइनिरुहा विततसह मानको प्रिव को उपकारवहो करहेता अधिकपद दोषको
नहोय कुसुमपरागइहा कुसुमको परागको अथ नान्यानवहो दोषकोतान भयो इहा नातेवग्र
छोकियो विततव्या सम इङ दोषिमानको छिदनवदोषको ज्ञान भयो न होन्हरनेजा न्योजायसोग्र
धिकपद नहं ग्रो विलंव सो जा न्योजा यसो अ उष्णपं एत नो भेद विततकी बोरविस्तभी कहे दोष
नहीं वरेपाते अथ दोषकमला सुंदरी स्त्री को नाम है पार्वती की स्तुति केए सो स्तुति कविनिदाक
रैकि वानिदाकरे स्तुतिकरे न हो वाद हताइ हो निंदा करिताही कोउत्कर्षके अर्थ मोतिनें हुतेउप
मानकमिये सो वाहू ॥ कुचन कुमपनेहक मना हिंग्राम दोजे किदमहविनेवाजानेमाव ग्राम
लीलोनु यायिकविनतसमय सादिम ॥ ७ ॥ निसाकर किरनन भावनं नोहि कारननिरदेत ॥ ८ ॥

कल्प
२२

ज्ञानजंमुना सहावनं सुप्रसिद्ध विरुद्ध १ विरुद्ध जगमगुणाकदिपियनिकरइं विद्याविरुद्ध १
रजनी श्रुथकी समनानन आयेसमइंडेहुमहंत पदिलेवडुनपेदाकुसिकोनादसेसो मांगियोके
ग्रामसांगियानवदनकयोलोनेतउछूमेनेरवा जानेकुमादिपदकविनामें श्रावेनो अर्थ ग्राम॥
निसाकरकिरननभावनेदोपुष्पकोउसिके होकीयहमेदेदहज्ञानजपुनानसुहावनइहो
श्रीहुमबवसुहरनहे यह देहनहोकेयाश्रहदावाकीजलमेपोढिसानवनकारनेशासविरु
देवपपंकजयुषेसोपुदेवाकयत्रनदोहान ११ हपनेवजमासवरपकंघनेसनियमकारत्रनिय
म १२ करमेनावमहृपनिथलत्रनियमकोनियम १३ करैपुष्पचंदनत्रनिसविसमपमादिया
विशेष १४ जहांहदरानिनारिमनसुनद्यनियत्राविशेषववरजुविशेष १५ देखहायदेखिवसहा
नमिय॥१६ एकइंनवडेसहसोवाकसनकियोयानेत्रनवोहनलहमहांपर्ते श्रसानियमचा
दियनहांहृपहत्रनियमकयोहरननारहहोकोईश्रापनीनियामाकदनहेहांहमसनको
सानहोयहविशेषकयोचाहिएंवदायदेवेहोहायपदविशेषनहोकयोचाहिएत्रोग
कयोचाहिएंहायसरदहें श्रोगेत्रनहोत्र मेहोदायनिनेराषैप्यारोहायानीविकायदोश्या
देकेपसाकाोड १८ सजदवादकहो केसे विनिहोदिनत्रपरमुक १९ जहांसारपुरनकोपुर
नेत्रननवनेमानइयेटेनजिनाहसेगाविदूतोचितहितरपप्रथमनाहकरवेत्रसहालागेत्रमलो
ले १९ लपमेहचरहपित्र १४ सगोत्रमिलाहजनसकवनिजगुनलसने रूपकासिनजविरुद्ध
२० रूपमुमैजीनिसरवदुरचहन॥१५ साकोकयनेकेसावितदेदिनरहो विरहको

कीउक्तिनमेंविनाप्रतापग्रंथकीचाहरहैहैयातेंसाकोकंजदोषरनकरिबेकीगेरनदोनहीकौंग्रं
यकेरेविद्हौंगेइहाईप्ररनकरनोयोयोग्रामिसपहकपविधिप्रगजनक २१ हैयुककल्पायकाभिकरन
दातिवनिट्प्रनुवादप्रजनक २२ जहांप्रत्युनिविरुद्धभनिमेरउष्ठकोंहतेंउगमवलोकसंघार
नेनमकपुनः श्लोकतत २३ सवनेंनगवरनेनगूनमतिकरोंएनदीपनदूरासाचकहतिसवकां।
ललनजसेकेपनोहिहरिकविकस्योसवैन्यागिगोविंदभज २३ विधिरतिउबहरिवमेउग्रआदि।
केप्रनुवादकहियेकथनसोअनुतजाहोयग्रंथकोत्यागकरेनाहींग्रंथकोवनेनकरेसोमपकप्र
नः श्लोकतननदोसाचकहतनिपनतोहूचाहिएफगसोकावकियोसवयाएनमतिकरेग्रपदयुक्त
सोभोरहै रतिहरिचरणारामहतकविवल्लभग्रंथदोषनिर्णयः ग्रथसाकांतरसदोषसवैपा
नावधरेसनकोवानिचारिकोयारेहकोनहोदोषकहावेजोग्रनुभावविभावइनादिहिहोनजेहो
ग्रमसानहिभावेवाधकहूमतिकूलविभावादिग्रोदिनहोकविकोसहावेग्रोरिहदोषनग्रग्र
निकेसतोग्रथकेहपनहोकवित्रावे २ सकोनामनदोषमिपग्रोरसवाचकशृंगारवीरइत्यादि
नामनहीथतिप्रश्रृंगारग्रादिजहेंथनिमेंनिकोरतहोगुनरसत्र्यारसकोकहेग्रोश्रृंगारग्रादि
कोकहतोदोषसुरसरसिकरत्यादिमेदोषनहोइहाउनपकोकहतहेसवयामेंनामिल्यावई
नेदिननेवहजासोमिलाप्रभयोहगलीकोवीबोदिवाघरहीकसमेरसमेप्रभईनग्रकादकोः
लीकोजानिपहोसमयोरतिरंगकोहरगयोसवसंगग्रलीकोमोदूनजाउइजाइबारनच्छद
नन्योकिलिकाकदलीकोरहहोरसकोग्रंथग्रनरागाइहांरतिकोडायातेंदोषनहीश्रृंगारको

अयेजहांभूषनवसनपहिरिबेनोहोयतहांदोषनहीं भगवानमेंरतिहोइ२ तहांस्थाईकहैदोषनहीं
होरतिप्रीतिकौंकहतिहैं शृंगारकोस्थाईभावमधुरारतिहै जोसंभोगकोचाहैसोमधुरारतिसो
रहांनहींहै सभायकोसहमारोबनायोग्रंथहै तहांरसध्वनिभावध्वनिमेंयहबातनिकही
हैविकुरोगिलेपियकोनियहिभयोजेरसमसबभांतिकुजांनमोदिशृंगारभोअपिकप्रीतिउ
फनानिरसदासप्राश्रृंगारनहींकह्योचाहिएजोरसशृंगारआदिकोकहैतोदोषश्रौसेपावि
षकोंबोजेकौगुनकौदृषकौरागकोकहैतोदोषनहींश्रौशृंगाररसकोकहैतौदोषश्रुतिभूषन
अनेकार्थहमारोकियोनहीकोशृंगाररसबरन रसभेदरसप्रकृमैंइ२ लौंगषसुनैपफिसैसं
वारीकेनामकहैदोषग्रपिचेवतातिषकोपियाभईजुलाजसुप्रगप्रीतिभईप्रसरीतिसोवादग्राग्र
षिकउमेगरसुषपेरिरहोकिवामुकुलिननैनभएलाजमोंश्रेसोकह्योचाहिएनहोकारजको
नहोयनहोदोषनहींमकुलिननेनहोतोकाजैलाजकारनयातेदोषनहींरहोलाजसेवारीतो
कौनामकह्योयातेदोषयाहीनरहप्रीतिस्याईताकोप्रतीतिहोतोजोपतिमेंप्रीतिबसेहेतोमिले
हैनामकह्योसोदोषयोजहांकहेंसोअनुभावविभावकोव्यक्तहोयसोफननहींज्ञानिपरैतहोदो
षश्रथकहेसोअनुभावकोव्यकतिविहासजनतापियनिमिषिफूलचलावनिहारीतिरछीचित
वनिबनेहगकामवषग्रतहोतेषतिरछोचितवनिजामेंरहेसोतिरछोचितवनिहगतिरछी
चितवनिबंतदगकेविशेषनकमैनापकाकेविशेषनकियेतिरकोचितवेहश्रसोनहींफू
लचलावनेतिरछोचितवनिअनुभावहैसोजहांनहींकह्योनायिकाविभावनासोजहांकहि

रसकेदोषभयो

श्रृंगारकेदोषभयो

प्रीतिस्थाईताकोनामकहेकैतेदोस

पियकेसगकेरहेते लतहैयेरूश्रथा

अनुभाव कौ जानिबौ यह है कह्यौ कल्पना कौ विन्न आली सरगजा तलप लोचनन पातके सखि केरंगा
तसो है स्याम सारी है लाल कर चरन मे लाल सो मंडल वो है गोरे है ओर फूल को फेकनि वहां हिना
गो है सुध कोस सूप वो है वोकि न चकोर है यो सह्यौ मैसो चपर चकवा को मारो है मंद हास वारो मुख
कुटिल कटाक्ष वारो यो री वैस वारो लिपि री के वचन वारो है ५ इहां भी फूल को फेकनि हारो आदि
अनुभाव सो विभाव को विसेषन कियो नु ताअनुभाव कौ न ही कियो फल वेलाव है प्रेम सनदो क
[illegible] ओर कल्यान इति पियानिय पदि [illegible] मैन वतो निहारो इक मोद चरो वनि हारो ६
इहां भी अनुभाव विभाव को विसेषन है गाढ नील मनि कल्यान है तिमे सानाको भी नाम है अथ के
ह सो विभाव को वक्तानो विहारी गनि नीमा निवैत रहे कै तहूं यकै ते समान पसुषि पतिय आम
लो परे रहो तन प्रान ७ इहां नाविपक्षा को अकि होय सधो सो ना नायिका करुन रस को आलंबन वि
भाव जो प्रोषित पतिका कौ उकि सषी सौ तो सृंगार को विभाव प्रकरन सों जानो जात यषेलो निग
दिव है लो नि वै हि नारे कपाल वह रानि प्रेम सु आप पर कैति आ कि न कछु न छनाय छाप जात ८
इहां भी करुन रस को विभाव भासे है प्रकरन करि सृंगार को विभाव जानि परे है कैति आ पद सो
परकहे कल्पना सा फुन ही जानि परे अप प्रतिकूल विभाव है ग्रहन पिय न रोविन नी केर आ
यो है निहारि यो रोदिन को जीवनो मान करे मति नारि ९ यह सृंगार विषै सृंगार को प्रतिकूल
मो सानता को विभाव को उदाहरन है इहां जीवन को अलातरूप प्रकासन सो अभयो विभाव को
अ यं जो रस कौ विशेषक है उपजा वै सो विभाव सो निर्वेद संचारी भयो आदि पद सो निर्वेद संचा

रोभी संमारकों प्रति कूलज्ञानि पं अमनपरो यैसें भेद है अमनपराश्र में का भरेन चरी जीविते
सपद सों सं गारयुक्त होन है २ दो मो वनको अल्पन हपविभावना सों यातें अथ दोष भी नदोअ
थप्रबंधदोष भूअ कोइ मेक थनअकोउको अर्थ अप्रकरनको उनाम क प्रकरनको आगिनरहै
के प्रकरनमें श्रीमिनरद को वर्नन करै सो अकांड प्रक थनवेनी संवरन नाटक में हू ता प्राक
में अनेक को संहार भ एउ जो थनको भानुमती सहित विहार वर्ननन हो यह दोष अयथ अको
[illegible] केरे टको अर्थ को टनों उदो को उदे दनों जानि पंज हो सो वननन करनो आवश्यक दो जो वर्नन
को उद्वेको अवरनन दोनन हो को उदे प श्रोरि अप्रस्तुत वर्ननें सो अकांड छेद वीरचरित्र नाटक मे
श्रीराम जो सो परसुराम सों जुद्ध उपस्थित भयो है तहां श्रीराम लोक भी में कंकन छोडवे जात
होय वो तो मे यावान का है दोअ नाग [illegible] यह दोष अगी को विशेष करिन ही वर्नने अगाअ
प्रधाननता को विसारि वर्ननें सो अगविसार जैसे प्रसंग को सुधाजा को नहीं वरनों [illegible] सं
वैनैता यिका को प्रवेस क [illegible] नी को सिषनष वरनें अप्र [illegible] दोष प्र [illegible] को
आलेवना विभावना को आरि [illegible] वरनें सो महा [illegible] दिया आदि [illegible] विषधी
रोरान आदि मे है [illegible] आदि [illegible] आदिवी [illegible] प्रधानथी।
रोरान महा [illegible] माना न अविकल्पन श्रीरामचंद्रादि [illegible] प्रधान धीरोदात्त [illegible] प्रथा
नधीरललितन मांत प्रधान धीरसांत [illegible] आदि [illegible] आदि [illegible] होने सो नेवर
नेनो दोष श्रीराम जो मदाम्र [illegible] को [illegible] आदि [illegible] दोष [illegible] जानि प उत्तम देव

नायिका को शृंगाररस वर्णनै तो दोष जैसे कुमारकाव्य के आठवो सर्ग मैं पार्वती शिव की रति वरनी है
सो दोष औ श्रीनंदनंदन को शृंगाररस वर्नै दोष नहीं औ भागवत मैं पंचाध्याई के अंत मैं कह्यो
है अ[illegible] दोष जाति कथिया मैं विभाव अनुभाव सात्विक संचारी कहि वा को लक्षन उदाहर
न नहीं दिये कैसो विभावादिक कहनै नहीं थो कहै तो उदाहरन देने थे उदाहरन नहीं दिये
तो कोई बात कहनै को आरंभ करै ना को समाप्ति नहीं होय औ मैं ही कछु कहि वलागै न दोष को
है दोष लक्षन उदाहरन नहीं कि यों बीच मैं हाव कहि वलगे यह के दोष है हाव स्त्री को विलास
है न है नायिका कहीन हो कहनै थे विभावादिक आगे कहै अकांड प्रकथन औ विना प्रक
रन कह्यो याते अ[illegible] दोष जैसे कुमारकाव्य मैं रति विलाप मैं नार वारक हू न वसं
को मकाम न तहां यह दोष अ[illegible] को विस्मृति जो रस को उपकार कन हीं करै सो अनेग क
हावे ना को जहां कहनो होय सो अनेग अभिधान अनेग को अभिधान कहिये कहनो यह अर्थ
सवैया सांवरी तो हि मूढ़ा वनी मैं लसै वौरिन सो फूल वारिन सो यह सारी दिपन्न री तीरी कि
ना[illegible] नाति नैई कै लै तो ई मैं रोव रैने हूं न होइ महीं निज नाह विलोकन सौं चाहि को चित मैं उर
कौं [illegible] रे को [illegible] चली मैं रिया नै कि वार उदाहरन औ यह ९ द्विजे सवन नैन मैं कोइ शाह
र मैं को अनुपयोगी कह्यो यातै यह दोष [illegible] को कारन है अनुचित वनै न हो
न जहै रस प्रधान सो व वा य के कीजिए भाषत सब सु जान ११ विहारी औ सिसेवे है सबै ह
सो निगावति भरोइ कहत न है विहू ल थोपि रे क्यों देवर के आंह १२ देवर [illegible] अनुचित

याकोग्रामियत्र्यर्थकियोहै तामेंदोषनहींकहै विहिडोरे गगननैं पगीपरीसीहृदियरीधायपियेवीच
हैंकरीपरीरसलहै २२ इहांवीचहींधायपयरीयह अनुचितहूहै अनुचितकोअर्थजोकहिवेजो
ग्यनहोकिंवाविरुद्धमतिकृतहूहै रसिकप्रियामेंनायिकाकोवीररसआदिवनने अनुचितअर्थमें
मानिए अथअनुचितार्थदोषजाति १ सुओरिसमसानतैंन्यूनअधिकनादोषउपमामेंदोकि
विकहैं देहतनरसकोपोष २४ अथउपमामेंजातितैन्यूननाकरंगोधाविधिलैयन्नुषकोधिकमरक
रवालसत्रुनिकौसंग्राममेंमारनमोंचंडाल २५ इहांराजाकीस्तुतिकरतेचंडालकोउपमादीनीर
हीजातिकउपमादोषतेरीच्छविसोवसमयोभावैकछुनआनंछ्वाडिधामनोमनाफिरैंपियअ
लकैंमाजान २६ इहांभीअलकैजातिकमिन्यूनतासातरसआदिमेंदोषनहीं अथप्रमाणतैन्यून
नाविपटविननासालमैंविधुज्योंचूरकसूपचरावोयिटलमीनलसैकहूनसवैकाविफूर २७
इहांप्रमाणतैन्यूनता अथउपमामेंजातितैअधिकताघटहू अप्रवलवानदहूदिगजसोतहूजातिअथ
उपमामेंप्रमानतैंअधिकताफटिकअद्रिकेसिषरसेयाकेटस्तनवषानि २८ जहांअसंभवहोतहै
सुमनाकोत्यअभावभिन्नलिंगअरुवचनतहैदोषकहैकविराव २९ अथअसंभवतेंउपमादो
षवरननीरकोधामसोतेरीकछुविकोभास अथअसा हूधूपतैलोचनतेअयवटलेकटसेलाषिमनहो
नेइलाम ३० जोजहांउपमानउपमेयभावभासैनहांरूपकअलंकारहोयतहांनाएहूषनहो
नेहैलकनभीअमेदहै उपमानउपमेयकोअमेदकिंवानाद्रूपसोरूपकअसाहष्पकोउदाहर
नसाहित्यदर्पनमेंउपमादोषमेंरूपककोदियाहैनाकीभाषाकावइडमेंमणतहांअथसिरीसी

विलास विलास में जो है अर्थ में भ्रमि कि वन ... को प्रसिद्ध उपमा

सो उपमानोपमेय पनहीं है भये याते रूपक में अलंकार रूप कविन पाटल विमल को कनद के सदल

दोऊ कलि प्रवाल अरुनी होत पीवा लसमे का भाके मधु मदिरा उवाकी आभा कि योदवृ धुनी भार

नी पुंगि लीपुन सकाल में काम के वेस कि धौं नासिका उपबै आभावलन मेका तहनी के मुख ना

ल में सितासित लोचन मेलो हित लकी रकि धौं वे ये जुग मीन लाल रेसम के जाल में २२ इहां नासि

का सो उदुरप सोरूप क कियो उपमानोपमेय भाव नहीं आं को लागि याते इहां रूपक में अलंकार

ने दोष फटिक ... दूरि सम मान तुलना अधिक को उदाहरन हिया रे कुच तेरे अग सह नदे इहां कु

च की उपमा केउ ककी वीलकी तालफल की चाही एनादी तीन उपमा में अधिकता दोष आवे विहा

री कुच गिरि च ढि अत थकित हों दरसादि काव ... अव नीग्र सा हम उपमानाधिक आदि न ही वि

चारन ... है कुच गोरता उच्चता इत्यादि गुन लक्के रूप ककरने हैं सा इनके मत मे दोष इहां है अधि

च लि यात कल्प लता सो पीय ... सरतरु सौं अधि वचन सो उपमा में दोष ... ने

... इंदीवर सो नेन नहीं यो कोल खो विहारि २२ इहां इंदीवर से चाहि ए अथ उपमा को भंग

वाचन दोष स्त्री मान श्रृंगार जिमि तिय संग करन विहार सो वन उकका वन नहीं दिल्ला गत च

लि के सिया रि २२ इहां जिमि उपमा वाचक है ... इन्में का वाचक नहीं जो उपमा कि न

अर्थ को संकेत नृनाम कहे कहे रिक रेने होत पनाँ दे वा भीतस सों हमिन मैं न म को रवे पहार इहें व जाइ व

उनको कैसें जनु परउपकार रस दिन सोउ रूपके उपकार ह रोमें न हीं आ योजइ है यह संभाव

नारि

दूषक नायक

अर्थात

वक्र०

२६

नाकरिएहैं ताकोअर्थांतरसों समर्थन करनों दोषसंभावनाजातीहैं तियकेनैननिमेव सें किधौं कामकेवानविधिकी रचना कोकहैं जलमैं धरै हमान २५ कामकेवानकी [illegible]तिउ वेकिनेअर्थहैं ताकोअर्थांतरसों समर्थन [illegible]चितलौ निवरनमें जमकएक चरनमें नहीं निवहैं सोभी दोषलसैं नैदिनो सीसघोवालनहैं नीनोमेनहम शीपियकोलषै हीरहारकुचहीरहू २८ औ सोजमक किनहू कियों औजोउपक्रमलियासोनिव द्योनहीं श्रुतिभूषनसदन० सु० मोटि २। नीरर भवन० लष० लोक। सुष नीरर गेहर सना० कोची। जीभर औगिसदन० रपु। जलर लोहि भाजन० गोपद० पात्र२ सु० कानन० जानहु वन। दोर नदी। वादिनो० फोजर नेदिनो० गेगा। अपारवर लषि० अस्तु भरुपापरैं निष्फलकर मर मृगयाहि कथ अह० हैं० विपत्ति ५ फल हैं अनिहजोजमकमेवस ६ सोभीव्यसन० सैनोसमति २। यहदूमारोकियाश्रुतिभूषनदेहैं मीमें होरनामवज्रकोवज्रवाची शब्द मदहीराकोनाम औ महादेव औ सर्पदिवाविटपकेविटपमेलसें वाहू नगपानिकाननकेको नूनमहींवैठीतियसुषदानि २८ दूहो द्वितीयचनथैचरनमेंजमकथे ग्र श्रुतिभूषणविटप० कहैं विस्तार। पेड वृक्ष० साषा पल्लव ४ काननपाहिलैकरौं लषी सुनंदाएकमैं अंगसुनंदा रंग औवें धंनवि हूरैं पियकेसंग २९ दूहा भी चतुर्थ चरनमें श्रुतिभू षनसवैयानें रकोनरद न १ औ सुहस नितरना हि गोविंदकविहरु चारें गाहू निकेअर्थिकामि निकोंरअवसावदं औ नंद १ वक्सरथारें जोगु पजेसरदें माहि३ औ विसुनंदा गोरोचन १ अंगनार दारें पारु२र १ व्याकरन० है० विसतें० पुनिगेय १ कु० दर्पन औ मादे० उचारें ३ संनिधिहै मत्पक। नजी

हो

नही

स्थि

दोहा

दोहा

२६

करसंपदित २ देवरसंहै विबुधै० गनभूषित २ ख्यातर प्रसिद्ध० कदैस आवैप० रूपघत । प्रेमसंहर
हवेधुनः २ न्यादि अथ उपमानको अधिकपद दोष लसैरसाधर सुतासौ संभुभूतिसि न अगसदनल
हरस्यौ वीन सौलिये हूँ धनुसंग ३१ चन्द्रथँ चरन अधिकपदकौ है कौ उपमान नहीं रसानामभूमि।
कौरसाधर पर्वतहमारो कियो कनौ भरनभूमि १ भरुरु अचला २ सुजानि० रूअनेतनाथ धरनी पर
मा ३ धरित्री ४ धरा ५ फेतिक द्दिविरा ६ सवरनीकोनी ७ अहविश्वंभरा ११ सु० ज्मा १२ कास्यपि १३
आक्षिति १४ वसुधा १५ औरसर्वसहा १६ सु० उर्वी ० लघ० वसुमति १९ कद्दिमेदिनी १९ रूपथ्वी
२० सुकवि० पृथिवी २१ अगि० वसुंधर २२ हिंद्ध २३ मा २४ सुमही २५ गोत्रा २६ अवनि २७ भूत
धात्रि २८ विपुला २९ सलेद्दि ३० अथ उपमामै न्यूनपद राजनतविष्णु राधासहित धरें पीतपट गातेजे
सैविपुराधासहित अति सोभा उपजात ३१ इहां पीतपटकौ उपमान नहीं आई पतनी न्यूनतौ अथ उप
मामैं कालभेद सौ दोष सो हन भो षजभ्य पभीलीन विबुध समाज अवर्है मे उडगन सहित मो ष्टर
नहिजराज ३४ इन नहि जराज की सोभा होय न दो बुकौ है अवभी होति दैन मैं न्न विधि हि स्सादिम
ध ... सोचादिय अथ विफल चनन आससो अउघाय दोष सारी सरस सवाकिकरि वहिर गोहूहेंगो
मनिरसकौ रनरन ककरिव दिहरव दवलिसंग ३५ रन रनककौ अघे उनके हरहा अन्नुपासमोच
मन्कृत अथ पेनहीं गुहभ मेयो याते अघहार्ध अघ समासो क्रि विवे अघे पुनरु क्रिसा घकलायरकेनि
साकुमरिनिविनहूँ अथ यथा नपत्ने नेन लिषितेलेनि वधूसेमाय ३६ इहांसाथकलायरघरस्मावधूको

27

का.प्र.
२१

अनीतिपै मिवधूपदगुनहूकै ॥ अथ अनुप्रासविषैं प्रसिद्धविरुद्धनाम कै सम्यास को निरूपिन सो
करि भास हासाव लासद्लास जुनरमैं गने समुझास १७ गने सकौ रास क्रीड़ा कौ ईश्वानमैं काव्य मैं
नहीं कहै जो कोई सम्बकरै पोव सकार दोष कहै नो कौ प्रकार कौं न हीं कहे है ता कहै जे पंच प्र
काम मैं दोषन कै ठौ प्रकार इन हीं मैं पदोष सब निकर नहै निरधार १८ श्री मिजानि लीजिये अति हरि
चरनदास मत तेहदल विवल भेर सार्थ दोष निर्णयः ४ कविवल्लभ मैं ग्रंथ कौ कीनौं चतुर्वी दैन
मम्मट कृति पार्वीन सों करि है वादसवैत १ भाषा ग्रंथन कौ कछू नहिं गननाकी चाह हुउ तज
हां पहारस वामन बाहन प्याहूत ग्रंथ मम्मट के छपै कहूं पद वाक्य हू अर्थ दोष को लक्षन भिन्न
भिन्न पद पै करि मिति नायन हीं नयार पांच मैं इन वाक्य दोष पद मिलैं नहीं शब्दादि क माहिं यानित्य
दोष लक्षन विचारि कै पलै खिजाहिं यं अनन्य जनहिं परवाक्य महिं अमशुल निहना थैं तज
कौ निहहना राध्य असमर्थ माहिं भेद कीनौं कौ विकलल नल ज ३ नित्य दो षसो जा गुन न दो हो य ज्यों अ
सोलक्षन की निपुनता अनुकरन मैं सब दोष गुन होत है यातें श्री रतिकर नां छपै अनुवित्तार्थ को
भेद कह्यो मति सो कवि कोज रलज्ञा व्यंजक कै पाज अर्थ माहिं पकै दो ज न्यून पद कह्यो न मिदिन
वाक्य मैं भेद कीनौं कद अनित्य सतोर जो नियम कहो कौ दोष हो य हृदय कहि अपद मन क सो भेदहु
रसिक निसमा म गुन राज मद सा नेह उलि मैं न्यून गुन अधिक जु पद गुन कौं न तहं ५ उदरकन्य
नीजो रपै कौ ऊन हिं न पन्याय जो पटै सा उपमहीं ग्रैसो अलपल षाय ५ इहां ज्ञानि भासै है या

२

नकल

२

काप्र
२१

नैं विरुद्ध मति कृत न दीं। ग्रैसें भी संभवै है। ग्रमंगल वचन कौ तौ प्रकासित विरुद्ध सौं मिले है दोहा दोष
सै य गुन है होन है। लखि ग्रनहू तिके मांहि त्यों मत्तो क्ति प्रलाप मैं सम्रवीच कैयों नाहि। मत्तो कि ग्रादि
ग्रनु करन मैं ग्रनभूंन है। होय गो मत्तो मैं ग्रनुपात रदे है कै हृथो ग्रैसें जानिए॥ पत्त नातों इस लिख्यो ग्रौ
जो ग्रह मांरे ग्रै यह नैं ग्रौ वि त्रिग्रर्थ मैं वीच सांरे ग्रग्रग्र य रसलहम भैने है दे ह कृपै ग्रहाह रन ग्र समर्थ मा
हि मोहि दियो क लेस है। ग्रसंभ ग्रौ गे पद जोगा मिलत पद वाक्य ग्रवीर मै है। पद संयुहि मे होत ल
वो क्लिष्ट यें दोष ग्रय पद वाक्य दुमें है होन न न हां ज लिये नभेद क यग्रुनि सुमनवाय को गोयिये
[illegible] दलानि सुवा करहि मिल सत ग्रनि सौंह ध्यान सो ग्रौ रिवा ग्रप्रतीत ज्ञाना
ग्रसत्त २ उदाहरन। इतिपदि लें पद दोष कहे नें लगे एक सबद में जहां दो षन हो ग्रसमर्थ को उदाहरन
दियो क लेसन हा कौ दोहा सेवा ह्री नैं दोत व सकदा मे है सनरे सह रिर हैं सग्रेनो नितें पावे कहां को
लेस ८ ग्रसमर्थ दोष दो पद ग्रर्थ कै सबद मैं होत है। एक सबद दोय ग्रर्थ को हाय पद विभाग कै रैविना
हू सरा ग्रर्थ को कहै नाहे ग्रर्थ दीजि पन हो ता को सकिन होय है ना सबद दोय ग्रर्थ को है पै जान वा
ला कौन हीं कहे है किन हूक है यान दींग्रा तै जो भी यह हितजा ग्रह्मा रिविषैं गमनार्थ को कहत है ग्रैसें क
लेस सबद दोय ग्रर्थ कौ न हीं कनाम नलना कौ लेस ग्रैसो पद विभाग कि यें होन है सो ग्रनुकल रहा ज
लक न कौ य व हित प्रतीत हो त है एक का कर सो कनाम नलना को जान नीं इहां समास मे क्लिष्ट भयो
इस कहू लिवा स्थान मैं से पदिवा स्थान मे दियो है। ग्रसमर्थ तिग्रसमर्थ उदाहरन दियो है दोहा तातपत चौत

विरकरके

प्रीतम कुलदीपक मिलत विरह उंपंतन काल ॥ यामें तकै दोषा भये तहै ॥ सोमिलत पद स्त्रों तहै तहै रसे त्रुटित है जा का के हैं दोउ कापमपम चरणा सोपद विरह जे जनमें ॥ चोउ सोयद पद पिछ लेचर न को प्रथम चरण में हैं ॥ सो दीपक सौ कृत दोहि सो रामथा ॥ सो काव्य दोष ॥ प्रथम समे पद को समे ...

कल्प.
२८

अब दोर हो आल वाल व कि वाल प्रीतम कुलदीपक वुझ्यो विरह मिलतन काल ४ पुण्युउदाहरन अहां तरैक वाचक को है जो पद जहां स चाहिए सो पद न हां न होय प्रीतम कुल दीपक के आगे मिल त पद चाहिए सो आगे मि ठौर है दीपक सौ वुझत सौ जो गाम पदोष भयो सौ वाक्य दोष पद दोष वाक्य दोष ... अर्थ दोष को लछन न दीयाग्रंथ में ना सौ भ्रम भयो है आग्नि संजोग विना वुझन भ्रम गलत हौ मेरे मन की वात स वत म वुझन दो नाहे होत दोष नहीं वुझन के सव वूझि गहौ ज्यों ... यादि भ्रम गल में दोष अर्थ ही को सहु होय पदन दो कह्यो काव्यप्रकाश में पद दोष में विनों स मह दियो है पद संघ यां ना क्लिष्ट आदि नीने दोष पद के समस्त हौ में होत है एक सष्ट में न हीं होत हैं अथ क्लिष्ट वा क्य में आ समास में वुग को अरि सुनि ताह अवि ताकोल को प्रान दे रमपन भप सम ग्रेगु ... देत ने हु वि कटा कल्यान १० देरमपन नागना को भषपव न ताको सषा अग्निता को रिपु जलता को दाता मेव रहा समास दहं काव्यप्रकाश में वाक्य में आ कदियो हैं ताकी भाषा नप काार जपहोह में हु मौ सवुनि जका न एनीनि दोष छाडि श्रुतिकटु आदि दोष एक सष्ट में भी होत है आपद सम हू में भी होत है य हु भेद है सो भेद न हौ कियौ क्लिष्ट के आगे ग्राम्य दोष लिख्यौ यह कमतो काव्यप्रकाश में भी न हीं साहित्यदर्पन में भी नहीं इन दोको दोहाक दूतन सषी सौ ग्राम्य लि मिस वन विहार की वात तन मन लोचन लाल के न्यौ ग्यो पुलकत जात ११ ग्राम्य एक सष्ट में दोष सुमन वायकी गो पिड होवा क्य में भाषा में पदांत संजोग विना वायसष्ट अश्लील न हीं वा व वहे लहू लहीं वे लिनि उनें डने आ

२८

मरीकीठगडीगहरी वरसरहेकी वाय इत्यादि अनिसावइतिअप्रतीत
कोसमनहूँ कोई शब्द कोईस्लाभ्रमें २

यवाय अचल उडायगयौनाहीविनवाकेहियरामैंप्रसिद्ध होयसोजहांक विनामैंथरैनहोदोषपंच
ममगोनैनीहमैंपियथवच्छेदकदेन अवच्छेदकविसेषनकोनामन्यायप्रसिद्ध उनिन्हानालिष्योहा
नाकिनहूंसोकेतिकसहृकेयोदाहिर कोअसोइहानहीलेनहै इहांअवाचकजानिएकछन्नम
अभवन्मतनेमोगरहाहूयनपदोसलयहेविसमैंसेटिग्यइहानेविभाववयनगवकेमेजुक्तकवि
भावनाहिइद जानिसंदेहियदअपदछननेहिलोकलाजपुनलन्न अर्थकियगुनिहूयनहूयनमेंकि
नोभेदलिष्योनहिंसाफकरिअतिकटुवाकामेंपदमहीकोनभे दशअन्यादै २२ नमरति
नमयदवाथीनकोअादिलिष्यो जामेंदोषकाद्यौहैकेविनयाभोवमयोरातअोगमनचाहचित।
हितकीमोवरिसवभांतिवनोठनोहनागरिनवलीअलवलीसूपरामिफेलीमयुबिसहलीमगर
नीहवगेपमिवारवारयेयनतनवातहूकोवासोनेहूअसोकाइचलिवोनेोअनीदनमनोलेयोउवादे
रहैंयदहालोगीनककेसकेलेयावोवोदिफनीसीसमनोदे २३ यहलिष्योहानमारेनोल्याउल्याउला
गीयैरहनजकअसोकहैकिविके
इइयकोअथेलिकेयातेअभवन्मतनोगनमारेकोवाचनमलिष्योहै इहांयहीकोवारअथमालि
षोहै सोसबंधकोअवाचकपदकेअसविषैहै जोअायोवदगयोइहांभागयोअसोचाहिएहायपद
केसंवंधविषयदहोषहै असोवारमेनहीतमारोथनकोवाचनमथनअन्यादिमैपदासविषैअवाच
कजानिएहैषहतिसोरिषयकोउदाहरनदियोतहांविभावकएसोनिकरैहैदषिसमैयदहोहाकोअ
दिहादोदेषिसमैजियरामतनिकरिलैगुहिविचारवचनमपुफिदिनअहिनकेगहिलैसवकोसा

कल्प॰
२९

र ९४ ताके आगे लिष्यो है यह वचन शृंगार पर कै सांत पर यह संदेह कि यो सो अ जो गप उ है गुरु षि
ष्य कों उपदेस करै है तो हि जब वैराग्य सिषावै है तब ते सम करै है डोब ननते राग यो जो तो हि विषय
मैं आसक्ति सिषावै है तो को वचन भलो कै है मारो वचन भलो सब को सार भगवद्भजन किं वा मा
नी नायक कों सषी मनावै है स मेंव संत आदि वे सी तो हि नहीं मिलैगी सब को सार प्रेम रहै सं दि
ग्ध दोष नहीं है सांत को विभाव सिष्य है किं वा शृंगार को विभाव नायक है इहां विभाव व्यक्त नहीं है
जहां दोय रस भी में न हीय यह दोष लागै है कैसे है रति इहां विभाव की व्यक्ति में संदेह दोहा कै मेंहू
कै जन न ने मोन न मन सरस सलाय त वहीं दियो सिराय ज्यों वदर सन को जैनाय ९५ ताके आगे लि
ष्यो है इहां वचन रूप अनुभाव तें आलंवन नायक कि धों नायिका यह प्रतीति कष्ट सों होति है तो आ
गे टीका न लिषते तौ यह दोहा शृंगार पक्ष भी लागतो औ सांत पक्ष भी लागतो स्त्री को दूरमन किं
वा कामी विष्णु नाथ आदि को दरसन इनतें एक शृंगार ही मैं नायक नायिका को होत है सो क्षिप भ
यो एक रस मैं विभाव की कष्ट कल्पना नहीं है जहां दोय रस हो यत हो हां तौ यह है कौन रस को वि
भाव है न इहां कष्ट कल्पना औ अनुभाव की व्यक्ति जहां कष्ट कल्पना सो निकारी है जहां भी विभाव की
व्यक्ति कष्ट सों नि[illegible] करति है दोहा वरनत वरन नैन नहु सडि कैं हि विआप चढ़ आर ष्ट पिआवे
सषपा छि लो सुनि वन वोलत मोर ९६ इहां भी शृंगार को विभाव किं वा करुन रस को विभाव अ
नुभाव की कष्ट कल्पना जहां अनुभाव जदो कहि नहीं कहै विभाव को विशेषन करै तहां जानि
ए पहल बला वनि दार यह भो है मरोर नि दारि कुंज भवन कै सेन कों सैन वतावति हा रि ९७ इहां

फूलचलाइवो इत्यादि अनुभाव सो न्है दोक बिनहीं क दोउ बिभाव को बिसेषन किये अपरमुक्त
निलो कलाज इत्यादि रसरहस्य को दोहा दोहा लोकलाज कुल को निडर मोह रहा दिप न तुताथ मो
वह मोहन होय न हि मन दहो लेन सुभाय १८ याके आगे लिष्यो है जो वह मोहन होय न हो याही
वोर हूं न करेनो यामन दहो लेने की प्रतीति नो मोहन सुहृदा सो होनी इहां उनके कहे अर्थपुनरु
क्त को दोस अपरमुक्त नहीं होय और लछन कियो है स्वरन को जे ठौर तजि सो पदमुक्त कहाय दोष को नाम
अपरमुक्त है अपरमुक्त स कहाय ऐसो चाहिए श्रुतिदूषन इति के न ने दूषन सो के तन ने दूषन मिलते से
है ताके भेद नहीं लिषे जे से अनुचितार्थ औ विरुद्धमतिकृत भग्नप्रक्रम औ अक्रम औ सेजानिए श्रुतिक
टु इति श्रुतिकटु दोष वाक्य में पद में लिष्यो है तहां कोन भेद राष्यो है इहां पद में भयो इहां वाक्य में भयो
कोवप्रकाश में लिष्यो है तनवी सो और लगि न नायक कातो छ्यो पावे है कठौर वर्न फेरि सेजोगी होय सो
श्रुतिकटु इहां कातो छ्यो एक पद में श्रुतिकटु भयो रसरहस्य में श्रुतिकटु को उदाहरन दियो है कवि
नें रसिकरसाल कियो कावनें के वोबो दियो अवके सजात निपोदे षेहा लरो व वे उद्धव गाए बुद्धिदे
न व्रजबालनि को वैरी हू कै दीजिए नलोन परेषो वे सोयिन को ए तनो सदेसो जायक हो अलि सव
सुषि भूली काइम एक हो वा वेर ब्रह्म है में चितद कोन रगुन पायहै पे एकवार आय वसे मुरली वजा
यरे १९ ताके आगे लिष्यो है इहां काठ के वेगो इद्धव बुद्धि वस ए पद वियोग में विरुद्ध है इहां एक ब्रह्म
पद श्रुतिकटु है और भंति तुलवनैद श्रुतिकटु नहीं है अथवा करमें वा टउकट कोने ने नवैन शुहै ज
कजको म्रातिक काइको सदाइकव औ यदुदारे है नैरें हृद आसुनि के सर रेन लफ तिडोरे होय कि

30

कन्न.
३०

नहे कौंपायदै व्रदायहराय न्यौं त्यौ उठै भयरायद्द व कै मैं वहराय पस्यौ मदन को दायद्दै भट की फि
रति नट नागर विरह अव वटन वटननन पान हू व टायद्दे २० पददोषके कवित्त मैं ओपदवा
क्य दोषके कवित्त मैं केतने नो भेद है प्रतिकूल वर्ने इहां भी है प्रतिकूल वर्न उहां भी है यद्द रस रहस
पवन वाले सौ मस्त उनर इहां टौर नट रै इत्यादि किया मैं भी है औ समूह मैं भी है याते वाक्य दोष कोई भाषा
ग्रंथ दोष रसरहस वनायो है हम थोरा लिष्यो है औरि भी कवि विचारि लेहिंगे अथ भ्रांति भंजनी मे
सै दै इहा हा भ्रांति भंजनी को नुमे भ्रांति न सकौ गनायद्दे विसर्ग उपहत नजहां उपहत लिषा वनाय २
१ कामकलाधिक यहां दियो उदाहरन तिहि गरे न हिं विसर्ग भासे इहां लषिहे कवि सिवमोर २२ औ
निहतिउपहत नो विसर्ग औ लुप्त विसर्ग दोष हे उपहत विसर्ग को अर्थ विसर्ग को वो उकार करि एदे
पे विसर्ग ओ कारक रिए दे ओकार के अनुप्रास सो करे इओ को नहिं लागे भाषा मैं विसर्ग नहीं दोष कहा
ते हो य यह पीछे भी लिष्यो है इन उपहत दोष लिष्यो नाम दो की पौक नहीं लच्छना किये समय कीये
हैं सब मैं आय रओ वनो हिं इहां विषि हू पतु दोष के उपहत कहि एतो है २३ उदाहरन कामकला
धिक वाधि का आधि करा निलो काम की केलि वनाई काम सकाज रसो य रहे के रहे कुच है रति काम
की नाई अब अलजराव की सुदिका हे कसषीअ मिलाषन देषन धाई दे षन को पिय को निय को दिय
को अभिषिया जनु वादिद आई २४ लिष्यो है इहां कामकलाधिक मैं अकार संधि किये आवे हे यह उप
हत सो यह निर्मल अधिक पद जरूषत जहां अधिक वने नहां भाषिन हे दत हत मसि हुई लषिहे
कवि अभिलाषि २५ आपस मैं विदहे सैर मदौं रस षल भयो डलदो अरू नाहे उतें ओ कवारि कौ दारि

दोहा

गोदीमें

३९

बरौ हृनमेंडनलालकोलागैछलाटैं मीनिकोदावपसेपियकोसज्ञनीनिकदीकिहमारीविदादै
लालरहै अंगिआतनचाहिति यामुसक्यायदियातनचाहे २९ अधिकवनेकौनअंगमेंकढाटें
रहोहुताहतहोयजानिऐंअधिकपदनौफूलनिकेमकरंदइत्यादिमेंछपैअप्रयुक्त १ नहिचंद
मारुदैसैं० नैवार्थिकचंदनहै० अप्रसमर्थयंतहोसुअवाचकइहैनिकनिहतार्थ ५ दियकौ
लाननहोलघुकोगुरुकमितकहैउअवाचक ५ बैरहीसुननहिअपुष्टार्थनिरर्थककोदियहानिसुवादिरबैगि
बौपदमेंयोगनेवाकुगतनहुतिअमंगल ७ अनुचितसकहिमैंनग्राम्य ८ नेयारीतमनतऽ० अप्रयु
क्तरीति अप्रयुक्तमेंचंद्रमादियोचंद्रमातौबऊत ठौरआवैहैवाकिकोपूनआआनकीओषिअमा
वसकोनिसचंद्रमादेयतेसोईसनमुषअमलचंद्रमाइत्यादिपदहैसो० जौवार्थिक० औसेपदको
दिए चंदनरतिचंदनसद्दएकार्थहैरक्तचंदनको अवाचकजानिएहचिपकनचहनवंदनकेचनार
नादिरामैंकप्रियाकेकविनमैंनिहतार्थइति आपुसमैंविहसैरससहीइत्यादिछलकौछलातुको
तकैयेद्रूसकोंहोवे [illegible] कियोपिंगलमैंकरोहैलघुगुरुगुरुलघुहोतहैनिजरछबाअनुसार
बादरकोवदराकियोविदुभीवदरावदराह आयरकोअपराअप्रसुआनिकरेअषरानिकेसाथैर
हेसकअसुत्थहोपिआयह [illegible] नहैयअर्थकेसहमैयहदोषहोतहैछलासह दोषअर्थ
कोनहीयानेरहा नहींकौलछनहीलप्पामहावीरइत्यादिसहचाहिएइनकोलछलेकोउअ
पमसिद्धकोअप्रसिद्धकोधोषितिदेवप्रतिगहोतेकरेकरावालीनेकिडिनकेरकोनेकूम
निकोराकरीमोकरहौदलनविकचिवरबैरीडरजननसिंहजदोनहोदाहनहथियारबैंवदोहरहर

हमनन मम रहे रहे सिंहे विनी लकें उभांति भांति भूलपांतिवें रही आले आले गुषनि कीआलिकावरनि
परें कालिका के आगें दीपमालि कासी भैरही ॥ ८ याके आगें लिष्यो है इहां वैरही पदसो अवाचक
याको अर्थ नहीं जाको अर्थ नहीं सो निरर्थक कहावें अवाचक नहीं कहावे अवाचक तो जादि अर्थ मे
पदवाचे ताहि अर्थ कों नहीं कहे पदतो सार्थक होय रियानि वादि रवावि बोवाको दोष मैं चाहिए
इपदके संजोग सों दोष हो तहे न केवादि रवे ठिन देह वाय रल रीं री देह सिह वला यथा नेगाय गीनो
घायगी सुनि अंगमलइनि लगे जादि प्रेतनादि के नाउ बदेत माहि जो वतलप्यो है ताते अधिक अर्थी
रहे परी मेरी वीरमेरी छातीपर पीर है सुनतवही मिटे गीजब छातीलगे पापीर है प्रेमकी अधिकाई सो उष
की अधिकता ताने मे प्रेतको दृष्टांत दियो सो अनुचित है स्तुति करत निंदा निकरी इहां अलंकार दोष म
री तहां ग्रंथ सो पद दोष चाहिए आ भासत परीपरी तन मध्य आय नहीं क्यो भाषा च्युत मत कौन को र
दियपे चक मे चक पद ले कहनो जोग को है सो कैंअ विमध्य केदेड लाघ यत के करो रिउ कू मेमप
रइयदा यनु पनन प्रक यंहो को मन अनुसरइ यअहींन रेक वाचक सुनो अरथ मिले नद अरथ अन
तोल कैन लक सो ग्रंथ सों मिले ना दि हृयन सुगन २९ भाषा इति इम ग्रो आमित दलहय गाय पयद
लकि निपवय रकभई है यरायरी सीक है कवियेगा नहु मनअ यहां अटे सबकी नेमा विचट पदे लागी
भ्रमिच सो पेचक ३ दितमनमेचक दसहूदि समेचक मेचक धूरि हुनिसि पदे सो मैंवें कहे बारबार दो
स्यो मादि दलि पाल हृदु मनिज्ञाय जमी हरिया रचरी सी ३० आगें लिष्यो पेचक मेचक पद सं स्कृत
है भाषा च्युतक कौन ग्रंथ को मत इहां अप्रयुक्त लिष्यो चाहिए ज्ञान के लिये अैसें मध्य कावे लेआ

मेचक मेचक है चक्र चक के हैं
छिंवा चक्र मे चक्र केजे मए ३

मैं नहीं भाषा

31

वतहैसोपीछेलिष्योहै पहिलेंइनिकदोनुपीछेंचाहिएसोपहिलेज्योंहोयअविमष्टविधेयांससो
कहैंकवीसरलेय ३१ ऐसोकेहूपयाजेमुदिकेमुद्दिमोहरदेइपदउक्रमकेउदाहरनमेंलष्योअ
म्रष्टविधेयांसकहैनहींलगैहोयइतिपतनत्मकर्षकोलछनकियाहैसहृदुनतनामष्टकोनदिउ
पजैउत्कषंअसोदूषनकविमैकहियतपतनत्मकर्ष ३२ उदाहरनवाजेनिनूपरवाजेकौंचकेचु
कीनमानेंवरषवसनगाजेषरगचोकोसोफूरैविविधकटाछवेअक्रूकवानचेंहवानवानअव
लोकवोलेविक्रमभोरैभुरैअसीएवहोइरकोअविअनीवनीवनीहोकेंहठिजातिचनीफेरिगहेकों
भूरजेसेनववधूसनिपतिकोवचनहारअंगनतभाजिवेसिनावभोनमेउरे ३३ इहांनूपरकीसमता
सौंनगोवकोउत्कषनहींकेचुकीसमतासोंकवचकोउत्कषनहींयहकोनग्रंथकोमतअहै इहांचा
हिकैसिनिंदाकरैहैतहांअनुचितार्थदोषनहीं पतनत्मकर्षतोजेसोरचनाकोआरंभकरेतेसोनहींनिवाहै
वहांतोंनिकसतियोसिग्रंथनेसुरिएआदिग्रंथकोंजादेआयोतरेकेसोजानिएदूषनकविताभाद ३४
उदाहरनहमसोंहितसोंउतसोंहकैंनितिकोमिलिवोवहगावनहीं उकिनेदिनवीतिगएकवि
मेउनवातनहींवहगावनहींविनहोअपरायउतेऊनकेसकेअसऔवहगावनहीरंगलालभए
कसलालनकेपरभामिनिकेसहगावनहीं ३५ लिष्योइहांपहिलीनकेअर्थकोहूसरीनकमिला
ऐवोयहोतहैसोनिसिलयहकाव्यप्रकासमेसोनहींमिलेसाहित्यदर्पनमेंसोनहींमिलेकाव्यदर्पनसोनहींमि
लेहैअरइनग्रंथनिसोंविरुद्धसोइहमरूषनअतिभंजनोमेअरसमरहसमैंहियाहैचितदेअसेहिषियो
हैगउवढगवालअतिभंजनोकाकरहोरहोरमैयाल ३६ अनुचितार्थआदिनित्यदोषहैतिनेगुनकि

का० ३२

योनहोविरुद्धमतिहूतनभासेहै ॥ अधिकपदगुनकियोहैनहोगुनहूकभासैहै ॥ कविप्रियाकीटीहम
करीहै जोदोषकहेतौअर्थकोनहोलगेओवहुआनिहीतौनिसोचलोअनर्थकपकपदमेंहोतहैउ
नसारोमहावाक्यदियोहै ॥ अथकुवलयानंदमेंसंदेहहै वर्ण्यहूउपमामेसहसलक्ष्मीजहांलषायमतउ
कुवलयानंदकोउपमातहांकहाय ३२ वर्ण्यउपमेयअौउपमानयाकीजहांसादृश्यकोलक्ष्मीकहिए
सोभाजहांभोसनहोईउपमाअलंकारहोययहकुवलयानंदकोमतहै ॥ होहादसीकेरतिकोभलोउप
मानहूउपमेयपतहोकाकतालीयकोउदाहरननहिंदेय ३३ हंसीसितदियपक्षीस्वर्गकीगंगाको
अवगाहनकरैहैनसेस्वर्गकीगंगाकोअवगाहनतमारीकीरतिभीकरैहैतहांजाऊतमारीकीतिभी
पढ़ैहैयहअर्थउदाहरनअैसोजोमतहैतौकाकतालीयमहउदाहरनहैजोनहींयाकाककीआग
मनक्रियासौतौनायककीआगमनक्रियाअौतालकेपतनक्रियासौनायिकाआगमनक्रियायहू
काकतालकोअर्थकाकनेजसेंचोचसौफारिफारितालकोउपभोगकियोअैसोनायकनेंनायिका
कोउपभोगकियोयाहीसेविकितिविशेषकाभयोअविलंकिनसंभवतौसाधारनयमेंहैनहीं
मिलनेकोनहींभोगकरनेंकोसंभवयोसोआयोनेचनकहोईहोतोकाकतालकीक्रियासौनाय
कनायिकाकीभीक्रियासोउपमानोपमेयभावहैकाकसौंनहीतोअथमकाककीवदसूतक्रि
यासौभीउपमानोपमेयभावनहींचाहिएतमारेमतमेंअसोभीवनेनहोयस्वानपोकिकीअौवेश्या
पनीजोयफेरिसूधीहोयतपकोमिकसैयोकोय ३५ दोहादीनोपमअथिकोपमकहैहरनकोउक्ते
दमस्सटकाव्यप्रकाशमेंहूवनदियकहिंमेद ४ कुकाव्यकीनरहेउपमातौहैदीनहेकेअथि

कहै हैं चंद्र मैं तो नियंदु नायकादि रैना को ग्रुनिमानि चंद्र की ज्योति मारी बीजो तिन्है ज्ञाकी हरिन की आषि
मारी षी आषि दै ज्ञा की काई अलंकार होय तदो सो भाविशेष चारि है ये यह मैं तत्र इनकोइ है फेरि उपमाना
लंकार मैं दियो है सकट कारक रोहिनी तारा न्या सपिका नैनि गाऊं की सरनि सी रोहिनी केनगों की
ति इहां कहा सो भाभई फेरि कारक कहीयक मैं उदाहरन दियो पथिक जात है आवत है देष्ये है सूछे
है इहां गमनादि क्रिया सौ एक कर्त्ता को अन्वय यासौ कहा विच्छित्ति विशेष भयो असे स्वभावो क्तिआ
दि मैं विच्छित्ति विसेष विचारि लेनो जहां सो इत्यादि वाचक सौ समतानत हां उपमा इतिहास चरणादि सह
नेहदहकी विवल्लभमैं संदेह निरूपणम् ५ अथ अदोष निरूपन केकहं दोष है उचित के गिके कहूं दोष
गुन होय कहुं दोष न है गुन न हो असे कैसे जोय १ क्रोधन्नकवक्ता जहां १ उद्धतवाच्य रसमोर्दे रोद्र
दिकरस सरनिये २ श्रुतिकटुगुनजकहांदि २ उदाहरनहू की चाह्य ये रिमारो आरि निउचारि विकट सुभ
ट के बट कै कासि दैउ महिहजा रि ३ इहां रौद्र रसवंगप क्रोधन्न कवक्ता की उक्ति मैं श्रुतिकटु गुन लेक
ना निके यो ददर [illegible] की नेकमैं अचं [illegible] अंकुरे गर्भ ते हैं नैन न के रिग जे ४ इहां उदहन [illegible] मानवा
चन हां कवोर वचनै गुन आदि पद सो वीर वीभत्स सांत जानिए अर्क किरन को देषि कै यह वितर्क मनहो
घ्याधि ध्यान अनंत कह है देन पापको षाय ५ श्रृंगारादि रस रहित हैं यातें इहां कठोर वचन तो दोष भीत
हो भयो औ गुन भी न हो भयो कहुं [illegible] वचन तो रसमें दोष कहूं गुन है यहि के [illegible] करत है गाजे
न वचन सरस गाज रूप टिल पटिप [illegible] कैमें दोषा [illegible] न को गौद वाज ६ यह भीरस है या ते गुन दोष कछु विन
न हो न हो रूप [illegible] षन दोष [illegible] ७ [illegible] के नैनो गावै मैं पसा रि लैंचू षीन हो इ षजहां मेट जो पिमूष

मं०

३२

भूषन होतें जवतिन के सो ऊँ अं विभरि लैं को किलसों काकतें कहाय ले मधुर वाक पाकी ज्यों कगांव में
गंवारिन के चपलि लै मोदान वढावै अं सै ऊदनव रावरी को थली हो मैं रावरी तैं कहिले २ हां भीषवेरा
वैंत्यादि शब्द नीरस में दोष भी नहीं गुन भी नहीं इति श्री तिकदूं अंथ अंष ९ आदि मैं निहतार्थ अप्र
युक्त गुन जानिए अप्रयुक्त निहतार्थ गुन सेष आदि में जानि सुरत सभैं जहां मातुल सुअ सली लदो
षन मानि ८ सोहन को युक कर लिये विरहीनि विकट लषान अं सत मोम हचि विजयु प्रियु दर्पक
साम सुहान ९ दर्पक काम जैसा स्याम श्री कृष्ण सो सुहान है किंवा दर्पक जो अर्क सम सोभन है इति भूष
न काम्मुक है वेन १ श्रीयनुष २ हू कों कविक है विकट कराल १ रूमम २ देंउ कट: तीव्र ३ हूमत्र रत्तां
न के द्यातीत में अंस्त० मथा १ वारि २ धृत ३ मोक्ष ४ हू कों गोरस ५ कों प्रिय ६ हू कों सोच ७ कोड़ी
१ हेम २ हरि ३ शाप० विजय० जय ३ पार्थ ४ विमान ५ हू काम्मुक आदि एक अर्थ मैं प्रसिद्ध औरि में अप्रसि
द्ध कालिका तव दुलै साधुन रत निंन वाहै सो हन है इति विकुर लोभ जो कुमम्मोनाहै ९ कालिका जो
केवु मेल सु है किंवा कालिका सो जाको वडुल से है कालिका सु मेघ माल १ श्रीगौरी २ सुरा ३ कमेंहे १
जोगिनी को भेद ४ नवमेघ ५ हू मैं कालिका है साधन नि हूनि में रहत है साधन० स्त्रमिद्धु ह० नि
हनि २ वधर ३ सेनाध ३ उदिड़ाप ५ कहि श्रीरामजी को वन सभैं वनन रावन के मारिवे के उपाय मों किंवा
वैस वन मैं रत चिकुर सपेना सों सोहन है वन मैं जटा राषी है ना सो चिकुर के स १ अदि २ मेल ३ श्रीवि
चचल ४ हू विचार हू उमा १ कनकार २ सियर कुमारी छेद के लियें है सव इहां भी एक अर्थ मैं प्रसिद्ध आ
दि पद सों चित्र काव्य जानम कभी के तन भाषा कविक हत है मैं जानि अप्रयुक्त माथ वी माथ वी सव नम

दोहा ४

मैल

एक

२२

व

नारिकै रवचन कै रेश्रम पउत्तव उत्तसैं धारि ॥ नायिका माथ वीप्रदिराके व स होयकैं नायक पास माथवी
कुटनी को भेजै है के रव कुमुदना को वन उद्दीपन है सो मान को शत्रु भए यातें उत्तव को पता मेहू पथा
निकै प्रमान माथवी है कुटनी १ रुमुरा २ रुवासंति ३ दुकोंक विजानदूनी ताहि के रव ० सत्रु १ कमो
दरकली २ मगभेद १ हमीन २ राजीव ० रुके जरिद उत्तव ० हर्ष १ सुकोपक है दई रवोलत सुनिस पीद
ई ग्रायो हेरि साजि सिंगार सिंगार दिन पहि रिसिंगार सुफेरि १२ प्रमान दई २ ० नायद १ भेकहूवि
वर ० सनागस १ श्रृंगार सुरन १२ रस भेद २ ग्रह सै २ १ लोगध सुचूनें ५ फिरि लोयन कें लोय
न सषो कोन कोनत निहारि राजीव रुराजीव पुनि राजी वहि दियवारि १३ पीछे के रव उत्तादि मे क
यौं देषि मुदिर ग्रायो मुदिर मजुरनेल वदवार ३ पास गट्टगनेकटे रोपक करछे निहारि १४ मु
दिर ० सुकामुक १ मेद २ मुकुर ० सु० दर्पन १ वकुल २ कली ३ रुकुलाल देइ धलष कनीभरनतूनी रं
सुनिषगा २ कोह ० उपासगाध जानो ३ पुधि ५ वान १ विशिष २ रु ० प्रषक ३ फल ० ग्रा सुगाध ग्रह जिह्म
ग ५ पग २ कुलेव ० मार्गन ८ सोप ९ पत्री १० इषु ११ सर १२ पगासादि निनामा मेन रीमजरी सुलिय
पानि लषि चंपला को कौर फूल भयो रसिलवसानि १५ भूति भूषन मंजरी ० सुदुम तिलक रव
सिरो २ धूलमुक २ के हमकुलउदा २ १ ग्रो याम २ ग्रह ० चपला ग्रसती १ वीजुर ग्रियरु फिरि तिल ०
रमन १ ग्रह कामदूहू वान कों मानि ग्राय सी उहषके रह स मेल जाथे जक ग्रसली लघु नीति पेतो सोन
हि फुरे सकै कविन सु पारी ग्रादि कोरन कों बाहै हमें यह जानति कै नाहि १६ रहो लजा थे जक ग्रसली
ले दोष सो गुन भयो ग्यान रहे दई वजी मेदरीन निकवि निवुहै के कहि होय जवही मैं विवलाई एस पकहि

सकैनकोप ९ सांतरसमैं अश्लीलगुन लोचन की चर उद्दरम लु मो समो विकु चनो नित उपगतम
रषतहोत निमोहनगुनषोनि १० संदिग्धगुन संदेसु सुवा जैस्ताति कौं मो हो दोषनहो समफास
वमेही ११ जहां कनन करें वनों मिलै अनि विभूति सरसाय लाषन को भूषन लहै अमोवहरकभा
य रवै च यो राभी नहीं मिलै रहो एजा कोव नै नदे किं वाक विकोवनै न है अ्रप्रयुक्त जो परल पोटै है जो नि
परै टैक विराजा को वर्नन करै है भिक्षुक की निंदा एजा की स्तुति है अप्रयुक्त अप्रतीत गुन समुफि
लेन न है अप्रयोग अप्रतीत गुन … ता कौ जानि समै … पैवानर। स्वलीन ही है यह
आकरण मैं प्रसिद्ध सबैब प्रसिद्ध नहीं औ मो जो गाम सब्द प्रसिद्ध भ क्रनि पुरुष आदेश आदि … पनोभा
षा मैं बनें नहीं ओ न ही आपनो मन में बिचार करै तहा भी अ्रसमर्थ आवै नहीं भी दोषन ही अथ ग्राम्य
जनक है ज्यौ बचन गंवार को ग्राम्य गुन तिहि नाम सो गपा तसो दीर जो भैरव नि बिन कि दि काम १२
अथ न्यूनपद गुन … आदि बस जो कहै तहो न्यूनगुन जान … लो जात … ल जनहिं या
न २३ नायक मोहि तजि गए आदि पद सो कभी लो … बिहारी है षा जागत वे … सो कहै लमी कपा
र कि नहै … जात भनि कौ जानै कि हि बार २४ जैसी मेल … औ नायक है दो बिरह हिनो कोउ
किमैं दोषन हों अधिक पद भी कहूं गुन जानि ए अँ यान लैहनि बारहनवि नै है … बिन अव दातें है
जानत है रसिक जानत है यह बात २५ न हो रसिक जानत है सो नहीं जानत है यह अर्थ दोष बस नहीं
कह्यो ताहो सो जानि बो वह … जानन पद कह्यो ता सो यह अ्रर्थ … नि कमोर सिक
दो जानत न है और न हीं जानत है और नहीं जानत है और कि जानि वे को निषेध कियो अपुस्तक

११

आरहै हैं तो मैं गुन विहित कथन १ विषाद रसैं मन है लालान प्रास ३ विस्मय ४ क्रोध ५ हठीनता ६ दया ७ मादि समुपकास २९ अथ धीन रसै कपिन हैं वाथ ८ प्रसादन ९ मादि हूधि १० हनि सूय ११ मैं लषो दोष न विक है नो हि ३२ अथ विहित कथन विहित कहि पविपेय निर्दे सज्जो तिएक हूको गवे सो कहि को ई वान कहि एउ हैं सोमे सैं विग्रहन अथवत अहनपिक्का न भाषा भूषन हैं श्रुति परवाइ परवाइ जे। बलैं जाने २८ रवि उदैप हैं ग्रहन विषय पहैं ताको फैसिक ह्यो याते हैं दोषन हीं सब केसान मैं सहू भी भासत है यहू के तनै लोगनि के मत है अथवत लाल पिक्का नै अैसो कहै औ गिरी हीन रहै भासत है पुन हंस को रूपाम हू और मैं दोष नहीं यह नियम नहीं है जहां चमत्कार होय अलंकार उपजावे न हां दोषन हीं हूग अ। ति रहो एकावली अलंकार भयो अै सैं अग्र हित दीपक आदि जानिए विषाद में विहारी वलन वलन लोल चले सब समुष सेगल गाय श्री षम वास रगि सिरनि सपि यमो पास बलाय २९ जाऊं अहो पियजाई हूं समस वी रहै गे आप का मसिलो मुष्मा सिहै मोहि चदाएं चाप ३० सनि रीस जनीरजनी को कथा इनैं नैन चको रनि जो विन है मुषचंद सुजान सजीवनि को लषिपा समझे कंकण रीति न है अभिलाष निआंवरना है विदी व नहीं वन आनंद आनि कहै सुविहान न जानिप रोभ्रम सो कित है विसवासिनि बीतिगई ३१ रहो विहान औ बीतिजानौ एक अर्थ है पै दोष नहीं अथलाल अनुप्रास भाषा भूषन पोषनि कंजा के सब ग्रामचारि नो आदि पोषनि कंजा के नहीं ग्रामचारि दीनौ ना हि ३२ अथ विस्मय आश्चर्य लोल अलोल कल रिको ल षिल षिसपी सिहां निआ नकालिमैं देषि ये ऊरउ क सो ही भांति ३३ काल लषी कछु और रहीं आजु ल षी कछु और रसैं हि न छिन छिन देषिये छव की औरै तौर लषी लषी अबव धान सों कहो अथ क्रोध मैं

दोहा

श्रुति

मारौन हि मारो जु सब चक सद्दिन कलि में हिन एन एहर कौं बचौ द्वाबल घन हो नाहि ३४ कनी भरन चमू ।
सेना २ पृतना ३ कटवा द्दिनी ४ रुथ्वजिनी ५ अनीकिनी ६ वलु गैसम्र ८ लहफि रिचक ९ अनीक १० वरु
थिनी ११ व्यूह १२ सवलविन्यास १३ किय १४ संप्रहार १५ सं...राट १६ संजुग १७ कलि १८ आहव १९ हल
द्रग्रय दो ननामैं रसिक प्रिया हू रनैं देषन कौ हूयदीन पग ईडू नो लिषि हू लिषि चौ वौ देषि मिल्यो मन
होहू मिली मिलि षिलवे हू कौं मिली मति मी ठौ अये में आगि चलाय हो केसव केसे हू काढ़ कमारे हेरी
वौहू देन वार में रारी के नारे स्यो हू टि लाल ह्वै मन में ईवी ३६ अति दयाल नल सी सुनैंनो सुनैं नौन लसिंदे को
नेरो गावि नासक विरद तय अवेउ घसदैन मान ३७ अघ रयामें जाड वरैन्ह न नप थिक फेरिक हति
वरजाद मिया न मीवत पाय हो पीछैं कौं होकाद ३८ मति अनाथ जो वनि ट्टनै मनि रेहनै गवार क ।
हिको उजर दे य गोवदि जमके दरवार ३९ अघ अर्थ्यांतर संक्रमित वाच्य में अर्थ्यांतर संक्रमित मैं हो ।
घतनिक मनि हरि भाषा म घन को किल है कौ किल [illegible] ज वैगि नु मैं क गिदे देवि ४० हंस वो को
किल मह्हनिक स्माहो य कें अगि अर्थ मैं गयो मधु रशाह कौं काह्यो सबकौं मनोहर लागो अ सो मह को
जब वोलै ये मो अभ्याम हैमें कहि हो परि है गद गद वै ही वामको स्वरिचै हो गर्है ४१ इहां गद को अ
ये सोर ह स गद को अर्थ्यु तिरस्कृत वाच्य प्रसादन में जो मिकर मकहो तो ह्नि निहो सि निहोरि [illegible] दे रिह हि मो
अ रूसो सो ह करोरि करोरि ४२ इहां वाजो करनो है ह्वै में आयो आयो पीयमा अ से जानि अ घ मे यहीहै
यहीहै अ मैं [illegible] नानिए अघ नित्य दोष सकवि विवक्षित अर्थ को भयो कन हि हो नो सोतेरस्कार क
अरय करै कहूं उद्योन ४३ कवि को जो विवक्षित अर्थ ताकी प्रतीति को न ह्वै करावत है या तैं गन स

ष्ट। नेंग्र समर्थ ग्रवाचक निरर्थक ए निन्य दोष कवि नें भलो नायिका को ग्रोर हो नायक को स्तुति विव
क्षित है भलो उहू पवा चौ मह है सो नायिका को स्तुति को प्रतीति करावनिहार नहीं भयो ग्रसंग्रसम
र्थक विको विवक्षित चलन तामैं हनाग्रादि शब्द मारन को कहैं गो ग्रसंग्रवाचक निरर्थक तो चरन
हरनार्थ ग्रोकविको जो विवक्षित ग्ररथ ता को तिरस्कारक जो ग्ररथ ता की प्रतीति को करावै सो ऊग
न नहीं होय सो विदग्ध पद इहां कविको विवक्षित ग्ररथ है परस्त्री सो ग्रनासक पद स्तुति नितां को हरक
रै ग्र सो ग्ररथ निकसो सबै कमें वाद ग्रादि निहो या तें निन्य दोष जोन पन हो ग्रसंग्रगुवितार्थ निन्य दो
ष हो तहे तो विरुद्ध मतिकृत कैयो तो निन्यदोष होय विरुद्धमतिकृत परिहा समें गुन होत है एक ही शुभ
प को नाम विन्न भी है जन्न भी है ताते हां सकर नौ विन्न वधू मैं जन्न के साइ दे यो पा समर्थ सो समग्री
के मैं ग्रापुन में परे हास ५५ ग्रानें समग्रादिक ऊकि मैं न्यूनपद भी गुन वा दो ग्र समसा हो पियना हो गद्दो।
वो हो हमनो हो हमनो होय परेछा हो सो करनि है ज्युन सो न हीक हीत एतना ऊपरे सो जो सो परतदे इ
हो गन भयो पतन्य कर्षक हूं गुनें देउ कोदंड को चेउ कियो जिनि ग्रा नित्र म सो हार स्तु जीति दे कहो
मो विमें पानि ५५ पूर्वो हूं मैं स को परस्तु रामजी को वाक्य उत्तरार्द्ध मैं ग्राक्षेप नेजो निविनय जनक ग्रोरा
मनी के वाक्य इहां दोष नहीं ग्रथ समाप्त पुनरात्त गुन जो इहां चाहत है ग्रो समाप्त कवि विशेषन नहीं देह
नहो समाप्त पुनरात दोष नहीं दोहा नेपिय सखि परदेस को जवतें गौन कीन तो ही समें देसो कु सलको
नवनें दीनन ही न ५६ इहां चाहत है विसेषन भीन दीने या तें दोष नहीं समाप्त करि विसेषन मा वरें नें
में यह दोष है यह सादृश्य दर्पनें दो विहारी मो जो व नेत्र बंदन कुचं मिति ग्रति ग्रपि का यत्नो नोकि

बछिनकदिछपाछीनपरतनितिनाय ४७ अधिकायदेरहोवाकप्रश्नकियोफिरआगेंकह्योतौ
भोटोषनहींकविनहाविगयोरावनंचायोजिनकयलासवानसैवलीऔथनदेषतदहेविगोचादेकु
वैनोवनपैंनोमिनसकतभूपदमिकविकदैजोसश्रीसलोउसरिगोसांवरोकिसोरकामवाणिएकरो
रश्रेसोरामकोविलोकेवामरूपनेनभरिगोपेकजमोहायमेलेषे ह्यारबुनाथजवकोचकोसो
वासनसरामनविषविगो ४८ इहांचारिहेतुकमेवाकप्रश्नकियोदेनाभोटोषनहीकविनकोस
लनरेसपुतवनकोगवनकीनोहोननिकोभागभोअसरांहुयेधरकोगोधकोउथास्योश्रीकवेधुह
कोनास्योहियावालिकोविदाहोइनिसानाकरिपुरकोसुनिनिकोसषसाध्योदवनिकोभषसा
ध्योधषकेविभीषनकोभारहस्योधरकोलकजारिछोरकियारछकोसंहारकियोहरोकोअहार
देकेहारकियोटरको ४९ अथप्रसिद्धअर्थमेतिदेतदोषनाटोचदहिलोहिनहिंकजगुनकेज
लहिगुनचदभोगनश्रीनादिराधिकामुषलोटपरआनंद ५० दिनमेंचद्रमोकोतिहीनहेरातिमे
कमलसोभाहीननेहमोयदनहींभोगिवेकोकोवनसोलाकप्रसिद्धदेविहृदै विहारीचलनचलतलो
लेचलेसवसुषसंगलगायग्रीषमवासरसिसिरनिसिपियमोपासवसाय ५१ दिनरातिवडीहोतिहे
यहहेतुमसिद्धहेलिष्योहेअजोगपचननरसभंगकोकारनहेअजोगपयया॥गायउवीसुनिकेसं
सोइलोपनभयोसुनिकेअनुरागपाकाहेउनाविकेपागलरेहकंगोकिनहकोईथोनोलेभगेनावो
गयोरहिनाहिरहीसुधिअसोईंदेजहेप्रेमसोपागयोआनंदआगसमातनअसहीनेदववाउठिनाच
नलागो ५२ ऐसोहासवनेनअजोगपकीजेजहांअनुकरनदेदोनमुदोषअदोषरहेचादनहिंअ।

दोहा

यकी क्यों है दूषन पोष ५३ ऐसो सब्द बानेक है तो न हो दूषन पुष्ट क्यों कहि है होय सब जो पीके दोष कहै
है ते अदोष होत न है वेडवेड हगमा हि पेगरे उकै दै यह नो है गयो कहा वह को दलीक पोइ तो वन माह ५४
वडे वडे श्रृंगार के अति क्रुलवंत नारी कौ ठौर गयो गात संकुत न कादलीलो अपयुक्त अनुकरन मैं दोष न
हीं ऐसें और भी जानिये ग्राम्य कोलिगैं गुन न तहां न लगै दोष हो है विडुरी भलो दो कहा नहीं दोष अदोष नट हि
५५ अथ रस आदिको अदोष रस संचारी थायि जहां विना नाम न बुफाय कारन कारज होत जहं संचा
रीस्व कहाय ५६ रस औ संचारी औ स्थायी न है नाम कहै विना न हो सकुफै परै नहीं नाम कहै दोष न
हीं औ जहां कारन काम जहां होय एक कारन होय है संगो कारज होय न हो भी दोष नहीं है दधि पै रस होस

नि

पियनिय है लाज सरूप मूरनि वेत सिंगार पिय निमिति परति सु अनूप ५७ इहां रस को और सवा
व कह श्रृंगार को औ संचारी लाज को औ श्रृंगार रस को स्थायी रति को नाम कहै विना प्रतीति नहीं होति
है यातै नाम कहै दोष नहीं रस ध्वनि मैं कहै है संचारी अपनी क्रिया कहि जो नियत है सो इहां नहीं है
तिरछी चितवनि बाल की मिली लाज भय लेस हिय उन्माद मोह जुत जरर लोटे तिक लेस ५८ इ
हां भी नाम कहै विना संचारी न हो जानो जात तिय की उन्मत्तता परीचे चलता उपजावता सो लाजभ
ई और है रिह विलोकनि आय ५९ तिय की जो उन्मत्तता सो चंचलता कारन उजेन को इसमादि मैं दो
ष नहीं ऐसे जानि एसमाप्रकास मैं रस औ रस दोष औ अदोष कहा तहां विशेष कहि न दीलि
ख्यो विरोधी रस को स्मरन मैं दोष नहीं जो करसों कुचको गहत जावकदे नव नाय मोहि गा अजन को
रचे सोरन मस्तोल भाय ६० इहां करुन रस मैं श्रृंगार को स्मरन है श्रृंगार करुन सो विरोध है तो भी दो

37

कल्ल: ३२

घनहीं सुहो श्रृंगार सों करुन वटै है कैवन पिय ह्यां सिकर गहे है समका रिगाहेनके संग मे केना ह्व रहे हैं तें से
गए विदेस ८१ ऐसो नायक के मैं रे नायिका कों नगुन कहि कैं करुना को पोषै कवित्त की वांधी वात
में विरुद्धता दोष नहीं कवित्त स्याम कहै पाप २ नभ रहे असि रे सत जस दास की रीति ये जहां जलन हो ज
लजात है कोय अनुराग हू के रंग को कहत लाल वरषा में हंसान सुको है सउडि जात है चंद्रिका पिवै चके
रगा रजें ही नाचै मोर भाषै जहां वारिसां मराल निस्तु दात है चपापेन भेरे नव मेन मालती को मोर फूल
न अंसो कनारि लहै पाप घातु है ८२ सवैया नायिका के आनन के मद के परे फूलत है वकुलैं यह जान
डु मैं न के वान सों फूटे हिया औ कदांऊ कहूं सों कवितें सो पिक आनंद फूल के कामके वान औ चाय औ भौ
रोन की पंच अचंद्रिमा नंद छ्यो सम में कंज निसा में कमोद फूले न असो कनि के फल गानदु ८३ साहित्य द
र्पन में कामके पुष्प कोन भीना मक छोटे इति श्री हरिचरनदास कृते हृदयक विवल्लभ अदोष निरूप
णम् ८ अथ काव्य चंद्रिका तें कवि न समस्या पूरणोपाय लिषते अथ यश गुरु वस्तु को लघु करि वरने सृषि
काल १ कल्यांत २ मैं होय हू र अवलोक ३ तुच्छ कथन में वस्तु गुरु फल लघु करवरनि अथ रोक अथ स

दोहा

ष्टि काल हरि प्रसाद लहि विश्व कौं रचन लगे पाक रेनभ हू छन तुच्छ अति ही भए वारन तुल्य जुण द्वार
समस्या होत भए सवे सानुमान परमानु से औ रितु रहे भी पूरन होय समद्र वारिधि विवेकी वरको कोविन।

पर्वत

होत भए सवे सानुमान परमानु से बुद्धि चलाय के लिए लिषत है अथ कल्पांत लघुता लहत जुगांत
में गुरु मती कथ्य हू छ करि ही होत जु कर दसे औ तनु स्वह रिज करे सल भ सो सुतर महीं हद दरभ सो अ
थ हू नव लोकन को लल में अति दूर तें देषे को लसमान ताकी दीसत दीघ सो ल से थाल सो भान ४ अ

मौलसिरी

३२

यनकेकयनमारलेयतेमलगुरुअजमाननमगराजेअवलघुकोगुरुकरिकेदतजेजगमेंकविराज
५ हेतनजुगारिमेंजुलथिमेंउत्रेकाओहोकिकेटूवस्तुकोमदनकगिवरनोंजनोंमेकि ६ अथकृतनजु
गकोआदिमेंलषोंसतजुगआदिमेंवडोकोननदिहायनगसममसूरनदागदेवीरनतरवरजोग ७
समसावकमामनकअहमसंकसुतरसोअथसमदमेंनिकरीपारावारनेपविसवेतीमादिपोदी
सोपाढेनकोदारिदोतिरिलिजादि ८ राजसानसमातदेनेनमेंमीनकेमीनगिलेअतिपीनमनेरो
हिंउत्रेकामेंकहालदाभुरेसकोकाजेइनोवषानभयकारीदेषतलगेमनेतोसिदेहेंस्वान ९ कालको
सोगाजुमानोवाजकेपरनमेंप्रोढोक्तिसदोमेनननडतिवदतिमोसोकदोंनेजायअतिरिकअवितुक
मेंकेयाकारसकेसमाय १० कहादेकमानकदावानसेवगरिकोसकेवस्तुमेंएककोचरनोंसकवि
अनेकजलदपनत्यादिमेंजानतदसवि वेक ११ सवेमेंकाचमदलमेंअगकोपरीवजुनवोकाटतु
पतिव्रतनारीनस्पीनविषिअनेकोनाद १२ साचमेंपोचनिसाकरदेषोभालमेंदाऊकपालमेंदाऊकने
फलमेंमनिविवितनमापाचित्रहूसप्रमेंप्रसोहनसमलेषमवेअसेमवेसभवेमतोकनिअवरेष १३
माहादेहहरिचककोमायाराचुतअमानभुजविहानसंग्राममेंअसुरचलावतवान १४ सीसविहीन
रुवीसविलाचनकहूविनेवेचित्रमेंलिषोअलीनदेविमारेस्माषीपावकोकापतहेजसुमेर १५ य
हमायामेंचित्रमेंसप्रमेंभीसंभवेवेसप्रमेंमाषीकेपावकेमारेसुमेरुकापतदेषकुमेलिएषलत
वालदिवाकरसप्रमेंदेष्योसजनीसप्रमेंपिविनाविलोकोजागिहायडेदडेदोवदनरेकनहसोचते
केंआगि १६ वालदषेरीमेंमोंगसमाकोअथअओनरसवेयाकालकनोसषपावेकहाेपुनिको

केश
१८

तविनाकुरसनकहावतनासकरैकुलहद्दिकोकौननहीपतिसोंककुआदरपावतहारी औवागतउ
गमैंनाहेकहाकेरिनासिसोंरंगररचावनअथकेकोमलवनैनजहांकहुगोदमैंअंगजवाकषिलावत
१७ दोरतपांगलेदेषतओधरअथप्रेषमेंकविनकरपकराएंजातनागरनचहतनितिद्दिसरदतसुंद
रीमैजाकोबासहैनजविनआवतसकोरेओकुसलगातजरजरेदेहहरिकेहेसङ्लामहेभोगनवि
हीनपुनमालहिजपतरहैनैननलैवुलतफिरिविरदप्रकासहैहहाकोईनरहैवरषमाहिसन्नारीमें
ओवनभहोकेकोईभूपमविलासहै १८ कनकौयकपरोजातहैओकरपकेसरंगनौदी हृदयरह्यो
हौहिरसचाहषासाहोराओषासरोगकुकहिएउरामलगातमैजरेपेसासोमागे हैभोगनहींहैवि
हीनजाकेहसवेसम्पतीतनछलभौविरदविनष्टभयोहैरह हानजाकोअथअनवप [illegible] अनवयअ
व्यतिरेककरिपुरीमसमाजायजाकेसाचेसाचेनोसोअनवयजुकहाय १९ बालककाहुकुमारजो
मोरमलविसालतामकरेकुकेवमैपेहेगोकुजरजालअथव्यतिरेक जिहिंअभावव्यतिरेकतहवृअ
भावतहांजोयओतिकहैअतिवालननहिंनोहपुनिसोनाहोय २१ लोकोक्तिश्रीरामहिपरवामवमन
हिभाषतहेकोयनहीनिथिवारसिकेपरेकवहीपूनोहोय २२ साचमावतेसमकोलागतगहनहेरु
निसमसमाप्ररनोपाय: अथव्यंजनानाम्नाथनकेननककेहैवयंजनाहथाहेहसप्रयोजनलक्षनातोहो
साध्वनिजानिहथाव्यंजनाहुनिहेकहतकविसज्ञान २३ नदीमैंघरअयोजनवतीसोनहीकेतोरहवसो
तलतापविचतालछनाननहोसमुफायमकेहोतपरेफिरनहींउवेदोहासीतललादिकज्ञानकोकहै
लक्षनपेविअथवायनहिभासईदेङजुकियहहगेरि २४ सीतलताआदिजानिवकोपेरललक्षना

जाकेरेयअभावतेलषिअभावजहऔर

कैरेंगे तो न नहीं कोउ ग्रंथ भयो तो रस ग्रंथ बाधन नहीं जो लक्षना होय दोहा सोन लना दिक के लियें कविक
रिंदें अनुमान सब ठौरें निबहै नहीं यह तें निश्चय जानें २५ सब ठौर में अनुमान नहीं लगे दोहा सुप्रतीक
दिसन तें लषति बारि बाह रहि है चाहि बाय होयगो रूढ में सो जोगिक को कविनाहू २६ वारिबाह मेह पर रूढ
है जो पानी भरें है ता पर अर्थ सो लगे है जोगिक है सो नहीं जो में जाय गो सुप्रतीक दिग्गजन ताको हिसाज्ञ
ने रोपै सुंदर है प्रतीक अंगजा को यह अर्थ उनमान सो नहीं आवैगो और वारि बाह आदि में यजन ना होय सी
ऐसें जा सो अर्थ गंजन ना विचार है मारै वनाप अंष क नित रोसन जो वन तके उपजै है रिवात जहां गुन षानि
निहारी लो मन लों नै लगै अहने है सो पुनि ससनहो है विकरी ना हैं रषै हैं तस मतिसौं रस महू फल तहै थन
के कह रूचारी न कुलदीपक है कवित कुलदीयक को यह रीति सुधारी २७ रासको पन है उपजै है ओ रो
सन भकामु उपजे है वा नव चन ओ बात व तो गन ओ न ओ आदि गुन उगुनी तिगुनी लायु नैन ओ दीपा सिषा
सो लागु रूषा कवि सो शृंगार नहीं बनै नेहू मो ति ओ नेह तलमस रजो था ओ सुरू अर्थ ता को नहीं मकामु को
रोस महू मन सुंदर मनि के आगे ही आन होवे रे यह कहत हैं रस शृंगार आदि औरस जलथ नैहो लतिओ
थन सी तो ऐसो पर तें जो कुलदीप कहै कवि ते तिन को जगा मे यह रीति विचारी तो दीयक उपमा सो आव
ते नव उन मही ता ही पकसु हू ठौर क ह्यो ता सो मधा भभयो फेरि सवैया को क विलास बरावति है तरू नें
सुष अंवर नील बनाव भाग हरी नल है जतनौ सु जहां नवि राजत है न जगावे मित्र सो ना हिं मिली अवलो शुनि
पावन को हरि गेह पवावें सो करनी कों लगै यह जो निनिना हिं सषी नव कामिनी आवे २८ को कसो हे।
ओ को क चकवा ना के विलास कौं व दावे हे हू करै है यह अर्थ नरून पुरुष ओ तरुन ह ऊन कों अंव रवस्त्र।

पूर्व दिसा

कहैहै

औरत्रेवर आकास भानभारपना की छबीन सौं औभानप्रातना दिखरी मेंद जारजननकरैनौनहीं मिलैंजहा
नमैं विराजे तिहैं औजहा दिवि भ्रै सो पछीको नाम है सो नहीं राजत है से न दुसरा औसेन सो वहैं मित्र हैं तिन
औ मित्र सूर्य पत्री पानी औ पत्री पछी सीकर है सीकार औ सीकर औ सदु हो भ्रातायक्ष्मा ति २९ अवररहत पा
कसासन केव ससदा छाया नल षाति औ सुरनिरा चीदे षीहै भूषित फिरति हैं चंदन कुसुम गात
देवर करत राजी हूं पगान लेषी है सो दति कनक नग भाजति सर ग्रा मल मे अलकावलि वीना सो रुचि पे
षी है जल पित सद न पियूष जा को ना नि पन अछ कराते नहीं आलीन री आवरे षी है ३० अवर जो वसु सो
जाको पाकपवित्र रटन है सासन सीष किं वा सासुना के वसमें सदा रहति है अपसरा पास अवर आकास
न हो रहति है पाकसासन इंद्र ताके सदा वसमें औ जाकी छाया को ति दे षि वे मन हीं आवति है औ सीलजो
लीहै व स्त्र सोट की चलति है औ देवता की छाया पर छाया न हीं सुरनि षादि आदि औ सुरदेवता इति
कवि चंदन सों कुसुम सों गात भूषित किएं फिरति है औ हरि चंदन कल्पवृक्ष को भेद है ताके कुसुम सों
गात भूषित किएं फिरति हैं देवर को राजी गावति है और वरवा कितना को देकैं राजी करति है हीं हायो।
की सीरा सि औ हीं पोल में जाकी राति कनक सों नाज वादि रसो सोट ति है औ कंन कनग सुमेर तहां सो द
ति है औ सस्वरके ग्राम में राजति है ग्राग इवमे सात स्वर औ तीनि ग्राम है स्वर सहित ग्राम सो राजति है अ
लक की आवली पोसि जाको लसै है औ वीना प्रवीन जो है ता सो जा को रुचि है अपसरा अलकावली वर
कोपुरी वलि सवा थन वीना सो जा को रुचि देषी है जा को सद ज को जल पित वा लि वा पियूष अमृत सो
जो नि पर त है अपसरा समुद्र सों निकरी है जल जा को पिता है सरज भाई जा को पियूष है ३१ रातिमुदरा

न सुष करत निद्रा होत है वि चाहत रसन मुष बाला नाम रत है राषत विभूति फेरि मुक्ताफल हार च है भावत

भवन माल अक्ष हिय धरत है आसन अनेक गहै केसरि न चासो सोहै काम नीके बसमो ह रजनि भरत है के

यो भोगी या ये को सुभोगी है जंत मोहि के धो जोग सो धि के है जो [illegible] गी विचरत है ३२ भोगी राति सुष सों

गुदरान करत है जोगी राति में गुदरानि को सीं कमि रा षे है तासों सुष निद्रा को करत है सुष सो हूं बमें

भी कहत है भोगी रसनि को चाहत है मुष सो बाला नवीन स्त्री के नाम सों रत है जोगी रस को षट्ट रसता

कों नही चाहत हैं बाला जी बाला जी कहत है बाला लसनजी को नाम है भोगी विभूति संपति को राषत है

फेरि मुकता फल मोतीना को हार चाहत है जो [illegible] गी विभूति राष मुकता क द्रि वड़न फल को आ हार

चाहत है भोगी भवन घर जाकों भावत है जोगी भव संसार नहीं भावत है भोगी अक्षमाल संपत्ति को रा

षत है जोगी अक्ष माला कों धरत है भोगी अनेक तरह की उहै आसा सब रहा न को बड़ुवा चकता को गा

दत है जोगी अनेक गहड़ आसन आदि कों गहत है किंवा भोगी विलास के अनेक आसन को गहत है जोगी

अनेक की आसनि कों नहीं राषति है भोगी जा कौन चासो लागी केसरि सोहति है जोगी केसरी नाहरता

कीन चासों सोहत है भोगी के मिनी स्त्री ताके बस है जोगी नी कौन बहै जाके बसमें काम है भोगी र जनि

राति में मोद आनंद सों भरत है जोगी रजनि सों धूरि निसों सब ये पाया लकरी० मति० लाल० सो० आज०

अली अरी० राति ल अघ गवहै सो तिमरो० अति० साल० सो० लाज० विनीहरी० हैं वड़े सुष द्ध है

मोर भरो० राति० नाल० सों० राज० नेरो भलो० औरि हि ए उषपै है प्रेम भरो० निति० चाल सो० काज०

अटा चलो० कोतिक चोज बड़े हैं ३३ या लकरी सो तिमरो मोद भरो प्रेम भरो र चामि अक्ष र के के छेद प्रति

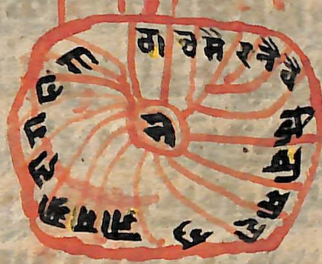
केल्ल
५०

छाके भेद ष्यालकरो मतिसो तिमरो ग्रतिमोदभरो रतिप्रेमपगे नितिनिर ष्यालकरो मतिलाल ३ ग्रेसें जा
निपके रि ष्यालकरो मतिलालसो ४ पके रि ष्यालकरो मतिलालसो ग्राज ५ चारोतकमें ग्रेसें पढिए
पके रि ष्यालकरो मतिलालसो ग्राज ग्रली ग्ररी ६ ग्रेसें रातितें ग्रेसें गवेंद्दषवडो सुषद्दें द्ग्रीरिढिए
उषपैद्द के तिक वोज वटेंहैं ७ ग्रली ग्ररी विनी घरी नेरो भलो ग्ररा चलो ८ ष्यालकरो ग्रली ग्ररी मो
तिमरो विनी घरी मोदभरी नेरो भलो प्रेमपगे ग्रराचलो ९ दोहा ष्यालकरो मतिलालसो सोतिमरो
ग्रतिसाल मोरभरो रतिजालसो प्रेमपगे नितिचाल १० सोरठा ष्यालकरो मतिलालसो तिमरो ग्रति
सालसो मोरभरो रतिजाल प्रेमपगे नितिचालसो ११ नीतिकी चालसो यो कोको मथेनुको भेदकुहन
दैरपारहक्केंदनिकरनहें मालाकोरसकोलषंज्वालादरनसरीरवालापरसकोंचषंपालाकरनसचीर
१४ गोमूत्रिको १ ग्रश्वगतिचरनगुमरकपाटवेंधमेंचलनहें मानदानगुनजानमनग्रानदानगान

मा	ला	को	र	स	को	ल	षं	ज्वा	ला	द	र	त	स	री	र
वा	ला	प	र	स	कों	च	षं	पा	ला	क	र	न	स	ची	र

ग्रश्वगति

मा	ला	को	र	स	कों	ल	षे
ज्वा	ला	द	र	त	स	री	र
वा	ला	प	र	स	कों	च	षें
पा	ला	क	र	त	स	ची	र



मा	को	स	ल	ज्वा	द	त	री
ला	र	कों	षं	ला	र	स	र
का	प	स	च	पा	क	त	च

हानगोनवानवनमैनरन नैनपैनकिनवान ३५ अथवर्नतनवंधवम नपीतवसकर

नवसिदसनवदोवैराम सोनजातसतरातहूवै

ननमानोपाम ३६

कावजरापेछिलोमतततीयंनदश्रेरजीयघुटेव्ववकौ॥वीगजतसाहजेनानीघुरे

तवपायतसोवनमैसवकौ॥वसमराविनवंततनवोलतजा।हेगा।ठारछवोश्रवकौ॥

कोवजरापेतिनिछीनेवगावव गावमूथीहितिपेजेवकौ॥ कुंजीतजातजततजीतम

तेपवरातमसतकोनं॥श्रीतदीततनितचेतवितकितमितगैतकितगोजं॥वसननीपवनमैं

पीयावहरस्तहीतासानैननवावतणायसमतसभकाम ३८ धनुषवंधसरूप अथचरणगुमनतवलषिपीयमंत्रा

मिलीविहगावपनसम ऊलासमदनसदनमनहरनमममैकेमगवाम ३९ नचतरंचेतसघमषि

सवरपरतजतितनिरिगनवंवयनटवरचावरसवसनत

४१ अथअंरछरचुतश्रेवानिनकासिमोभश्रतिजदेयदारजुतवामगीयचकीजहोव

कुलनाश्रेमोहंसंग्राम ४२ अथवेजतचुत भरनीकीसोभाजहांगुरुव्याप्त ४३ अथतिहावलो।

प	न	ट	ल	वि	यो	प	स	म	न	१। वरगनगमरूप
	ग्र	मि	न	वि	हृ	ग	व	य	न	
म	हृ	ला	स	म	र	न	स	दृ		
	न	म	त्रु	म	न	हृ	र	त	म	
६	म	म	न	पि	क	म	ग	वा	स	
	नं	च	न	र	च	न	स	ष	स	२।
	षि	स	ये	र	ध	र	न	ज	ति	
	न	हि	न	ग्रा	व	न	व	व	य	
२	न	ह	व	र	चा	व	र	स	व	२।

ना नजान	नोतन [illegible]
ज्ञान जान	हृन [illegible] कित
सतपन	कितवित
गन मन	चेतचित
हनहोन	प्रीतरीन नित

[illegible] लविला संचरतनजहांरविदे। षिपऐसोवागनस मासमरकीसषि चोटसोकामहनैं सवजामरहैं॥ तिपाधरकी हृ दियामेनसोज गीजोतिदियें विरहानलकी परकीरहेंवाद

फ[illegible]रकोफरकोवनवोरहहाजुमैंवानसहानननंही मिलोपियसोयहोलीषमैंलहरेमकी ५४ नरेगोपकीतसुनिनेरोपियावसहेयकेहारकोया ऐलरीनाहकतासोतुसोषदरैतऊग्रायोउनोलिये फूलछ्योवाकीविलोकनिसोमतिवाकोछकेनेछ ननोपरवारेपरीपरीप्रीतकोगांठिकवेगहृदियेंहवकानिकेवानग्रहाननरी ५५ ग्रनीमानगहेमति ग्रानहेतोहिविलोकनहोलियमोहियनोधनीचातुरचाहहैहेतेरोवनावनितानिमैंतोसोनदूजीवनी वनीहैजहांकेलिकदंवनिकोरचकेलकलाकरैकोपजनीजनीग्रंमैंतैतोसमनोसजनीरतिरैमकी।

सवैया

धरकी

परकी

धरी

रास धरी

41

[illegible marginal notes]

तो परवारी श्रुती ४८ करसौं होइ पावनिकों परसै न रहयो परदे सगयो व रसौं सरसौं हिये वेधत कामस
बी चहै नैन निरंतर हो वरसौं सिरनायक रौं विन तौ नन प्रान रहै ति है रेवरसौं तरसौं हरि वा मुष है षन कों
चितचाह तनजा यमिलो वसौं ४० अथ पोरसी आप्रनभाषा को चित्र क जाति कुमा अ जषा नैव दों सनजे
वरचारु जमुरे दके लननहूं य रा नरवहूर मेन तावद अ सो न हीं महलाव न है मन मौ य क लो रूप सार पै राज
न कोद कमार से जमद है मन प्राउ पैं मो दरकी फल कै ल बिसौ दर की न लगै पल को छन ४८ कोई लु
गाई को वचन नायक को जाय है कु मा कहा अ ज षा नै वरसौं वरो को अर्थ कहो जन नए लुगाई तेरे नन में जव
रगह तो चाह सुंदर जमुरे द पत्रा कै है रूप रामुष को नूर रूप वहूर रहूर सौं म तावद चमके है महलाव चहु
मा अ सो मन को नहीं पकरे है जसो मुष मन को गहे है मो पके सकलाव रहषसारंगाल पर सोभत है मो नो।
को दक वाल कमार सो पके है गप्या अ छा मेजु मद हलै है सन भले है मोहर मो मी की फलक मो दरपनि अ
य से स्व तपार सो प्रत भाषा को चित्र क गछ सि क गरहनो जनन प षणसि किं रसिके वद रा लनि हारो तिष्ठु
सि किं नव ने सखू आमद वा रा मो संगा विहारो वा मह मद्य गिर फत म षे दक्षाव रैजो भस वा न तु चा रो राजति
ते लपने अजगोम्रूरा अ षतूर यौं नलिनैं रषवारो ४९ कोई पुरुष कौ उकि से से नी सो रा छ कि जाय है क
कहो गरद तः हर सौ जनन पाव सौ लुगाई को नाम है जनैं प षण सि दे षै है कि क्यों क्यों न कोई रसिक पुरुष को
देषै है वद को अर्थ कहो रा सन मोच निहारो कि क्यों नहीं वन विषैं तिष्ठसि को अरथ रहे है सब राति आमद आ
ई फेर वा सेव रघा भी आरं ते मनु मको अहै है मग्रय आज गिर फल पक री षे दह सो ई जाइ हो वृधावस्थ नक
रो ने कहि ये न मारो लपने मृघ राजति सोभै है अजगो हर मोती सैं नथ के मोती सो जानिये यौं कियौं अ षत

ग्रामद

७

42

कवि
प्रि

रनारातलिनें कमलनाकोरछकदें ॥ अथ नरकी पारसी व्रजभाषा को चित्रक दोहा सो वह आगि जे रागऔर
मचकेवारस्तु खूबकनवगजसकेलनोमेबीनममरगूव ५० कोई नायकाकी नाराफकरे दे सो चुमिरके हम
आगिजसपें रागालरमचककुचवारकोअपेंखूबदे हूजआषिवगूजगला केलवोहनोनेपैमेबीनममें
देषताहो मरगूवमनोहररहै खूबनोमेबीनममरगूवबमपारसी अथ नरकीहमारोकियोनरकोप्रका
सप्रसिद्धहै हमारो कविचातुरीनामें पारसी देषिलेहु गे रूपगर्विताकीउक्तिजोकोई स्वप्नकोफलअफ
लविचारैनासोपारसीनरकोकोचित्रकदोहासोअब उपरसमनरामन्दोदमदरयाविजनीबीनाकाप
सीमेमिकवगुलाव ५१ सोमोअ बिरनेसमआबायपयोहोयतासोरूपगविनानायकाकीउक्तिहैमोअ
बिरनुरानेकोपुरूममश्केहोमन्दोदममदेयाद रव समपानोमेंबिजनीमो ५२ कोयहनरकीहैबी
नादेषतकेंको मीकौनपुरूसहै यहनरकीहैपुरूषअध्याहारसोजोनिएवगुलावगुलावकोमेसी
कल्लनेमेया तेरेअंगकोमीसुकुमारताओपुसबोयगुलावमैननहींनिकसतहै अथयारसीदसभाषा
नरकोकोचित्रककोई पुरूषएकानमैंसोकोदेषिकैंकहतहै सवयाहूवनरा मनदोदम काफिनि
काप्रसीवारतुबीनरसोदमआमदरूकदासादवुलनवरायतोओगुलहायरूचोदमतेतोईकारीउनो
मनहूतमआजेओकिलोसतनफल्यायअरीतमपारषजोहओपानेइराकोनाचीनमेगायनमोनसिप्रोतम
५२ खूबअक्तातुरानेको मनमदोदमदेयादकाफिनिकाप्रसीकौनवारकोअपेंहैकोनदेनयहनरकी
कोबुवींनरसोदमपरूचामैंआमदआयोहूकदाआकासमैंयहनरकोस्यादस्यामबुलन्तवादरकोनाम
नरकोहैवरायनोरेलिएअभाषाहैगुलहाय५० वहूतफूलरूभाषाचोदमंबुनामैंनेतोईकारीनेरेआ

करी
सो
य
ख्वा
योदि
ल
ईहातकें
५२
देव
ते
ल

तो

मान

न

सा

गैउजीग्राप० मन० मेहसा मंहोनेरेग्रोगैग्रांपुमेहोइँकारीउजी० मननरकोग्रजैकिलसिनग्ररजकरता
है किलसिनवरकी फैल्योग्रशैनमदेसभाषा पायचेहूमानरको घजीदक्षेपेषानेह्वरहूराकहूरनरकोदे
वीनमेरो वनरकौं तेरोहै मेगोयमकदनाहो मैमोहि मीनमकरोग्रथव्रजभाषाग्रोगौडदेसकीभाषाको
विवकमंदसुसक्याविमनदरनसदजवाविभूलैंहूनभलाभहूडनेपावथारिवोहै जियजानिवितरावि
कुलकोविग्ररीदयिहोनिसोसनेहडषथारिवो मानिले० न० ३ग्रा० ग्रमोदेर० ण्मुनहोइलोदसानार
कहिनैनानिरैवोकुलगारवोलीसषिरेषिग्रोगौविहै मुषसुमोग्रवारवारीघोकिजेननपारिवो ५२ हेराघा
उंग्रराबे सबजेमषीहैनेग्रमादेरदमसबकेव चनैनेहीं० मानिले० नेहौमानें० एमुनेग्रैसौहोइलोभईहै
सोतारनाकोकहिनवारिबोकहिनहींसकैकैनवारबोलीसषिहंसषीकेननीवैसमोहिकहीहैविकै
मोविरकेउघकोतुमोतुमग्रारवारग्रोरिवरजवनदेषैगीनववाजीघरनहोयाकिननपारिवोयाकिनै
रहिवेनपारिवोनहींसकैगीग्रथमारवाडीभाषाग्रोदेसभाषाकेचित्रकेग्रालगैनभवरणपिसरणगुरु
जगणमागीकमलगडुलफूलवालननिहारेछैनाप्रडेउसासकोथाकामरणगिविसवासमहल्योरीसू
रतिजपेहोकीचितारेछैवृडवलिऊवैकालीकाबलिसाँहूवैएमसिलीजेठपालिननलखवीविसार
कैकाइजाणौकेमपणलीथाहूपवीयाहियाषानेहीछ्याणकोराजलाजनसभारछै ५४ नायिकाना
यककोरेषिग्रासक्तभई है नाकीदसामषीनायकसोकहतिहैवाकोभवनछरनहींग्रालगैनहीसोहा
नदेहूतनकोयसणासतुजाननिदेउहोपवनहेतासोकमलग्रौगडुलकामदहैमीनाकोनहीनिदारहै
नाघडोउसासनाषडोजलदनिसासेलेतिहै कीघोकियाकोमनग्रौजाहूकोविस्वासमननेमेहैमाहूसा

रवाइकेगुरुवग्रोमाहूसुंदरकोभीनामहै योकीन्हमारीसूरतिनज्योहींकीजवनैनदेषीनवहींतिविचारैहैया
दिकरैहैहूंवेरवाभएमेंवमिठ वैहै कालीजोकोगलिउवनीठुरानमेंहूदहैनाहिनहींदेषेहै एमष्यानगट
मिलीजेवैजाहिहेगारनलावरीनलावकीपालिनदत्ताकोनहींविसारैहैकोईजाणेकहाजानैकेमकेसी
नरहेकोपमाघनिजालीषोलियोहै रूपवीपादियानुमोरेरूपसोंवाकोहियामनकेहिरयोहैयाने
रीठ्योयकोनमदिरैषेमोहैमानलाजकोनहींसभारैहै उन्मनरसोहै यहग्रथेनमेमिलोवांसोंभाषाभू
षनमेंलषोसष्टांलंकारहूहोकेहैसव रोषमेंमसारकेग्रनुसभ ५५ नायकहूप्राचीनमैंदोहायेरेलिग्रा
यकहेनुसभाप्रकासमैंसोमेदेनजताय ५६ ग्रथसभाप्रकासकीसूचीनायिकाकीजातिजानेपद्मि
नीहुग्रादिकमिलोयाग्रादितीनिमुग्धाग्रादितीनिगनिएज्ञातग्रज्ञातनवोढाविश्रब्धनवोढायहस्
गयाभेदमध्याग्रौप्रगल्भाहूकेभनिएधीराग्रादितीनिग्रौरहजेष्ठाकनिष्ठाभेदग्रुथपरकीयासोपरो
ढाकन्याभनिएगुप्ताविदग्धापुनि[illegible]लक्षितारुकुलटाहेमुदितानुसयानापरकीयामेंगनिए ५७ क
हेसामान्याग्रसंभोगदुषितारुमानवतीनरीहैमानभेददसनिसमेनग्राठे
नायिकाहोउतमादिभेदसवसषीहूउचरीहै [illegible]नायककोभेदग्रहसषाग्रनुभाग
कहेरसनभावहावहेलाहूकोपरीहैवरनेविभावग्रनुभावथाई सात्विकहूसंचारीनितिम[illegible]कीरीतिभ
लेकहीहै ५८ भाषाभावसंधिग्रोसवलताहूसोंतिभाफेरसहेंवमित्रशत्रुसमहूउचारेंहैं ग्रगग्रंगीभा
वतिसाक्षात्प्रेमलक्षनहूरसमेंसदेहभावध्वनितिनरयारेहैंरसाभासभावाभासरसदोषादोषहैं ग्रथा
हारउपलक्षनजातिव्यक्तिधारेहैं ग्रोमिहूंसग्रन्वयग्रोरीतिग्रोमेंतिग्रोसमासपुनिग्रासियाग्रोजोति

कोटि मह रहि सुथोरे है ५९ द्रव्य गुन क्रिया सब्द जाति ये निमित्त लछना है रूढि और प्रयोजन के भेद निदिखाए हैं
उपादान लछना है सारोपा साध्यवसाना सुद्धा गौनी जहत अजहत स्वार्था थोगा ए है गूढ और अगूढ व्यंग फ
ल पमेय मैं रागन दोजन ना सु साष्टी हू के भेद है सुद्धा ए है सप्टै सो जुहानत है संजोग आदि भेद पाय लछना हू
मूल मलौ भांति सो बना ए हैं ६० और धीर चीह ह वक्ता आदि की विसिष्टता ते हूं तिनाम्नी औ रिञ्चाके पा
हू को मानी है उनमका व्य हू लछना मूल ध्वनि सो ना औ अविवछित विवछित वाच्य कवि नि वषानी है अने
नतिरस्कृत अर्थान्तर संक्रमित है अभिधा है मूल जा को कहे मैं पिछानी है विवछितान्य पर वाच्य संल
स्य असंलस्य असंलक्ष्य रस भाव ध्वनि में मैं जो भाषी है ६१ संलक्ष भेद सब्द अर्थ वस्तु लेकृति का रि स्वतः
सं भवी सो प्रौढोक्ति सो दरसायो है दस द्वादस चारि सो पचावन १०४ ५५ ध्वनि भेद मध्यम के गुनी भूत गा आ
दि आठ गायो है सब्द चित्र वाच्य चित्र अधम के भेद कहे गुन रीति और हू सभेद मैं बतायो है ए तो बात कैव
कैं ने रा ग पन कवी म रहे ता ही को सुरदे है सनि मैं कह्यौ है ६२ भृंगार कोदि नैलाय नकमल औ लुना
ई जलमें जल मैं से उदि वाकर को विवदरसायो है प्यारी देह देस मैं सरोवर सलोनो सु ध्रुअ सो नराजो है
कहू हूसरोन पायो है सोभा सुनिभू पति ग्रन्त गारंग सों दिपायो साजि वेको रस दास सेवक पठायो है रोम
राजि मिसि तेर सीली स्याम रेसम कीर सीलि पै जो बनजरी वक संग्रायो है ६३ कटि वनिनहो [illegible] जहांर सना
मधुर ध्वनि माहति हमति मोदन लाल की नादीं कहे कवि कूदो परें उपमा को न लायक ते तुम नाल
की नि क्ष्य मध्य कों मानन है थिति है ति कें नीवी उरोज विसाल की हे गुरु चाललषायपरे न हियो नल
षायपरे कटि वाल की ६४ सखि देषत हीं हुष घाउ सुता दिहि ऐ हरि गीति लगाउ लहे सव अंग अनेक है

कल्प ग्रंथ

५५

मानो निषंग नहीं मुष की छवि बेंदन हे भ्रकुटी नग बेक अदे षटे लेक अली हू न जान नि टेकि न टे मद की
गतिनां हूं लेस जनी कारि दूक रि की रसनादि कि दे ८४ दोहा जो चाहो भव भय मिटे भजो सदा गोविंद हार
उजीर न जल मिदल षाइकरो आनंद ८९ भवजल पार करन तुल सियद नव सहज सुभाव दे छांन गमेन
दत रैंव ठिकाव की नाव ९० सब पाव पासज हो सवनी रथ को श्री भगीरथ को सरितानाहू वसी है सव तिना
हिरमा श्री उमा जिन की समता को न हू जो लसी है लोस वश्री गम नो टर चाहू त पावन भक्ति रसी है देख हू है
लषि जान न तहां रहे कारन तारन को जु लसी है ८८ अथ श्री गंगा जी को भक्ति निक विनै मे सनी रोविड अरविंद
परा जन है तप पद पंकज मे श्री से गंगा धार है पाप पुंजन नासे सो विनासे है अविल षद सुमति म कासे से
भुसिर को सिंगार है मेट हरि लोक हू को एक वीनते सो कुरंच छूट कमजा को कि ऐना मुक्त कोइ चार हे जम को
मसदी कवे कागद को रहीं निजले ष पर पके रपारि वे षकरतार है ८९ मोदि राषसी सज गदास जादि भाष
तहैं निनि पारि हारि मो चत्र रुका मसो छमा को हा था निदेषी दीन पद्या को वानि सुन्यो है वषान तु ववेद
निके ग्राम सो माय लोक माय को पुजा पतिहू लोक रही ह्वान हो मिलाय तनो देनि हुन स्याम सो परउ पता
पी हो द जापी मदिरा पी अैसे नरि जात पापी सुरवा पी ते रे नाम सो २० नाम लिएं सव पाप नसे सव जाति से
ज्यो तम ... नो मन सो हो रे तकी ज्यो कनिका परे अत पें नो विधि लोक के ऊपर जाहीं दीन की ओर दया निधि
या विनती मेरी अवलि हीं नाहीं देव न रंगि निअंग निमो निज डामि दोनेगन रंग ... नि मो हीं २१ दोहा अति द
पालु हरि हिय वसत मैं तु अभक्ति विहीन समा करो अपराध सो क्रमा जानि के दीन २२ अथ कवि की
स्थिति न वापार सुभ दे समै मेंरा जत वद्याग्राम श्री विमल वसै समें वासु देव तप धाम २२ ता को सुत श्रीग

पावन

द्रोही नाम

वा. स्ति. ९५

यनकियेचैनधुरवासपरगनागेपग्रानहोवारिवर्नसङ्खलाम ७४ सालग्रामीसरजुकीमिलीगंगासोंथा
तिग्रंतरालमेंदेसनदहैसारनिसरकार ७५ तनेंरामथनसुरिकोहरिकविकियमहवासकोंवल्लभ
ग्रंथहरिचौककविनादोषप्रकास ७६ उदाहरनप्राचीननेकीनेंकहनवीनरचोग्रंथकोंसुगमकरिलषि
हैसुकविप्रवीन ७७ पुरोहितश्रीनंदकोमुनिसांडिल्यमहानहमहैंतिनकेगोतमेंमोहनमोजनमान
७८ इंद्रादिककोंहेतजोसपतिसोजनुमानेतहितज्ञिजाचौग्रोरिसुरनहिमोसोग्रज्ञान ७९ राधिकाके
हगासोसजनीसमतानहींपेकजकेदलकीहेंषजननमंजुलभासतदेनग्रन्तचौचनोकुविकजलकोहे
छविपरीयलकेपलकेछरइ[illegible]रोजनिमेंफलकीहेंकेचनकेमनुचाहपहारमैंधारयसोजमु
नाजलकीहे ८० संवतनंदइतासनइदिगगजं १८३ सोगननानुदिघारहमरोजेवलक्षीदस

सवैया

मीतिथिप्रांतहीसावरोपक्षनिकाईतीरतडागकेग्रावुधवारविकसितनिकीरातिलायलगाईश्रीनवल
सीउपकेवनहोरचनायहपूरीभई ८१ श्रीराधापदकंजकीरजनिजनैननिलायचकादनकियम्ह
नुनवकुलहिकेवलगाय ८२ इतिहसिचरणदासकृतेहृदककविवल्लभोग्रंथःसंपूर्णःसमाप्तम्

कृपदाई

कुं
लिः

१५०० २ पत्रे ६

॥ अथ अर्थालंकार ॥ चमत्कार को जनक जो युक्ति अर्थ मैं होय ॥ [illegible] रसादिक हाय न ह्वै अर्थालंकार सो
उपमा लछन ॥ उपमान र उपमेय मैं समता भाव [illegible] ॥ ताहि उपमा कहत हैं सकल [illegible] कवि सिरमौर ॥
उपमा लछन ॥ जाकी उपमा दीजरै ताकौ कहै उपमान ॥ [illegible] को उपमा दीजै सो उपमेय बिखान ॥
[illegible] लो सम [illegible] है [illegible] वाचक जान ॥ एक धर्म जिहि दुहन मैं [illegible] धर्म बिधान ॥

طرف کریم بخش

طرف

